21 दर्द की पृष्ठभूमि में

मीरा सीकरी (जन्म : 1981)

मीरा सीकरी का जन्म गुजरांवाला वर्तमान पश्चिमी पाकिस्तान में हुआ था। आपने दिल्ली वि.वि.से उच्च शिक्षा प्राप्त की। स्त्री विमर्श पर आपका विशेष रुझान है। एक संवेदनशील रचनाकार के रूप में आपने अपनी रचनाओं में स्त्री विमर्श के विविध पहलुओं को चित्रित किया है। आपके यात्रा वर्णन भी विशेष उल्लेखनीय हैं।

पैंतरे तथा अन्य कहानियाँ, 'अनकही' 'बलात्कार' तथा अन्य कहानियाँ, मीरा सीकरी की यादगारी कहानियाँ, 'प्रेम सम्बन्धों की कहानियाँ,' आपके कहानी संग्रह हैं। 'गलती कहाँ?' आपका उपन्यास और 'एक रंग होता है नीला' आपका यात्रावृत्त हैं।

'दर्द की पृष्टभूमि में' अंदमान के द्वीप समूह की यात्रा का वर्णन है। पोर्ट ब्लेयर उसकी राजधानी है। चार साढ़े चार साल पहले आई भयानक सुनामी के बाद वह पुन: पूर्ववत हो रहा है पर लेखिका अपनी यात्रा में उस तबाही के दर्द को महसूस करती है। सेल्यूलर जेल का प्रकाश और ध्वनि शॉ उन पुरानी यादों को ताजा कर देता है, जिसके अंतर्गत् यातनाएँ कालापानी की सजा पानेवाले हमारे स्वातंत्र्य सेनानियों ने भोगी थीं। फिर भी यहाँ मौसम और विविध द्वीपों के रेतीले तटों की खूबसूरती उन्हें आकर्षित करती है। यह द्वीप समुद्र अपने आगोश में इतिहास को समेटे हुए हैं। अंत में लेखिका का यह कथन है कि 'पोर्ट ब्लेयर की भूमि अपने जख्मों को लाख छिपाने की कोशिश करे वे छिप नहीं पाते। उन सूखे जख्मों से निकलती टीस की ध्वनि को सुने बिना आप रह नहीं सकते।' इस यात्रा वर्णन में अनुभव की प्रामाणिकता सहज देखी जा सकती है।

कुछ ही देर में हम पोर्ट ब्लेयर पर उतरने वाले हैं, उद्घोषणा सुनकर मेरी आँखों में एक चमक-सी आ गयी है। अभी तो ग्यारह ही बजे हैं इसका मतलब है, ज्यादा-सा-ज्यादा आधे घंटे में हम धरती पर होंगे। मैं खिड़की वाली सीट पर नहीं थी पर बीच वाली कुर्सी से भी खिले-खुले दिन में नीचे विशाल समुद्र दिखायी दे रहा था। समुद्र-ही समुद्र । कश्मीर की डल झील और जेहलम में तैरती नौकाओं जैसे द्वीप-उपद्वीपों से सुसज्जित असीम सागर-असीम कमल-ताल सा। दूरी सौंन्दर्य में आकर्षण भर देती है। हरे-हरे गुच्छों वाला यह समुद्र तो बहुत लुभावना लग रहा था। तभी भीतर बैठे सुनामी के भय ने झाँका पर इस समय भय नहीं, उल्लास हावी था। मॉरिशस में पैरा सेलिंग नहीं कर पायी थी, इस समय लग रहा था समुद्र के विशाल प्रांगण में उन्मुक्त आकाश में लहराते हुए उड़ने का अपना सुख तो होगा ही।

दिल्ली से चले थे तो सर्दी शुरू हो गयी थी इसलिए एक हल्की जैकेट पहन ली थी, पर विमान से उतरे तो तेज धूप और उसके तीखेपन को सन्तुलित करती हवा ने स्वागत किया। साथ ही यह चेतावनी भी दे दी कि यहाँ जैकेट-वैकेट का कोई काम नहीं।

गाड़ी में बैठे-बैठे समुद्र के साथ-साथ चलना अच्छा लग रहा था कि ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी। पता चला कि हम 'कारवाइन कोव बीच' पर हैं। सामान्य जन की पहुँच में होने से अच्छी खासी रौनक लगी हुई थी। 'बीच' की रेत पर पहुँचने के लिए बनी सीढ़ियाँ और चबूतरे काले पड़ रहे थे। चार साढ़े चार साल बाद भी सुनामी के दिए घाव इन सीढ़ियों पर अंकित थे। ऊँचे चबूतरे पर पाँव लटका कर बैठ गयी हूँ-तट के दोनों तरफ घने पेड़ समुद्र को ब्रेकेट में बाँध जैसे वहाँ आए समुद्र प्रेमियों को अपनी सीमाओं में रहने का संकेत कर रहे हैं। यहाँ तट पर काला पानी साफ दिखायी पड़ रहा है। लगता है पानी में किसी ने राख घोल दी हो। इसीलिए तो इस प्रदेश को काला पानी की संज्ञा दी गयी होगी। पर दूर-दूर तक समुद्र को देखो तो वही पानी नीले आसमानी और मयूरी रंग की आभा ले लेता है। धीरे-धीरे शाम उतर रही है- धूप साथ छोड़ रही है। धूप के ढलने के साथ काली पड़ी सीढ़ियों और चबूतरों पर काली छायाएँ उसे और गहरा रही हैं। मैं ड्राइवर के पास जाकर पूछती हूँ- "मरीना पार्क वाले तट के समान इसका पुनर्निर्माण नहीं हुआ?"

"नहीं, बस मरम्मत हुई है।"

ड्राइवर अभी युवक ही है। सुनामी के 'कहर' के समय वह यहीं अंदमान में ही था। उसका किशोर मन उस दु:स्वप्न की याद में कह उठता है, "मैडम मुझे लगा था, मैं अकेला ही मर जाऊँगा। मैं चिल्ला चिल्ला कर रो रहा था मैं अकेला ही मर जाऊँगा, मेरी माँ तो विशाखापट्टनम में है। पर यहाँ माल की तबाही हुई जान नहीं गयी।"

कह कर वह एक लम्बी साँस भरता है, जिसमें पुराना दर्द और बचे रहने की खुशी मौजूद है। वहीं एक छोटे से टापू पर एक अकेला पेड़ अपने अस्तित्व को बचाए हुए बहुत कुछ कह रहा है। अकेला पेड़ और ड्राइवर शीनू अपने-अपने अकेले अनुभवों में सहज मानवीय बेचैनी और बचने की बहुत -सी कहानियाँ लिए हुए है।

राख घुला काला पानी, सुनामी की दु:खद स्मृतियों और उतरती शाम में मन उदास हो गया था, या दिनभर की थकान भीतर से बाहर आ गयी थी। मन चाहने लगा था कि होटल वापिस लौटा जाए, पर तभी आयोजक ने बताया था कि ध्वनि और प्रकाश शो देखने के बाद ही वापिस जाएँगे। ड्राइवर सेल्यूलर जेल के सामने वीर सावरकर पार्क में हमें ले आया था। पार्क में घास के ऊँचे नीचे टीलों से चाहे समुद्र देखो या गोलघर में शहीदों की तस्वीरें, यहाँ का पुराना इतिहास अन्तर्वर्ती अदृश्य धारा की तरह से हर समय साथ हो लेता है। मन की चहकती लय में विषाद की भीड़ लग गयी है। इस चुप्पी को आयोजक यह कहकर तोड़ता है कि टिकटें लेने के लिए महिलाओं को जाना पड़ेगा। मुझे छ: टिकटें लानी हैं। खिड़की पर एक सैनिक अपना परिचय पत्र दिखाते हुए छूट वाली टिकटें माँग रहा है- मैं कह उठती हूँ, " यह शो तो प्रत्येक भारतीय को नि:शुल्क दिखाया जाना चाहिए।" वह सैनिक मुझसे पूछता है कि आपने कितनी टिकटें लेनी हैं और मुझसे पैसे लेकर छूट वाली छ: टिकटें ले देता है। बात कुछ पैसों की नहीं, उस वृत्ति की है जिससे मेरा मन उस सैनिक मात्र के प्रति नहीं सम्पूर्ण सेना के प्रति कृतज्ञता से भर उठता है, जिनके बल पर हमारी स्वतन्त्रता और सुरक्षा सुरक्षित है।

ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम कालापानी के नाम से जानी जाने वाली सेल्यूलर जेल के खुले प्रांगण में विदेशी शासन के दौरान दंड-प्राप्त क्रान्तिकारियों की कारावासकालीन यातना को उजागर करता है।

प्रांगण में कार्यक्रम शुरू हो चुका है - जेल के पेड़ों और दीवारों की ईंटों की साक्षी में अवसादमय स्मृतियों की पीड़ा का इतिहास ध्वनि और प्रकाश के बलाबल में गंभीर सन्नाटे में गूँज रहा है- देखते, सुनते दर्शकों की च...च....च....च ध्वनियाँ साफ सुनी जा सकती हैं। स्वतन्त्रता की हमारी इमारत की नींव बने इन स्वतन्त्रता सेनानियों-शहीदों ने कितने कष्ट उठाए कि फुसफुसाहटें, शो के स्वर में घुल-मिल जाती है। अँधेरा और उजाला एक समय पर है कि इनमें बारिस का विषम स्वर लग जाता है। पर कोई भी दर्शक अपने स्थान से उठता नहीं। हाँ छतरियाँ खुल जाती हैं। पर बारिश छतरियों से ज्यादा बलशाली है। कुछ लोग पेड़ों के नीचे चले गए पर कार्यक्रम आगे बढ़ रहा है। पेड़ों से पानी टपक रहा है। छतरियों से पानी की धाराएँ बह रही हैं, भीगते दर्शकों की संवेदना क्रांन्तिकारियों से हटकर अपनी पर केन्द्रित हो जाती है। लगभग सभी गेट के पास आकर रुक गए हैं। हम वापस लौट जाने के लिए पार्किंग पर आते हैं- ड्राइवर कह रहा है 'शो' फिर से हो रहा है पर अब मन अपनी लय खो चुका है, लौटना नहीं हो सकता।

पोर्ट ब्लेयर की खूबसूरती उसके 'रेतीले तट' और छोटे-बड़े टापू में हैं। उन्हीं में से तीन टापुओं को देखने के लिए 'जंगली घाटी' से बेड़ा लिया था। शुक्र है धूप निकल आयी थी, वर्ना उन्हें देखना सम्भव न हो पाता।

शायद मौसम को अपनी ही नजर लगी गयी-धूप छाया का खेल शुरु हो गया और छाया के साथ बारिस भी खेल में शामिल हो गयी. कर्मी दल के युवक से मैंने पूछा, "नवम्बर में बारिश ?" उसका जवाब था, "मानसून का मौसम तो नहीं पर यहाँ कभी भी बारिश हो जाती है।" छतरियाँ खोल ली थीं, बेड़े में आगे बैठे होने के कारण बारिश और ऊँची तरंगों की उछाल का सीधा हमला हो रहा था। विराट समुद्र पर आक्रमण करती ये लहरें बेड़े को ज्यादा ही हिला रही थीं। अवचेतन में बैठा सुनामी का भय बेचैन कर रहा था। "मैं अकेला ही मर जाऊँगा। " -शीबू का वाक्य, कानों में गूंजने लगता है। बेड़ा धीर-धीरे आगे बढ़ रहा है। "वो सामने वाइपर द्वीप है" वहीं बैठा युवक मुझे बतलाता है और हम वाइपर द्वीप की जेट्टी पर हैं। पन्द्रह मिनट का समय यहाँ के लिए दिया है। बारिश में उतरने का मन नही होता.। पर यहाँ आये हैं तो एक नजर भीतर डाल ही लेनी चाहिए। छतरी इसलिए अन्दर जाते हैं-चरमराती दीवारें, सीढ़ियाँ, ऊपर माउंटी और दरवाजा-सा। कुछ समझ नहीं आता-कुछ लिखा हुआ भी नहीं है। बारिस से बचने के लिए बेड़े की तरफ सब भाग रहे हैं पर खैर तो वहाँ भी नहीं है। पर जहाज के पंछी को अन्तत: जहाज पर ही आना है। अभी धरती का साथ मौजूद है और देह में प्राण कान नाविक की आवाज की तरफ खिंच गए हैं जो कह रहा है, "बहुत शुरू में कैदियों के लिए जेल इसी टापू पर थी। आपने वह सीढ़ियाँ चढ़कर जो ऊपर देखा होगा,वह ऐतिहासिक फाँसीघर था। वायसराय लार्ड मेयो का खून करने वाले कैदी पठान शेर अली को इसी द्वीप पर फाँसी दी गयी थी। "

बेड़े में तो सवार होना ही था और उसके चलने के साथ ही लहरों की उठा-पटक भी शुरू हो जाती है और दिल का ऊँचे-नीचे होना भी। नाविक समुदाय में से निर्देश आता है, "आज हाई टाइड है सब बैठ जाइए।" हम ऊँची तरंगों में झूलते बेड़े का आनन्द उठा रहे हैं तो बच्चे जो आगे वाले स्तम्भ को पकड़े हैं तरंगों की फेनिल लयात्मक हँसी के साथ अपनी हँसी मिला रहे हैं। बेड़े के पिछले हिस्से में नए ब्याहे जोड़े ने अपनी दुल्हन को सुरक्षित होने का अहसास देने के लिए अपनी बाँहों के घेरे में ले लिया है। मध्य भाग में बैठे कुछ अधेड़ और वृद्धों ने गायत्री का जाप शुरू कर दिया है। होंठ तो बहुत लोगों के हिल रहे हैं।

भय से लाल और पीले पड़े चेहरे बारिश, हाई टाइड-ऐसे में मुझे साधनों के अभाव के दिनों में समुद्री यात्रा करने वाली साहसी नाविकों की याद हो आती है। अपने में हिम्मत और धैर्य सँजोने के लिए मैं आँखें बन्द कर लेती हूँ (शुतुर्मुगी प्रयास) पीछे चलता प्रार्थना का स्वर इस समय भी यह सोच कर होठों पर मुस्कान ला देता है कि जान पर बनी हो तभी वह परम शक्ति याद हो आती है।

बड़े के क्रू को कोई खतरा महसूस नहीं हो रहा, अभ्यस्त हैं वे इस सब के, पर अधिकांश यात्री समुद्र की इस छेड़छाड़ से परेशान हो रहे हैं। प्रार्थना रंग लाती है क्योंकि कर्मी दल में से एक लड़के ने रस्सी को निकाल लिया। बहुत मोटी लम्बी रस्सी और सामने द्वीप भी नजर आ रहा है - इतनी दूर हैं द्वीप फिर बीच समुद्र में उसने रस्सी क्यों डाल दी? पता चला यहाँ उथला समुद्र है और किनारे तक पहुँचने के लिए छोटी नौका पर जाना होगा। पर छोटी नौका में उतरते व्यक्तियों के हो हल्ले से, समुद्र में खड़े होने पर भी डोलते बेड़े की तरह से मन दुविधाग्रस्त हो जाता है। हमारा आयोजक कह रहा है तट पर पहुँचे डॉक्टर साहेब का फोन आया है, यहाँ कुछ नहीं है, आप वहीं रह जाएँ। पर सामने द्वीप से आवाज देती धूप की चमक, चाय की गर्माहट और पाँव के नीचे धरती के स्पर्श के आकर्षण की जीत होती है। ठीक निर्णय ले लेना कितनी बड़ी बात होती है! नार्थ से आने का मन नहीं हो रहा - हाई टाइड न होती तो यहाँ नौका से कोरल्ज भी देखा जाता पर उसकी कमी को पूरा करने के लिए हमारी 'एक साथिन' किनारे से कोरल्ज और पत्थर चुन रही है मेरे यह कहने के बावजूद कि कोरल्ज ले जाना अपराध है।

फिर से हम समुद्र में चल रहे हैं पर अब हमें समुद्र के मसखरी अन्दाज समझ में आ गये हैं - वह गुस्से में नहीं है, बस जरा अपने दबदबे को बनाए रखना चाहता है।" "समुद्र के ये तेवर कब शान्त होंगे?" मैं मास्टर से पूछती हूँ। "वापिस लौटने में सब ठीक हो जाएगा।" वह कहता है।

तीन बजने को थे जब हम रौस द्वीप पहुँचे। पता चला 1858 से लेकर 1945 तक यह अंग्रेजों और जापानियों की राजधानी रहा। भारतीय नौसेना द्वारा रक्षित यह द्वीप आज भी अपनी दिखावटी शान-शौक़त बनाए हुए है। मटियाले और गेरुए रंग से लिपा-पुता तराशा द्वीप, जहाँ पहुँचते ही मोर स्वागत कर रहा है;जिसके प्रशस्त रास्तों पर चलते हुए उन क्रान्तिकारियों कैदियों की याद ताज़ा हो जाती है जिन्होंने इसको बनाने में अपना खून पसीना बहाया था। अनुशासन के नाम पर उनके प्रति अगर अँगजोंने अत्याचारी व्यवहार न किया होता तो इस राजधानी को देख मन से 'आह' नहीं 'वाह' निकलती ।

लिखित कार्यक्रम के अनुसार अगले दिन हैवलॉक द्वीप के सुन्दर तट पर जाना था पर मौसम की खराबी के कारण टिकटों का वितरण नहीं किया गया। वहाँ न पहुँच पाने का मतलब था डॉल्फिन मछलियों के खेलों को देखने से भी वंचित हो जाना। प्रकृतिक आपदाओं को 'नियति' मानकर स्वीकार करने के इतर अन्य कोई रास्ता भी तो नहीं होता।

हैवलॉक के बदले हम 'वंडूर बीच' पहुँचे थे। अपने वर्तमान रूप में यह बीच, मानवीय दखलन्दाजी से अछूता अपने प्राकृतिक अस्तित्व को बनाए हुए है। 'सुनामी' की मार को इसने खूब सहा लगता है। पेड़ के ठूँठ पर बैठी नारियल पानी पीते हुए लकड़ी के गोल 'रेस्तराँ' को देख रही हूँ, जिसको बोट मैन 'बार हुआ करता था यह' कह रहा है। उसकी टूटी-फूटी लकड़ी की सीढ़ी से गलियारे में पहुँच दूर तक फैले समुद्र को देख रही हूँ। ठूँठ हुए पेड़ जगह-जगह दिल्ली हाट में रक्खे मूढ़ों-से बिखरे हुए हैं। सुनामी के बाद, अपने बचे हुए उपकरणों से तट ने अपना श्रृंगार कर लिया है। कोरल्ज दिखाने के लिए नावें चल रही हैं। एक सप्ताह पहले ही रेहड़ी वालों को चलती फिरती रहड़ियों को लगाने की इजाजत मिल गयी है। पर्यावरण को दूषित करने के लिए पोलिथीन का कचरा न फेंका जाए, इसकी देख रेख के लिए सेवारत महिलाएँ आ गयी हैं। जिन्दगी ने अपनी लय ले ली है। विदेशी सैलानी लगभग नहीं के बराबर है। यों हरे भरे गुच्छों को लिए समुद्र हर किसी का स्वागत कर रहा है।

यह इत्तफाक ही कहा जाएगा कि टुअर पैकेज के पहले दिन 'सेल्यूलर जेल' के प्रांगण में यहाँ का 'ध्वनि और प्रकाश' कार्यक्रम देखा और अन्तिम दिन सेल्यूलर जेल । इस विशाल जेल को देख इसके वास्तुकार की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जा सकता। उसका बुद्धि कौशल कि कतारों मैं कैदी किसी भी तरह एक-दूसरे को देख नहीं सकते, बात करना तो दूर की बात है। इन कैदियों को १३.५ फीट लम्बी और 7 फिट चौड़ी कोठरी में रात के बारह घंटे बन्द रहना पड़ता था। यहाँ के यातनादायक ब्यौरे दिल हिला देने वाले हैं। आज भी यहाँ की दीवारें और खिड़कियाँ इस बात की गवाह हैं।

पोर्ट ब्लेयर की भूमि अपने जख्मों को लाख छिपाने की कोशिश करे, वे छिप नहीं पाते। यद्यपि वे जख्म सूख गये हैं, पर उनके दाग यह बता रहे हैं कि यहाँ की साँस तो सामान्य हो चुकी है, पर उसके साथ निकलती टीस की ध्वनि को सुने बिना आप रह नहीं सकते।

शब्दार्थ-टिप्पण

उन्मुक्त स्वतंत्र, खुला **दखंलदाजी** टोकना, रोकना **जिजीविषा** जिने की अदम्य इच्छा **आभा** चमक **तबाही** बरबादी **अवसाद** उदासी **इत्तफाक** संयोग

मुहावरे

शुतुरमुर्गी प्रयास विपत्ति से मुँह छिपाना **आँखों में चमक आना** प्रसन्नता

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) यात्रा की शुरुआत में दिल्ली का मौसम कैसा था ?

(2) किस तट पर काला पानी साफ दिखाई पड़ रहा था ?

(3) लेखिका की आँखों में चमक कब आ गई ?

(4) वीर सावरकर पार्क कहाँ पर है ?

(5) पोर्ट ब्लेयर के तीन टापुओं को देखने के लिए बेड़ा कहाँ से लिया गया था ?

(6) नाविक के अनुसार बहुत शरू में कैदियों के लिए जेल किस टापू पर थी ?

(7) हाई टाइड अर्थात् क्या ?

(8) टुअर पैकेज के पहले दिन और अन्तिम दिन लेखिका ने क्या देखा ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) होटल से थोड़ा बाहर निकलते ही क्या-क्या था ?

(2) हाईटाइड में बेड़े की दशा कैसी हो रही थी ?

(3) रौस द्वीप पर किसकी राजधानी थी ?

(4) वंडूर बीच के बारे में लेखिका ने क्या लिखा है ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) कारवाइन कोव बीच का सौन्दर्य वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

(2) **'**सेल्यूलर जेल**'** की विशेषता बताइए।

(3) पोर्टब्लेयर के प्राकृतिक सौन्दर्य के बारे में विस्तार से लिखिए।

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

पोर्टब्लेयर की भूमि अपने जख्मों को लाख छिपाने की कोशिश करे वे छिप नहीं पाते।

5. मुहावरों के अर्थ देकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

इत्तफाक होना, खून-पसीना बहाना, तबाह होना, आँखों में चमक आना

6. समानार्थी शब्द लिखिए :

उल्लास, आकाश, तट, ज़ख़्म, कोशिश, दर्द

7. विरोधी शब्द लिखिए :

धूप, गहरा, उजाला, दूर

8. सही विकल्प चुनकर सही उत्तर दीजिए :

(1) अंदमान-निकोबार द्विप समूह की राजधानी कोन-सी है ?

(A) रौस (B) कँवरती (C) पोर्ट ब्लेयर (D) पुडुचेरी

(2) लंच के बाद साइट सीइंग के लिए जाते समय साथ में क्या ले जाना था ?

(A) दूरबीन (B) पानी की बोतल (C) मफलर (D) छतरी

(3) वायसराय लोर्ड मेयो का खून किसने किया था ?

(A) भगतसिंह (B) अब्बासअली (C) पठान शेर अली (D) सावरकर

(4) लेखिका ओर उनके साथी हैवलोक के बदले कहाँ पहुँच गये थे ?

(A) वंडूर बीच (B) रौस द्वीप (C) मरीना पार्क (D) कारवाइन कोव बीच

विद्यार्थी प्रवृति

- वर्ग में प्रवास की चर्चा कीजिए।
- प्रवास आयोजन की पूर्व तैयारी की चर्चा कीजिए।
- अपने राज्य के प्रवास योग्य स्थलों की सूची तैयार कीजिए।

शिक्षक प्रवृति

- प्रवास आयोजन एवं प्रवास स्थलों की सूची तैयार करने में विद्यार्थियों की सहायता करें।

•

22 दो कविताएँ

केदारनाथ अग्रवाल

(जन्म: सन् 1901 ई.; निधन : सन 2000 ई.)

केदारनाथ अग्रवालजी का जन्म बाँदा जिले के कमासीन नामक गाँव में हुआ था। प्रयाग और आग्रा विश्वविद्यालय से बी.ए., एल.एल.बी., की परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने के बाद वे बाँदा में वकालत करते रहे। 'हंस' और 'नया साहित्य' जैसी प्रगतिवादी पत्रिकाओं में इनकी कविताएँ बराबर छपती रही हैं। हिन्दी के समर्थ प्रगतिवादी कवियों में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। नई कविता के साथ भी इनका निकट का संबंध रहा है।? वर्ग विहीन समाजरचना का संकल्प इनकी रचनाओं से स्पष्ट प्रक्ट होता हैं।

शैलीकार के रूप में मुक्तछंद और गीतिछंद का सफल प्रयोग किया है। हकीकतों को खुली और चुभती हुई सीधी-सरल भाषा में व्यक्त कर देते हैं। इनकी कविता में किसी भी प्रकार की कृत्रिमता नहीं है। 'नींद के बादल,' 'अपूर्वा,' 'युग की गंगा,' 'लोक और परलोक,' 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' आदि उनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं। प्रकृति प्रेम एवं सौन्दर्य चेतना से युक्त उनकी कविताएँ बड़ी ही मार्मिक हैं। अनूढ़ा शब्दचयन और भावाभिव्यक्ति में चित्रात्मकता इनकी कविता की विशेषताएँ हैं।

'अच्छा होता' कविता में कवि ने आदमी में आदमियत की कल्पना की है। कवि कहता है कि अगर आदमी में अवगुण न होते तो अच्छा होता। 'सितार-संगीत की रात' कविता में कवि ने संगीत समारोह के दृश्य को प्रतीकों के माध्यम से चारों ओर फैले प्रसन्नता के माहोल को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से उभारा है।

---

1. अच्छा होता

अच्छा होता

अगर आदमी

आदमी के लिए

परार्थी-

पक्का-

और नियति का सच्चा होता

न स्वार्थ का चहबच्चा-

न दगैल-दागी-

न चरित्र का कच्चा होता।

अच्छा होता

अगर आदमी

आदमी के लिए

दिलदार-

दिलेर-

और हृदय की थाती होता,

न ईमान का घाती-

ठगैत ठाकुर

न मौत का बराती होता।

2. सितार -संगीत की रात

आग के ओंठ बोलते हैं।
सितार के बोल,
खुलती चली जाती हैं
शहद की पंखुरियाँ,
चूमती अँगुलियों के नृत्य पर,
राग-पर राग करते हैं किलोल,
रात के खुले वक्ष पर,
चन्द्रमा के साथ,
शताब्दियाँ झाँकती हैं
अनंत की खिड़कियों से,
संगीत के समारोह में कौमार्य बरसता है,
हर्ष का हंस दूध पर तैरता है,
जिस पर सवार भूमि की सरस्वती
काव्य-लोक में विचरण करती है।

शब्दार्थ-टिप्पण

अच्छा भला **परार्थी** दूसरे का उपकार या भलाई करने वाला **पक्का** अनुभवी **नियति** स्वभाव, प्रकृति **दगैल** दगाबाज **दागी** कलंकित **चरित्र** स्वभाव, आचरण **दिलेर** हिम्मतवाला **थाती** धरोहर **घाती** घातक, धोखा देना **ठगैत** ठगनेवाला **अनंत** जिसका अंत न हो, नित्य **किलोल** क्रीडा **हर्ष** खुशी **विचरण** घूमना-फिरना

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) 'अच्छा होता' कविता के कवि कौन हैं ?
(2) नियति का अच्छा होता तो आदमी कैसा होता ?
(3) चरित्र का कच्चा न होता तो आदमी कैसा होता ?
(4) 'चरित्र का कच्चा' का क्या तात्पर्य है ?
(5) 'मौत का बाराती' कहने का क्या तात्पर्य है ?
(6) 'कौमार्य बरसता है' शब्दों द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?
(7) हंस पर कौन सवार है ?
(8) भूमि लोक की सरस्वति कहाँ विचरण करती है ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) 'अच्छा होता' काव्य के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं ?
(2) 'अच्छा होता' काव्य में कवि ने मनुष्य की किन-किन विशेषताओं को उजागर किया है ?
(3) 'शताब्दियाँ झाँकती हैं ' कवि के इस कथन में छिपे भाव की व्याख्या कीजिए।

3. विस्तारपूर्वक उत्तर लिखिए :

(1) 'सितार-संगीत की रात' कविता के मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।
(2) 'आग के ओंठ' का काव्य सौन्दर्य बताइए।
(3) 'अच्छा होता' कविता का भाव समझाकर अपने शब्दों में लिखिए।

4. काव्य-पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) संगीत के समारोह में कौमार्य बरसता है।

(2) आग के ओंठ बोलते हैं सितार के बोल

(3) अगर आदमी आदमी के लिए.

5. सही विकल्प चुनकर एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) .....होता, अगर आदमी, आदमी के लिए।

(A) बुरा (B) अच्छा (C) ठीक (D) सच्चा

(1) अनंत की खिड़कियों से कौन झाँकता है ?

(A) शताब्दियाँ (B) कलाकार (C) कवि (D) आदमी

(1) .....काव्य-लोक में विचरण करती हैं।

(A) लक्ष्मी (B) सरस्वती (C) श्रीमती (D) वाणी

6. मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

आदमी होना, दाग लगना

7. विलोम शब्द लिखिए :

पक्का, परार्थी, सच्चा, हर्ष

8. समानार्थी शब्द लिखिए :

नियति, हृदय, शहद, सरस्वती

विद्यार्थी--प्रवृत्ति

- 'अच्छा होता' कविता में निहित मूलभाव से सम्बन्धित चार वाक्य लिखिए।
- केदारनाथ अग्रवाल की अन्य कविताएँ पुस्तकालय से प्राप्त करके पढ़िए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- केदारनाथ अग्रवाल की जीवनी एवं रचनाओं का परिचय दीजिए ।

•

23 वीर बादल

आचार्य चतुरसेन शास्त्री

(जन्मः सन् 1891 ई.; मृत्यु सन् 1960 ई :)

चतुरसेन शास्त्री का जन्म उत्तरप्रदेश के अनूपशहर में हुआ था। इन्होंने आयुर्वेद की ऊँची परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं और वैद्यकी में सफल भी रहे, परन्तु इनकी रुचि शुरू से ही साहित्य की ओर थी। इन्होंने हिन्दी गद्य के विभिन्न रूपों को अंगीकार किया, जिनमें कहानी, उपन्यास, नाटक तथा गद्य काव्य मुख्य हैं। इनके अतिरिक्त राजनीति, चिकित्सा, कामशास्त्र तथा पाकशास्त्र जैसे विषयों को भी अपने लेखन का आधार बनाया।

चतुरसेन लिखित कहानियों की विषयभूमि बौद्धकालीन, राजपूत कालीन एवं मुगलकालीन समाज और संस्कृति है। इनकी लगभग 450 कहानियों में कुछ थोड़ी-सी कहानियाँ शिल्प, गठन और मानवीय अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की दृष्टि से सफल बन पायी हैं। इनकी कहानियों में रोमानी 'इतिहास-रस' परिलक्षित होता है। कुछ कहानियों में इनका संपूर्ण कहानी साहित्य पाँच भागों में प्रकाशित हुआ है- (1) 'बाहर-भीतर' (2) 'दु:खवा मैं कासे कहूँ सजनी' (3) 'बाहर-भीतर' (4) 'सोया हुआ शहर और (5) 'कहानी खत्म हो गई'। 'वयं रक्षामः','वैशाली की नगरवधू', 'सोना और खून,' (5भाग) आदि इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। कथा का अद्‌भुत प्रवाह, वर्णन में सजीवता और भाषा में लालित्य इनकी विशेषताएँ हैं।

प्रस्तुत कहानी 'वीर बादल' इनकी एक प्रतिनिधि रचना है। इस कहानी की घटनाएँ आदर्श और प्रतिष्ठा के लिए लड़े गए युद्धों का एक अद्‌भूत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। राजपूती शौर्य का चित्रण जैसा एक कहानी में हुआ है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। मध्यकालीन समाज के जीवन मूल्यों को प्रकाशित करनेवाली यह इनकी एक उत्तम रचना है।

तेरहवीं शताब्दी बीत रही थी। निर्दय और इन्द्रियलोलुप पठान अलाउदीन खिलजी भारत का सम्राट था। उसने अपनी दुर्धर्ष सेना के बल पर राजपुताना को कुचल डाला था, और वह राजपुताने की बची-खुची आबरु को लूटने के लिए दलबल सहित चित्तौड़ पर चढ़ आया था। चित्तौड़ पर दुर्भाग्य उदय हुआ था। इस बार उसका इरादा चित्तौड़-विजय का न था, प्रत्युत चित्तौड़ की महारानी पद्‌मनी को हरण करने का था। चित्तौड़ की आन्तरिक अवस्था अच्छी न थी, राणा लक्ष्मणसिंह नाबालिग थे और उनके चाचा लक्ष्मणसिंह चित्तौड़ के कर्ता-धर्ता थे। पद्‌मनी भीमसिंह की पत्नी थी। वह पद्‌मराग मणि के समान सुन्दर और कान्तिवाली थी। उसके सौंन्दर्य की तारीफ राजपुताने-भर में फैली हुई थी और सौंन्दर्य लोलुप अलाउद्‌दीन खिलजी पूरी शक्ति से उस सौंन्दर्य-कुसुम को लूटने चित्तौड़ पर चढ़ आया था।

किला चारों ओर से घिरा हुआ था और किसी भी आदमी का किले से बाहर जाना या बाहर से भीतर आना सम्भव न था। किले में खाद्य-सामग्री अभी इतनी थी कि वर्षो घेरा पड़ा रहने पर भी उसकी कमी न होती। परन्तु पानी का अभाव था। लोगों ने प्रथम स्नान आदि बन्द किए। अब पीने में भी किफायत पर नौबत आ पहुँची। अलाउद्‌दीन को चित्तौड़ को घेरे नौ मास हो चुके थे। किला फतह होने की कोई युक्ति सूझ न पड़ती थी। भारतीय राजनीति का वातावरण उस समय अत्यन्त क्षुब्ध था।

मालवा, गुजरात, बंगाल और दिल्ली से अशान्तिपूर्ण खबरें आ रही थीं। अलाउद्‌दीन ने समझा कि सौंन्दर्य की देवी के पीछे हिन्द का तख्त ही न खोना पड़े वह जल्द से जल्द चित्तौड़ के मामले को खत्म करने का मन्सूबा बांधने लगा। मन ही मन उसने कपट का जाल बिछाया और फिर सुलह का झंडा लेकर किले में संवाद भेज दिया।

सुलह का झंडा देखकर किले का फाटक खु ल गया। दूत भीत मुद्रा से किले में गया। विकट आकृति राजपूत उसे सन्देह और क्रोध से देख रहे थे। उसने राणा भीमसिंह की राजसभा में जाकर विनयपूर्वक यह निवेदन किया कि सुलतान चित्तौड़ के राणा से बराबर की दोस्ती करना चाहते हैं। उनकी मन्शा न चित्तौड़ छीनने की है,न महारानी को हरण करने की। अगर महाराणा अपनी दोस्ती का सबूत दें तो सुलतान अभी दिल्ली को लौट जाएं। दोस्ती के सबूत में सुलतान केवल यह चाहते हैं कि उन्हें केवल एक बार महारानी की झलक दिखा दी जाए। और कुछ नहीं।

गर्वीले राजपूतों को दूत का यह प्रस्ताव अत्यन्त अपमानजनक प्रतीत हुआ। उन्होंने तलवारें खींच ली और भांति-भांति के कुवाक्य दूत और सुलतान को कहे। प्रत्येक राजपूत इस अपमान के बदले अपने प्राण देने के लिए तैयार था, पर राणा भीमसिंह गभ्भीर चिन्ता में निमग्न थे। उनके ऊपर चित्तौड़ की रक्षा एवं हजारों राजपूतों की जीवन-रक्षा का दायित्व था। उन्होंने सोचा, क्या सर्वनाश से बचने के लिए यह अपमान सह लिया जाए? उन्होंने अपने मन्त्रियों, सरदारों, भाई-बंदों और दरबारियों से परामर्श किया और रानी पद्‌मनी से भी सब हकीकत कह दी! रानी ने साहसपूर्वक कह दिया कि यदि मेरा यह अपमान कर के वह दैत्य

टल जाए तो मैं अपनी आबरू का बलिदान करने को तैयार हूँ, परन्तु प्रत्यक्ष नहीं, दर्पण में ही वह पशु मेरी छबि की एक झलक देख सकता है।

राणा भीमसिंह ने सभासदों को सब ऊँच-नीच समझाकर अन्त में प्रस्ताव की स्वीकृति दे दी। उन्होंने यह शर्त की कि सुलतान अकेले नि:शस्त्र किले में आएंगे और दर्पण में महारानी की एक झलक देखकर तुरन्त लौट जाएंगे तथा तुरन्त ही चित्तौड़ का घेरा उठा लेगें।

अलाउद्दीन ने राणा की इस उदारता की बड़ी तारीफ की और मित्रता की बहुत लम्बी-चौड़ी बातें राणा के पास भेजी। ठीक समय पर नि:शस्त्र अकेले किले में आ पहुँचा।

सुलतान का प्रस्ताव अभूतपूर्व था और वह विश्वासी व्यक्ति न था। किले का प्रत्येक राजपूत इसे अपना जातीय अपमान समझे हुए था। परंतु राणा अपने विचार का दृढ़ था। वह गम्भीर और मौन था। आज महलों में अद्भुत गम्भीरता छाई हुई थी। राजपूत बड़ी-बड़ी काली दाढ़ियों के बीच दांतों की बत्तीसी भीचें सम्पुटित होंठ किए , बिना बड़ी-बड़ी ढाल कन्धे पर लिए, तलवारें म्यान में किए, लाज और अपमान से नीचे आँखें किए खड़े थे। सुलतान सबके बीच साहस और उत्साह की मूर्ति बना धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। राणा ने किले के फाटक पर उसका स्वागत किया था। राजपूतों के वचन पर उसे भरोसा था। वह नि:शस्त्र तथा एकाकी था। वह चपल घोड़े पर सवार था और आगे बढ़ रहा था। उसके बाईं ओर राणा चुपचाप एक घोड़े पर सवार आगे बढ़ रहा था और पीछे चुने हुए सवार थे। सुलतान अपनी मित्रता और प्रसन्नता प्रकट करने के लिए बहुत-सी बातें करता जाता था।

जनाने दरवाजों पर सब घोड़ों से उतर पड़े। वे उन सीढ़ियों पर चढ़े जहां किसी यवन के पांव नहीं पड़े थे। राजपूत क्रोध से एवं बांदिया भय से थर-थर कांपती जा रही थीं। सन्नाटा था, विरद् गानेवाले चुप बैठे थे।

सुलतान ने कहा-महाराणा, आज से हम दोनों दोस्त हुए न, कहिए। महाराणा ने खिन्नमन होकर धीरे से कहा-सुलतान की यदि यही इच्छा है तो मैं वचन देता हूँ कि राजपूत हमेशा सच्ची दोस्ती निभाएंगे।

"इसका मुझे पूरा भरोसा है आप देखते हैं कि आपपर मैं यकीन करके खाली हाथ किले में आ गया हूँ। उम्मीद है, आप भी मुझे भरोसा देंगे।"

राणा ने गम्भीर स्वर में कहा-तो क्या सुलतान मित्रता की ओर इतना कदम उठाकर भी वह अपमानजनक काम करने का इरादा रखते हैं जो राजपूतों के लिए बिल्कुल नया है ?

"यकीन रखिए, राणा साहब, मेरी नीयत कुछ बुरी नहीं। जैसा हम लोगों में कोल-करार हुआ है, उसके होते ही मैं तुरन्त दिल्ली लौट जाऊंगा।"

राणाने ठण्डी सांस लेकर एक बार सरदार की ओर देखा-वे नीची आँखें किए खड़े थे। फिर उसने चांदी की भांति सफेद महलों के आकाश को छूनेवाले सुनहरी कंगूरों को देखा जो सूर्य की धूप में चमक रहे थे! तब सूर्यवंश के उस अधिकारी ने एक ठण्डी सांस ली और कहा- तब आइए, राजपूत अपनी बात पूरी करेंगे। दोनों आगे बढ़े। दो कदम बाद सुलतान झिझककर खड़ा हो गया, उसने देखा-सामने पूरे कद के आईने में वह अलौकिक सुन्दरी-जैसे रत्नों से जड़ी तस्वीर हो-लाज से सिर नवाए खड़ी है। एक झलक सुलतान ने देखा, और वह झलक दर्पण से गायब हो गई। सुलतान निश्चल हो गया, इस सौंदर्य की उसने कभी कल्पना भी न की थी। महाराणा ने कंपित कंठ से कहा-राजपूतों का वचन पूरा हुआ, अब सुलतान को अपना वचन निभाना चाहिए।

सुलतान चौंका और सोते हुए मनुष्य की भांति उसने कहा-हां हां, जरूर, अब मुझे आपकी दोस्ती पर यकीन हो गया है। महाराणा, दर-हकीकत मैं आपको मुबारकबाद देता हूँ। आपकी महाराणी इन्सान नहीं हैं, इन्सान में इतनी खूबसूरती नहीं हो सकती।

राजपूत धीरज खो रहे थे। राणा ने अधीर होकर कहा-राजपूती मर्यादा को निभाने के लिए, सुलतान, जैसे प्रतिष्ठित मेहमान को विदा करने हम बाहर की ड्योढ़ी तक चलेंगे, परन्तु सुलतान अपना वचन कब पूरा करेंगे ?

मैं अभी अपनी छावनी उठाता हूं, सुलतान ने वापस लौटती बार कहा था।

वे चुपचाप धीरे-धीरे लौट रहे थे, दोनों चुप थे। राणा अपने उस अपमान की बात सोच रहे थे, जो अभी हो चुका था और सुलतान उस घात की, जो वह अभी करनेवाला था।

फाटक आ पहुंचा। राणा ने कहा- मैं सुलतान के कष्ट करने के लिए क्षमा चाहता हूँ।

"नहीं,नहीं, माफी मुझे मांगनी चाहिए, क्योंकि मैंने आपको बड़े भारी तरद्दुद में डाल दिया है ; मगर खैर, इससे हमारी और आपकी दोस्ती पक्की हो गई। अरे, आप रुक क्यों गए ? जरा और आगे चलिए। वहां मेरे आदमी हैं, मैं आपके लिए कुछ सौगात लाया हूं, जो आपको बाइज्जत कबूल करनी होगी। आशा है आप इन्कार नहीं करेंगे।"

राणा झिझका पर आगे बढ़ा। उसने कहा- आपकी दोस्ती ही मेरे लिए सबसे बड़ी सौगात है।

सुलतान ने अत्यन्त आग्रह से कहा- नहीं, नहीं, अगर आप इन्कार करेंगे तो मैं समझूंगा कि आपका दिल मेरी तरफ से साफ नहीं है।

फाटक कदम-कदम पर दूर हो रहा था, राणा कुछ कह न सके। एकाएक पठानों का एक बड़ा दल जंगल से निकल आया और बात ही बात में राणा को घेर लिया। राणा तलवार भी न निकाल पाया, उसकी मुश्कें कस दी गईं। राणा ने लाल-लाल आँखें करके कहा--यही दोस्ती है ?

"दोस्ती ? काफिर और दीनदार की कैसी दोस्ती ? या तो वह परी मेरे हवाले कर, वरना चित्तौड़ की ईंट से ईंट बजा दूंगा, और तेरी बोटियां चील और कौए खाएगें।"

राणा ने घृणापूर्ण दृष्टि से देखकर कहा--धिक्कार है तुझ विश्वासघाती पर।

सुलतान ने कहा- ले जाकर बन्द कर दो बदबख्त को। और वे तेजी से चल दिए।

किले में हाहाकार मच गया। राजपूतों ने तलवारें सूत लीं। सबने इरादा किया, किले का फाटक खोल दो और जूझ मरो। पद्मिनी ने सुना तो कहलाया-सब कोई शान्त रहें, मैं महाराणा की मुक्ति का उपाय करूंगी। लोग आश्चर्यचकित हो महाराणा की मुक्ति की प्रतीक्षा करने लगे।

" बादल, क्या तुम अपने काकाजी को छुड़ाने का साहस कर सकते हो ?"

" हां काकीजी. मैं अभी अपने प्राण दे सकता हूं।"

" परन्तु बेटे, शत्रु छली और बली हैं, हमें भी छल और बल से काम लेना होगा।"

" छल-बल से कैसे काकी जी ?"

" मैं सुलतान से कहलाए देती हूँ, मैं स्वयं उनके पास आने को राजी हूँ, आप राणा को छोड़ दें।"

" छी: छी: काकी ! क्या आप उस म्लेच्छ सुलतान के पास जाएंगी ?"

" नहीं बेटे, मेरी जगह मेरी डोली में तुम जाओगे।"

" क्या मैं ?

" हां तुम मेरी जगह, यद्यपि तुम अभी बारह साल के बालक हो, पर क्षत्रिय-पुत्र को जूझ मरने के लिए यह आयु काफी है। तुम यह काम कर सकोगे ?"

" मुझे क्या करना होगा ?"

" तुम सब हथियार बांधकर मेरी पालकी मैं बैठोगे। पालकी के साथ सात-सौ डोलियों में मेरी सहेलियां होंगी। प्रत्येक डोली में बांदी की जगह दो-दो शूरवीर हथियार बांधकर बैठेंगे। और चार-चार शूरमा कहार का भेस धरे डोली उठाएंगे, जिनके हथियार कपड़ों में छिपे होंगे।"

" इसके बाद काकीजी।"

" इसके बाद रानी-राणा में अकेले में भेंट होगी। पास में तुम्हारे काका गोरा घोड़े पर सवार होंगे। वे तुरन्त ही राणाजी को घोड़ा और हथियार दे देंगे और किले की ओर चलता कर देंगे। फिर तुम डोली से निकल अपने राजपूती जौहर के हाथ दिखलाना।"

"ऐसा ही होगा काकीजी हम सुलतान को दगाबाजी का वह पाठ पढ़ाएँगें, जिसका नाम है।"

"तब जाओ बेटे, अपने गोरा काका से कहो। वे सुलतान से कहला भेजें कि रानी आपके पास आने को राजी है। मगर वे अपनी बांदियों और सहेलियों के साथ आएंगी। उन्हें परदे में उतारने का बन्दोबस्त कीजिए और राणा को छोड़ दीजिए तथा रानी को एक घण्टे राणा से एकान्त में मिलने की आज्ञा मिलनी चाहिए, बस।"

"समझ गया। अभी जाकर चाचा से सब हकीकत बयान करता हूं।"

"जाओ पुत्र, ईश्वर तुम्हें सफलता दें।"

सुलतान की छांवनी में जश्न मनाया जा रहा था। उसे खबर लग चुकी थी कि पद्मिनी अपने महल से चल चुकी हैं। वह पहाड़ से उतरती हुई डोलियों को देख-देखकर प्रसन्न हो रहा था। वह अपनी चालाकी पर खुश हो रहा था। सिपाही शराब ढाल रहे थे और नाच-गान में मस्त थे। किसी को किसी की सुध नहीं थी।

धीरे-धीरे डोलियां पठानों के शिबिर में आ गईं और वे सब एक बड़े तम्बू में उतार दी गईं। रानी ने कहला भेजा-अब आप एक घण्टे के लिए मुझे राणा से मिलने की इजाजत दें। इसके बाद तो मैं आपकी हूं ही।

बादशाहने हंसकर कहा-अच्छा, अच्छा, इसमें कोई हर्ज नहीं है। राणा अच्छा आदमी है। मगर एक घण्टे बाद मैं कुछ नहीं सुनूंगा।

" यह मैं क्या देख-सुन रहा हूं, अच्छा होता कि इससे पहले ही मैं मर गया होता। पद्मिनी, तुमसे ऐसी आशा न थी। अब तुम मुझे अपना मुंह दिखाने का साहस करती हो ?" राणा भीमसिंह ने क्रोध से थर-थर कांपते हुए पालकी के सुनहरी और अग्निमय नेत्रों से देखते हुए कहा।

पर्दा हिला। बादल ने घूंघट से मुंह निकालकर कहा-काकाजी, सावधान!

" कौन, तुम हो **बादल**!"

" जी हां, और सात सौ डोलियों में जुझारु वीर भरे हैं। हम, हम सुलतान से निबट लेंगे। बाहर गोरा काका घोड़ा लिए खड़े हैं। आप घोड़े पर चढ़कर किले में जा पहुंचें और फिर सेना लेकर सुलतान की सेना पर टूट पड़ें, तब तक हम निबट लेंगे।"

" शाबाश बेटे, हम आज दगाबाजी का....."

" चुप, ज्यादा बातें न कीजिए। खेमे के पीछे घोड़ा खड़ा है, आप जाइए, हम शत्रुओं को रोकते हैं।" बादल पालकी से निकल खड़ा हुआ। संकेत होते ही हजारों राजपूत हर-हर करके तलवार सूतकर निकल पड़े। रंग में भंग पड़ गया। छावनी में उथल-पुथल मच गई । जो जहां था, वहीं काट डाला गया । तैयारी का अवसर ही न था। मारो, मारो की आवाज सुनाई पड़ती थी। घायलों के चित्कार मारते हुए कराहने की आवाज और राजपूतों की हर-हर महादेव तथा पठानों की अल्ला हो-अकबर की तुमुल ध्वनि हो रही थी। रुण्ड-मुण्ड राणा भीमसिंह तीर की भांति किले की ओर जा रहे थे। किले पर राजपूत तलवारें झन-झनां रही थीं।

बादल को पठानों ने घेर लिया था। पर वह बालक किले के नीचे पथ पर खड़ा दोनों हाथों से तलवार चला रहा था। गोरा ने तलवार चलाते-चलाते कहा-वाह बेटे, खूब खेत काट रहे हो!

" सावधान काकाजी, वह पीछे से वार होता है!"

तलवारें चलाते-चलाते गोरा ने कहा-हर्ज नहीं, राणाजी महल में पहुंच गए हैं, वह तोप छूटी।

तलवारें और तीर बरस रहे थे। गोरा ने कहा-बादल, अब मेरे हाथ नहीं चलते।

बादल ने कहा-काकाजी, हम उस लोक में मिलेंगे। -गोरा घाव खाकर गिर पड़ा। बादल ने देखा और शत्रुओं को चीरते हुए जोर से उसके कान के पास पुकारा-मैं, काकाजी, आपकी वीरता का बयान करूंगा! महाराणा सेना लेकर आ रहे हैं!

राणा ने आते ही शत्रुंओं को गाजर-मूली की तरह काटना आरम्भ कर दिया। शत्रु के पैर उखड़ गए। सुलतान पिटे कुत्ते की तरह सब सामान छोड़कर भागा। उसकी छावनी जला दी गई। बादल के शरीर पर अन-गिनत घाव थे। उसके मुमूर्ष शरीर को महलों में लाया गया। शरीर से एक-एक बूंद रक्त निकल गया था और उसके होंठों पर हंसी की रेखा थी।

शब्दार्थ-टिप्पण

प्रत्युत बल्कि **लोलुप** लालची, लोभी **किफायत** मितव्ययता **नौबत** स्थिति, दशा **क्षुब्ध** क्रुद्ध, उपद्रवग्रस्त **तख्त** सिंहासन, राज्य **मन्सूबा** इच्छा **निमग्न** डूबा **परामर्श** सलाह **संपुटित** बंद **यवन** मुस्लिम **बांदी** दासी **विरद** ख्याति **दुर्धर्ष** धृष्ट, अदम्य **कौल** शपथ, वचन संकल्प **तरद्दुद** चिंता, अंदेशा **काफिर** मूर्तिपूजक, गैरमुस्लिम **दीनदार** धर्मशील, धार्मिक **चीत्कार** घोर ध्वनि **आर्तनाद** रुण्ड, सिरहीन घड़ **मुंड** सिर **मुमूर्ष** मृत्यु का इच्छुक **शूरमा** वीर योद्धा

मुहावरे

जाल बिछाना-फँसाने का उपाय करना **मुश्कें कसना**-दोनों हाथों को पीछे करके पीठ पर बाँधना **ईंट-से-ईंट बजाना**-लड़ाई या युद्ध होना **रंग में भंग पड़ना**-आनंद और हँसी-खुशी आदि में विघ्न पड़ना

स्वाध्याय

1. सही विकल्प चुनकर पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) गोरा-बादल के युद्ध का समय क्या था ?

(A) बारहवीं सदी (B) तेरहवीं सदी (C) चौदहवीं सदी (D) पंद्रहवीं सदी

(2) इस बार अलाउद्दीनि की चितौड़ पर चढ़ाई करने का इरादा क्या था ?

(A) चितौड़ जीतना (B) राजपूतों को हराना (C) पद्मिनी का हरण (D) चितौड़ का सर्वनाश करना

(3) राणा भीमसिंह ने निम्नलिखित में से कौन सी शर्त नहीं रखी थी ?

(A) सुलतान अकेले किले में आएँगे। (B) पद्मिनी की झलक दर्पण में देखकर सुलतान तुरंत लौट जाएँगे।

(C) सुलतान निःशस्त्र आएँगे। (D) सुलतान चितौड़ की आर्थिक मदद करेंगे।

(4) अलाउद्दीन के चित्तौड़ युद्ध के समय बादल की उम्र कितनी थी ?

(A) 12 वर्ष (B) 13 वर्ष (C) 14 वर्ष (D) 11 वर्ष

2. एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) अलाउद्दीन के आक्रमण के समय चितौड़ की आंतरिक व्यवस्था कैसी थी ?

(2) किले में किस चीज का अभाव था ?

(3) अलाउद्दीन चितौड़ को मामले को जल्द क्यों निपटाना चाहता था ?

(4) सुलतान के दूत ने दोस्ती के लिए क्या शर्त बताई ?

(5) पद्मिनी के आने का समाचार जानकर पठानों की छांवनी का वातावरण कैसा हो गया था ?

(6) डोलियों को तम्बू में उतर जाने पर अलाउद्दीन के पास क्या संदेश भेजा गया ?

(7) पद्मिनी के आने की बात सुनकर राणा भीमसिंह की क्या प्रतिक्रिया हुई ?

3. पाँच-छ वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) सुलह के लिए भेज गए दूत ने राजसभा में क्या कहा ?

(2) दूत के अपमानजनक प्रस्ताव को राणा भीमसिंह ने क्यों स्वीकार कर लिया ?

(3) अलाउद्दीन ने पद्मिनी का दर्शन कैसे किया ? उसका उस पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(4) गोरा-बादल की वीरता का वर्णन कीजिए।

(5) राजपूतों ने दगाबाजी के लिए पाठ पढ़ाने की कौन सी योजना बनाई ?

4. नीचे दिए गए मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

रंग में भंग पड़ना, पाँव उखड़ना, जाल बिछाना, ईंट-से-ईंट बजाना

5. 'ना' उपसर्ग से बननेवाले पाँच शब्द लिखिए :

उदा, नाबालिग

6. संधि विग्रह कीजिए :

अत्यंत, निश्चल, स्वागत, सम्मान, वातावरण

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- अपने अभिभावक या शिक्षक की सहायता से 'जौहर'तथा'केशरिया' शब्द को विशिष्ट अर्थ संदर्भ ढूँढ़कर उन्हें अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए ।
- राजपूत काल के प्रसिद्ध किलों के चित्र एकत्र कीजिए।
  उदयपुर, चितौड़ और हल्दीघाटी के प्रवास का आयोजन कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- स्वमान की रक्षा हेतु बलिदान देने की भावना राजपूतों का एक प्रमुख गुण रहा। ऐसे कुछ राजपूत बलिदानियों की कथा विद्यार्थियों को पढ़ने के अवसर प्रदान कीजिए।

24 बिरसा मुंडा

संकलित

प्रस्तुत जीवन कथा में बिरसा मुंडा के जीवन संघर्ष की सच्ची कहानी है। बिरसा मुंडा केवल पच्चीस वर्ष की कम आयु में अपने समाज और देश के लिए एक मिशाल बन गया। बचपन से लेकर युवावस्था तक उसका जीवन संघर्षपूर्ण रहा है। इसाई मिशनरियों और पादरियों द्वारा भारतीय संस्कृति के लिए किए जा रहे अपमानजनक कथन सुनना उसके लिए असह्य था। उसने सभी प्रकार के शोषण से मुक्ति दिलाने और अंग्रेजी सत्ता को आदिवासी क्षेत्र से दूर रखने का भरसक प्रयास किया। अंतत: वह अपने ही लोगों के विश्वासघात के कारण सरकार की गिरफ्त में आ गया और जेल में ही उसकी मृत्यु हुई। पर उसकी कोशिशें नाकाम नहीं रहीं। ब्रिटिश सरकार को भूमि समस्या के लिए कदम उठाने पड़े। बिरसा आज भी आदिवासी साहित्य में जीवित है।

बिहार वर्तमान झारखंड राज्य के रांची और सिहभूम जिलों के मुंडा आदिवासियों को अंग्रेजी अधिकारियों और दलालों के शोषण और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष के लिए खड़ा करके बिरसा ने अपनी कीर्ति अमर की। उसने बहुत ही कम उम्र पाई, केवल पच्चीस वर्ष (1875-1900)की। किन्तु जीवन के अन्तिम पांच वर्षों में वह मुंडा लोगों को बहुत कुछ सिखा गया। यह बिरसा के प्रयत्नोंका ही फल था कि सन 1900 में 60 वर्ग मील के इलाके की जनता अपने तीर-कमान और बरछे-भालों से ब्रिटिश सरकार को गोलियों का मुकाबला करने के लिए उठ खड़ी हुई थी। सभी प्रकार का शोषण समाप्त करने तथा अंग्रेजी सत्ता का जुआ उतार फेंकने का उनका आह्वान घर-घर का नारा बन गया। बिरसा अब नहीं है , किन्तु मुंडा जन-जाति अपने जंगलों और पहाड़ों में आज भी उनकी आवाज गूंजती हुई सुनती है और उनको विश्वास है कि धरती आबा-इसी नाम से वे पुकारे जाते थे-एक बार फिर अवतार लेकर उनका मार्गदर्शन करेगें।

बिरसा के पिता सुगना मुंडा लकरी मुंडा की दूसरी सन्तान थे। सुगना के पांच पुत्र हुए। बिरसा उनकी चौथी सन्तान थे। उपलब्ध सामग्री के आधार पर बिरसा का जन्म 1875 के आसपास माना जाता है। कुछ व्यक्ति उनका जन्म स्थान उलिहातु और कुछ चलखद बताते हैं। बिरसा के ताऊ, पिता,चाचा सभी ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था। उनके पिता जर्मनी धर्म प्रचारकों के सहयोगी थे।

बिरसा का बचपन एक साधारण आदिवासी किसान की भांति चलखद में बीता। वह भी भेड़ बकरियां चराने लगे किन्तु मां-बाप ने गरीबी के कारण बालक को पांच वर्ष की आयु में ननिहाल भेज दिया। बाद में जब उनकी छोटी मौसी की शादी हो गई तो वह बिरसा को भी अपने साथ ससुराल ले गई जहां वह बकरी चराने लगे।

बिरसा के पास स्लेट या किताब न थी। वह बकरियां चरान के समय जमीन पर अक्षर लिखने में तन्मय हो जाते। बकरियां दूसरे के खेतों में जाकर खड़ी फसल को नुकशान पहुंचातीं और खेत के मालिक बिरसा की पिटाई करते। बिरसा को बांसुरी बजाने का भी बहुत शौक था। एक बार बांसुरी बजाने में इतने लीन हो गए कि उनके मौसा की कई बकरियां खो गई। मौसा ने उनको बुरी तरह पीटा। वह भागकर अपने बड़े भाई के पास कुन्दी गांव में चले गए। बाद में वह बुर्जं के जर्मन मिशन स्कूल में पढ़ने भेजे गए। स्कूल का वातावरण उन्हें पसन्द नहीं था क्योंकि वहां उनके धर्म और संस्कृति पर कीचड़ उछाली जाती जो उनकी बर्दाश्त के बहार था। किन्तु फिर भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे सब कुछ बर्दाश्त करते रहे। बिरसा ने भी स्कूल में पादरियों और उनके धर्म का मजाक उड़ाना शुरु कर दिया। इसलिए ईसाई धर्म प्रचारकों ने 1890 में उन्हें स्कूल से निकाल दिया। इस स्कूल में बिरसा ने मिडिल तक की शिक्षा पाई।

बिरसा के विचारों का विकास 1891 से 1894 के बीच हुआ जब वे स्वामी आनन्द पांडे के सम्पर्क में आए। उन्होंने भक्ति से उनकी सेवा की और उनसे हिन्दू धर्म के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। उन्हें महाभारत के पात्रों की कथा से बड़ी प्रेरणा मिली। इसी बीच एक वैष्णव साधु से प्रभावित होकर वे अहिंसा और जीवों के प्रति दया की बात करने लगे। इस प्रकार उन पर एक प्रभाव ईसाई धर्म प्रचारकों का था, दूसरा समुदाय के उन जागरूक व्यक्तियों का जो प्राचीन मुंडा राज्य के गौरव से प्रेरणा लेकर न्याय पर आधारित भूमि-व्यवस्था के लिए संघर्षशील थे और तीसरा प्रभाव हिन्दू धर्म का था।

1895 में कुछ ऐसी घटनाएं हुई कि बिरसा एक मसीहा बन गए। कहते हैं कि एक दिन जब बिरसा एक मित्र के साथ जंगल में जा रहे थे, उन पर बिजली गिरी और बिरसा के शरीर में समा गई। उनके मित्र ने तत्काल गांव लौटकर घोषणा की कि बिरसा को दिव्य ज्योति मिल गई है। गांव वालों ने बिरसा को भगवान का अवतार मान लिया। उसी समय एक मुंडा मां ने अपने बीमार पुत्र को गोद में लेकर बिरसा के पैर छुए। कुछ समय बाद बच्चा ठीक हो गया। ऐसी घटनाएं और घटीं जिससे लोगों में यह विश्वास फैल गया कि बिरसा के स्पर्श मात्र से रोग दूर हो जाएगा। लेकिन जब गांव में चेचक फैली तो वृद्धजन कहने लगे कि बिरसा के कारण ग्राम देवी रुष्ट हो गई है। बिरसा गांव छोड़कर चले गए किन्तु फिर भी महामारी का प्रकोप कम नहीं हुआ। बिरसा लौटे और उन्होंने अपनी जाति की दिन-रात सेवा कर सबका मन-मोह लिया।

बिरसा की लोकप्रियता बढ़ती गई। वह आंगन में खाट पर बैठ कर बातचीत करते, किन्तु श्रोताओं के बढ़ने पर उनकी सभाएं खेतों में नीम की छाया में होने लगीं। वे छोटे-छोटे दृष्टान्तों से आपने विचारों को बड़े ही सरल ढंग से समझाते। वह पुरानी रूढ़ियों और अंधविश्वासों की आलोचना करते। वह चाहते थे कि शिक्षा का प्रसार हो। लोग केवल एक देवता सिंहबांगा की पूजा करें और समाज की सेवा का व्रत लें। वह लोगों से हिंसा और नशीली वस्तुओं के त्याग का आग्रह करते। बिरसा की इन सभा ओं ने जादू का काम किया और ईसाई धर्म स्वीकार करने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन घटती गई। साथ ही ईसाई मुंडा अपना प्राचीन धर्म फिर से स्वीकार करने लगे।

बिरसा का कार्य धार्मिक आन्दोलन तक ही सीमित न रहा। वह राजनीति की भी बातें करने लगे। उन्होंने किसानों का शोषण करने वाले जमीदारों और दूसरे बिचौलियों के काले कारनामों के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणी दी। बिरसा के इस नए रूप में उभरने का एक कारण और भी था। उनकी लोकप्रियता देखकर वे व्यक्ति भी उनके साथ हो लिए जो मुंडा राज्य की स्थापना के लिए संघर्ष करना चाहते थे। अवतार माने जाने के बाद, जब वह जनता के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले मसीहा बन गए तो सरकार सशंकित हो उठी। अधिकारियों ने चेतावनी दी कि वे भीड़ न जमा किया करें और न असंतोष की भावना फैलाएँ। बिरसा ने कहा कि मैं अपनी जाति को नया धर्म सिखा रहा हूं। सरकार मुझे कैसे रोक सकती है। किन्तु 9 अगस्त 1895 को उन्हें गिरफ्तार करने का प्रयत्न किया गया। गांव वालों ने पुलिस से मुठभेड़ करके उन्हें छुड़ा लिया। 16 अगस्त को बिरसा के अनुयायियों और पुलिस अधिकारियों के बीच फिर झड़प हुई। उत्तेजित जनता ने खबर फैला दी के आगामी 27 अगस्त को जमीनदारों और ईसाइयों के विरूद्ध जिहाद शुरू करना है किन्तु वह दिन नहीं आया। अधिकारियों ने इसके पूर्व ही बिरसा को चलखद में सोते हुए गिरफ्तार कर लिया।

बिरसा को एक डोली में रांची लाया गया। वहां उन पर तथा उनके 15 सहयोगियों पर मुकदमा चलाया गया। अभियुक्तों ने न अपना वकील किया न जिरह ही की। 19 नवम्बर 1895 को बिरसा और उनके कुछ सहयोगियों को दो साल के कठिन कारावास की सजा दी गई। उन्हें हजाराबाग जेल में रखा गया। उन्हें 30 नवम्बर 1897 को यह चेतावनी देकर छोड़ा गया कि वे कोई प्रचार-कार्य नहीं करेंगे।

बिरसा की रिहाई के कुछ ही समय बाद, उनके अनुयायियों ने चलखद में सभा की और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संगठन बनाने का निश्चय किया। बस, आन्दोलन के लिए जोरशोर से तैयारियां होने लगीं। अनुयायियों को दो दलों में बांटा गया। एक दल को नए मुंडा धर्म के प्रचार का कार्य सौंपा गया और दूसरे को राजनीति के लिए तैयार किया गया। तीसरे, नये रंगरूट थे। प्राचीन मुंडा राज्य के ऐतिहासिक स्थलों और मंदिरों के दर्शनों की योजना बनाई गई जिससे समूची जाति का स्वाभिमान जागे। ऐसे अवसरों पर सामूहिक भोज और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते। चुटिया के प्राचीन मंदिर पर जनवरी 1898 को ऐसे ही कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह में बिरसा स्वयं उपस्थित थे। पुलिस दल आने की सूचना पाकर बिरसा अपने कुछ सहयोगियों के साथ भाग खड़े हुए।

बिरसा को गिरफ्तार करने के लिए वारंट जारी किया गया और इनाम की घोषणा की गई। किन्तु बिरसा अधिकारियों के चंगुल में नहीं आए। मुंडा आदिवासियों में विद्रोह की भावना बल पकड़ रही थी और बिरसा उन्हें संघर्ष, के लिए तैयार कर रहे थे। बिरसा ने चलखद छोड़कर डुम्बरी में अपना कार्यालय बनाया। डुम्बरी का चुनाव सामरिक दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। यह मुंडा क्षेत्र के बिलकुल ही मध्य में है और चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा है।

फरवरी 1898 में डुम्बरा में मुंडा क्षेत्र के प्रतिनिधियों की सभा हुई। होली के पर्व पर निकटवर्ती पहाड़ी पर एक और सभा हुई जिसमें ब्रिटिश सरकार व ब्रिटिश साम्राज्ञी के पुतले जलाए गए। कहते हैं कि लगभग 16 सभाएं की गईं और बड़े दिन के अवसर पर जमादारों, ठेकेदारों और पादरियों की हत्याओं की योजना बनाई गई।

1899 का आन्दोलन 1895 के मुकाबले बिलकुल ही भिन्न था। 1895 का आन्दोलन मुख्यत: अहिंसात्मक था और मुंडाभूमि पर अपने प्राचीन अधिकारों की मांग के लिए संघर्ष कर रहे थे। 1899 में हिंसा का मार्ग अपनाया गया। यूरोपियों, अधिकारियों और पादरियों को हटाकर उनके स्थान पर बिरसा के नेतृत्व में नए राज्य की स्थापना का निश्चय किया गया।

मुंडा जाति का अन्तिम विद्रोह बड़े दिन की पूर्व संध्या-24 दिसम्बर, 1899 को योजनानुसार प्रारम्भ हुआ। सिंहभूमि जिले के चक्रधरपुर और रांची जिले के खूंटी, कर्रा, तोरपा, तसार और बसिया के पुलिस थानों पर तीरों से हमले किए गए और उनमें आग लगा दी गई। सबसे बड़ा हमला खूंटी थाने पर किया गया। ईसाई पादरियों के क्षेत्रों पर भी हमले हुए। अधिकारियों ने मुकाबले के लिए सेना भेजी। 26 दिसम्बर से 5 जनवरी1900 तक छिटपुट हमले होते रहे। 7जनवरी से सेना से सीधी मुठभेड़ हुई। सर्वप्रथम खूंटी पुलिस थाने पर धावा बोला गया। 9 जनवरी को सैल रकाब पहाड़ी पर जबरदस्त मुठभेड़ हुई। सेना ने पहाड़ी को घेर लिया था। एक तरफ से पत्थर और तीर फेंके जा रहे थे और दूसरी तरफ से गोलियां चल रही थीं। विद्रोही हार गए। इस मुठभेड़ में कितने लोग मारे गए, इसके सही आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। इस मुठभेड़ ने आन्दोलन की कमर तोड़ दी और विद्रोह कुचल दिया गया। चारों ओर घरपकड़ शुरू हो गई और आतंक, दमन तथा अत्याचार का राज्य छा गया।

दो प्रमुख मुंडा सरदारों द्वारा अपने 32 अन्य साथियों के साथ 28 जनवरी को आत्मसमर्पण कर दिए जाने के बाद रांची जिले में आन्दोलन समाप्त हो गया। सेना वापस बुला ली गई। बिरसा अपने को बचाने के लिए मारे-मारे घूमते रहे। उनके पीछे अधिकारी भी थे और इनाम पाने के लालच में उनके अपनी जाति के लोग भी। आखिर उनकी ही जाति के दो व्यक्तियों ने इनाम के लालच में तीन फरवरी को उन्हें एक जंगल में पकड़वा दिया।

बिरसा की गिरफ्तारी के तीन महीने बाद ही जेल में उनका स्वास्थ्य खराब हो गया। पहली जून को बताया गया कि उनको हैजा हो गया है। 9 जून को प्रात: 9 बजे उनकी मृत्यु हो गई। उनके शव की परीक्षा के बाद जेल के मेहतर ने गोबर के कन्डों से उनका अन्तिम संस्कार किया। कहते हैं कि किसी ने उन्हें विष देकर मार डाला था।

बिरसा के आन्दोलन को कुचलने के लिए उनके अनुयाइयों पर मुकदमे चलाए गए। अभियुक्तों को अपनी रक्षा का मौका भी नहीं मिला। रांची और सिंहभूमि में 482 अभियुक्तों में से केवल 98 को सजा दी गई। कुल मिलाकर 3 व्यक्तियों को फांसी, 44 को आजीवन कारावास, 10 को 10 वर्ष का कठिन कारावास, 8 को सात वर्ष, 23 को पांच वर्ष और 6 को तीन वर्ष की सजा दी गई।

बिरसा और उनके आन्दोलन को किसी भी हालत में सफलता नहीं मिल सकती थी क्योंकि भारत जैसे विशाल देश की विदेश सरकार एक प्रान्त के एक छोटे से क्षेत्र के विद्रोह को कैसे बरदाश्त कर सकती थी? लेकिन फिर भी इस आन्दोलन ने यह स्पष्ट कर दिया था कि मुंडा जाति के विद्रोह के बाद दबी नहीं बल्कि शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने की भावना और गहरी होती गई। बिरसा का आन्दोलन लगभग एक महीने चला और साठ वर्ग मील क्षेत्र में फैल गया।

बिरसा के आन्दोलन को पूरी तरह असफल भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसके फलस्वरूप मुंडा क्षेत्र की भूमि - समस्या सार्वजनिक महत्व का प्रश्न बन गई। सेंट्रल लेजिस्लेटिव कौंसिल और समाचार पत्रों में चर्चाएँ हुईं और तत्कालीन ब्रिटिश सरकार को मजबूर होकर भूमि समस्या के सुधार के लिए कदम उठाने पड़े।

बिरसा का पार्थिव शरीर तो नहीं रहा, किन्तु वे अपनी कीर्ति, अपनी जाति के साहित्य और गीतों तथा अपने अनुयाइयों के दिलों में आज भी जीवित हैं।

शब्दार्थ-टिप्पण

कीर्ति यश, **फल** परिणाम, **कारावास** जेल, **आह्वान** बुलाना, **गूँजना** प्रतिध्वनि होना, **साम्राज्ञी** महारानी, **मुकाबला** आमना-सामना, विरोध, **अवतार** किसी देवता का लौकिक शरीर धारण करना, **पादरी** ईसाई धर्म का पुरोहित, **जिरह** ऐसी पूछताछ जो किसी से उसकी कही हुई बातों की सत्यता की जाँच के लिए की जाय, **पार्थिव** जो पृथ्वी से संबंधित हो

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) किसके प्रयत्नों से आदिवासियों ने ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया?
(2) बिरसा मुंडा किस नाम से पुकारे जाते थे?
(3) बिरसा के पिता ने कौन-सा धर्म स्वीकार कर लिया था?
(4) उसे कौन-सा वाद्य बजाने का शौक था?
(5) बिरसा अपने बड़े भाई के पास कुन्दी गाँव क्यों चले गये थे?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) बिरसा का जन्म कब और कहाँ माना जाता है?
(2) बालक बिरसा को स्कूल से क्यों निकाल दिया गया था?
(3) उन्हें स्कूल का वातावरण क्यों पसंद न था?
(4) सरकार ने पहलीबार बिरसा मुंडा को क्यों गिरफ्तार किया?
(5) ब्रिटिश सरकार ने उन्हें किस शर्त पर कारावास से मुक्त किया?

3. विस्तारपूर्वक उत्तर लिखिए :

(1) 'बिरसा मुंडा आदिवासियों के मसीहा थे।' स्पष्ट कीजिए।
(2) '1899 का आन्दोलन 1895 के आन्दोलन से भिन्न था' स्पष्ट कीजिए।
(3) बिरसा मुंडा की मृत्यु कब और कैसे हुई?

4. सही विकल्प चुनकर एक एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) बिरसा मुंडा को किस ग्रन्थ के पात्रों से प्रेरणा मिली ?

(A) रामचरितमानस (B) महाभारत (C)गीता (D) बाइबल

(2) किसके नेतृत्व में राज्य की स्थापना का निश्चय किया गया ?

(A) यूरोपियों (B) अधिकारियों (C) पादरियों (D) बिरसा मुंडा

(3) किस त्योहार पर ब्रिटिश सरकार तथा ब्रिटिस साम्राज्ञी के पुतले जलाए गए ?

(A) होली (B) दीपावली (C) ईद (D) मकरसंक्रांति

(4) ब्रिटिश सरकार ने बिरसा की मृत्यु का क्या कारण बताया ?

(A) चेचक (B) हैजा (C) मलेरिया (D) केन्सर

(5) बिरसा मुंडा की मृत्यु कहाँ पर हुई ?

(A) जंगल में (B) कोर्ट में (C) चर्च में (D) जेल में

5. समानार्थी शब्द लिखिए :

पहाड़, अंतिम, कीर्ति, जंगल, विकास, रुष्ट, त्याग, विश्वास, आतंक, प्रकोप, स्पर्श, महामारी

6. विलोम शब्द लिखिए :

ज्ञान, न्याय, सफल, अमर, आज, जन्म, जीवन, स्पष्ट

7. मूल शब्द तथा प्रत्यय अलग करके लिखिए :

धार्मिक, ऐतिहासिक, सामूहिक, सांस्कृतिक, सार्वजनिक

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- प्रस्तुत पाठ का नाट्य रूपांतर कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'जय जवान, जय किसान' कल्पना का विस्तार कीजिए।
- क्रांतिकारी वीर चंद्रशेखर आजाद की जीवनी पढ़िए।

25 सन्नाटा

भवानीप्रसाद मिश्र

(जन्म: सन् 1914 ई.; निधन: सन् 1985 ई.)

भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के टिगरिया गाँव में हुआ था। उन्होंने बी.ए. जबलपुर से किया। बाद में संस्कृत, उर्दू , मराठी, बंगला, और फारसी का अध्ययन स्वतंत्र रूप से किया। गांधीजी के आह्वान पर इन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और करीब ढाई वर्ष तक जेल में रहे। वर्धा के महिलाश्रम तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में काम करने के बाद आपने 'कल्पना मासिक पत्रिका का' सम्पादन किया। अध्यापन , सम्पादन और आकाशवाणी उनके कार्यक्षेत्र रहे हैं। गांधी विचारधारा का उन पर पर्याप्त प्रभाव था। मिश्रजी 'सम्पूर्ण गांधी साहित्य' के सम्पादक मंडल के सदस्य रहे हैं। आपने व्यक्ति, समाज , देश की परिस्थितियों का आकलन भावनात्मक स्तर पर किया।

'गीत फरोश', 'चकित है दुख','अंधेरी कविताएँ ','गांधीपंचशती', 'बुनी हुई रस्सी','खूशबू के शिलालेख', 'त्रिकाल संध्या' आदि उनके प्रमुख -काव्य संग्रह हैं। उनकी कविता में प्रकृति के अनेक सुंदर चित्र अंकित हैं। उनकी भाषा में सादगी और ताजगी का अद्‌भुत समन्वय है। उन्हें 'बुनी हुई रस्सी' के लिए 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार प्राप्त हुआ था। अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'दूसरा सप्तक' में इनकी रचनाओं का प्रकाशन हुआ था।

प्रस्तुत कविता में कवि श्री भवानीप्रसाद मिश्रजी ने सूने पड़े खंडहर के सन्नाटे का बड़ा ही सटीक चित्र प्रस्तुत किया है। ऐसे खंडहरों का इतिहास नहीं मिलता है। दन्तकथाओं के आधार पर इनकी कहानियाँ चलती रहती हैं। इस कविता में कवि बड़ी ही सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा में खंडहर के डरावने सन्नाटे और उससे जुड़ी दन्तकथा को आत्मकथनात्मक शैली में व्यक्त किया है।

तो पहले अपना नाम बता दूँ तुमको,
फिर चुपके-चुपके धाम बता दूँ तुमको ;
तुम चौंक नहीं पड़ना, यदि धीमे धीमे
मैं अपना कोई काम बता दूँ तुमको।

कुच लोग भ्रांतिवश मुझे शांति कहते हैं,
निस्तब्ध बताते हैं, कुछ चुप रहते हैं ;
मैं शांत नहीं निस्तब्ध नहीं, फिर क्या हूँ
मैं मौन नहीं हूँ , मुझमें स्वर बहते हैं।

कभी-कभी कुछ मुझमें चल जाता है,
कभी-कभी कुछ मुझमें जल जाता है ;
जो चलता है, वह शायद है मेंढक हो
वह जुगनू है, जो तुमको छल जाता है।

मैं सन्नाटा हूँ , फिर भी बोल रहा हूँ ,
मैं शांत बहुत हूँ , फिर भी डोल रहा हूँ ;
यह 'सर्-सर्' यह 'खड़्-खड़्' सब मेरी हैं,
है यह रहस्य मैं इसको खोल रहा हूँ ।

मैं सूने में रहता हूँ , ऐसा सूना,
जहाँ घास उगा रहता है ऊना ;
और झाड़ कुछ इमली के, पीपल के,
अँधकार जिनसे होता है दूना।

तुम देख रहे हो मुझको, जहाँ खड़ा हूँ ,
तुम देख रहे हो मुझको जहाँ पड़ा हूँ ,
मैं ऐसे ही खंड़हर चुनता फिरता हूँ ,
मैं ऐसी ही जगहों में पला, बढ़ा हूँ ।

हाँ, यहाँ किले की दीवारों के ऊपर,
नीचे तलघर में या समतल पर भू पर
कुछ जन-श्रुतियों का पहरा यहाँ लगा है,
जो मुझे भयानक कर देती हैं छू कर।

तुम डरो नहीं, डर वैसे कहाँ नहीं है,
पर खास बात डर की कुछ यहाँ नहीं है,
बस एक बात है, वह केवल ऐसी कि,
कुछ लोग यहाँ थे, अब वे यहाँ नहीं है।

यहाँ बहुत दिन हुए एक थी रानी,
इतिहास बताता उसकी नहीं कहानी,
वह किसी एक पागल पर जान दिये थी,
थी उसकी केवल एक यही नादानी।

यह घाट नदी का, अब जो टूट गया है,
यह घाट नदी का, अब जो फूट गया है,
वह यहाँ बैठकर रोज-रोज गाता था,
अब यहाँ बैठना उसका छूट गया है।

शाम हुए रानी खिड़की पर आती,
थी पागल के गीतों को वह दुहराती;
तब पागल आता और बजाता बंसी,
रानी उसकी बंसी पर छुप कर गाती।

किसी एक दिन राजा ने यह देखा,
खिंच गयी हृदय पर उसके दुख की रेखा ;
वह भरा क्रोध में आया और रानी से,
उसने माँगा इन सब साँझों का लेखा।

रानी बोली पागल को जरा बुला दो,
मैं पागल हूँ , राजा, तुम मुझे भुला दो ;
मैं बहुत दिनों से जाग रही हूँ राजा,
बंसी बजवा कर मुझको जरा सुला दो।

वह राजा था हाँ, कोई खेल नहीं था,
ऐसे जवाब से उनका मेल नहीं था ;
रानी ऐसे बोली थी, जैसे उसके,
इस बड़े किले में कोई जेल नहीं था।

तुम जहाँ खड़े हो, यहीं कभी सूली थी,
रानी की कोमल देह यहीं झूली थी ;
हाँ, पागल की भी यहीं , यहीं रानी की,
राजा हँस कर बोला, रानी भूली थी।

किन्तु नहीं फिर राजा ने सुख जाना,
हर जगह गूँजता था पागल का गाना ;
बीच-बीच में, राजा तुम भूले थे,
रानी का हँसकर सुन पड़ता था ताना।

तब और बरस बीते, राजा भी बीते,
रह गये किले के कमरे-कमरे रीते ;
तब मैं आया, कुछ मेरे साथी आये,
अब हमसब मिलकर करते हैं मनचीते।

पर कभी-कभी वह पागल आ जाता है,
लाता है रानी को, या गा जाता है ;
तब मेरे उल्लू, साँप और गिरगिट पर,
अनजान एक सकता-सा छा जाता है।

शब्दार्थ-टिप्पण

धाम निवास, घर **निस्तब्ध** निश्चेष्ट, गतिहीन **ऊना** न्यून, छोटा, घटिया **तलघर** तहखाना **जनश्रुति** अफवाह **खास** विशिष्ट **नादानी** ना समझी, मूर्खता **घाट** नदी पट का स्थान **लेखा** हिसाब **सूली** लोहेका नुकीला छड़ हलाकर प्राणदण्ड देने का एक प्रकार **ताना** व्यंग पूर्ण चुटीली बात **रीता** खाली, रिक्त

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कुछ लोग सन्नाटे को भ्रांतिवश क्या कहते हैं ?
(2) सन्नाटे में कभी-कभी किसकी रोशनी दिख जाती है ?
(3) सन्नाटा कहाँ पलता-बढ़ता है ?
(4) रानी किस पर दिवानी थी ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) सन्नाटा अपना रहस्य किस प्रकार बताता है ?
(2) सन्नाटे की भयानकता कैसे बढ़ती है ?
(3) राजा ने रानी से साँझों का हिसाब क्यों माँगा ?
(4) राजा ने रानी और पागल को मौत की सजा क्यों दी ?
(5) अब महल के कमरों में कौन रहते थे ?

3. विस्तार से प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) राजा के प्रत्युत्तर का क्या परिणाम आया ?
(2) सन्नाटे की भयंकरता का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए ?

(3) रानी और पागल की कहानी अपने शब्दों में लिखिए?

(4) 'सन्नाटा' काव्य का भाव विस्तार से समझाइये।

4. काव्य पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) मैं शांत नहीं निस्तब्ध नहीं, फिर क्या हूँ
मैं मौन नहीं हूँ , मुझमें स्वर बहते हैं।

(2) कुछ जन-श्रुतियों का पहरा यहाँ लगा है,
जो मुझे भयानक कर देती हैं छू कर।

5. सही विकल्प चुनकर एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) सन्नाटे में कौन चलता है?

(A) साँप (B) बिच्छू (C) मेढक (D) भूत

(2) रानी किस पर जान देती थी?

(A) राजा (B) नौकर (C) पागल (D) सैनिक

(3) रानी खिड़की पर क्यों आती थी?

(A) हवा खाने (B) गाना सुनने (C) राजा को देखने (D) प्रकृति शोभा देखने

(4) राजा ने किससे साँझों का लेखा माँगा?

(A) रानी से (B) दासी से (C) पागल से (D) सैनिक से

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

राजा, धाम, नदी, देह

7. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(A) शांत (B) मौन (C) अंधकार (D) जागना

8. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

सन्नाटा छा जाना

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- सन्नाटा पर निबंध लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- " श्री भवानीप्रसाद मिश्र " का साहित्यिक परिचय करायें।
- श्री भवानीप्रसाद मिश्रजी के अन्य काव्यों का संकलन करवायें।

26 सिद्धार्थ का गृहत्याग

नरेश मेहता

(जन्म: सन् 1922)

आधुनिक भारतीय साहित्य के शीर्षस्थ कवि, कथाकार एवं विचारक श्री नरेश मेहता का जन्म मध्यप्रदेश के शाजापुर में हुआ था। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, से हिन्दी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। कुछ वर्षों तक ऑल इंडिया रेडियो में सेवाएँ दीं। मूलत: कवि होने पर भी गद्य के क्षेत्र में उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनकी प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं 'डूबते मस्तूल' तथा 'यह पथ बंधु' था (उपन्यास) उन्होंने एकांकी भी लिखे है। वे 'भारत-भारती, सम्मान' 'साहित्य अकादमी सम्मान' तथा 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित हैं।

प्रस्तुत एकांकी में युवराज सिद्धार्थ की मनोदशा का चित्रण है। राजमार्ग से जाती हुई अर्थी युवराज सिद्धार्थ को जीवन और सुख की क्षणभंगुरता का बोध करा जाती है। शरीर की नश्वरता के साथ ही सारे संबध और सुख वैभव समाप्त हो जाते हैं। युवराज सिद्धार्थ इस नश्वरता पर विजय पाने हेतु महासत्ता की खोज में निर्वाण की अनन्त यात्रा पर निकल पड़ते हैं। उनके महाभिनिष्क्रमण की यह गाथा करुणा और विश्वसत्य के खोज की कथा है।

पात्र

सिद्धार्थ	: कपिलवस्तु के युवराज
सुद्योधन	: सिद्धार्थ के पिता
महामाया	: सिद्धार्थ की माता
यशोधरा	: सिद्धार्थ की पत्नी
छंदक	: सारथी
मंत्री	: राजा का मंत्री

प्रथम दृश्य

(युवराज सिद्धार्थ राजमंदिर के अपने प्रकोष्ठ में किसी चिंता में डूबे हुए खिड़की से दूर देख रहे हैं। बाहर वासंती हवा बह रही है। युवराज अत्यंत सुंदर युवक हैं। संध्या का समय है। तभी उनकी पत्नी यशोघरा प्रवेश करती है।)

यशोघरा : आर्यपुत्र, आप तैयार हो गए?

सिद्धार्थ : (चौंकते हुए) क्या?

यशोघरा : किस विचार में थे? आपको स्मरण नहीं कि वाटिका की बात थी।

सिद्धार्थ : हाँ।

यशोधरा : वसंतोत्सव का आयोजन जो किया गया है। चलिए।

सिद्धार्थ : यशोघरा, मैं नहीं चल पाऊँगा।

यशोधरा : क्या आर्यपुत्र अस्वस्थ हैं? (सिद्धार्थ के निकट खड़ी हो जाती है।)

सिद्धार्थ : अस्वस्थ हूं, देवी, किंतु किसी रोग के कारण नहीं, पर....

यशोधरा : फिर वही महाराज, आप विचोरों को नहीं छोड़ सकते?

सिद्धार्थ : नहीं यशोधरा, पहले मैं विचारों को घेरा करता ता, किंतु अब विचार मुझे घेरते हैं। जानती हो, अभी उत्सव में चलने की तैयारी कर रहा था, तभी राजमार्ग से किसी की अर्थी गई। जीवनदायी वसंत में भी एक, व्यक्ति मर गया। मृत्यु से क्या मुक्ति नहीं मिल सकती, यशोधरा?

यशोधरा : महाराज, जैसे जीवन धर्म है, वैसे ही मृत्यु भी धर्म है। जीवन है, इसलिए मृत्यु भी है।

सिद्धार्थ : यों कहो कि शरीर है, इसलिए रोग है, बुढ़ापा है, मृत्यु है--जीवन भर दुख ही दुख: किंतु यशोधरा, यह तो मुझे स्वीकार नहीं। एक दिन इस तन और जीवन को रोग के कीटाणु, मृत्यु की लपटें , निरर्थक ही समाप्त कर देंगी। नहीं यशोधरा, सो नहीं होने का। मनुष्य कठपुतली नहीं। इस क्रम नियम से परे क्या है?

यशोधरा : प्रभु, इतना अधिक नहीं सोचना चाहिए।

सिद्धार्थ : क्योंकि सोचने से सृष्टि के विषय में नियमों के बारे में, क्रम के संबंध में जिज्ञासा पैदा होती है और वह जिज्ञासा ही हमारे मन में निर्णय उत्पन्न करती है.....

यशोधरा : कैसा निर्णय आर्यपुत्र ?

सिद्धार्थ : (हंसते हुए) अभी निर्णय का समय नहीं आया देवि ? चिंता न करो। चलो, आज तो वसंतोत्सव है। क्षण को सत्य सिद्ध करना चाहिए। सब कुछ कर्तव्य है यहाँ यशोधरा।

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

(कुछ समय बाद, सबेरे की बेला है। मंगलवाद्य बज रहे हैं। स्त्रियां मंगलाचरण गा रही हैं। युवराज सिद्धार्थ अन्यमनस्क से कक्ष में टहल रहे हैं। युवराज की माता महामाया प्रवेश करती हैं। मंत्री आदि आते हैं।)

महामाया : शाक्यवंश में नया कुलदीपक जन्मा है, सिद्धार्थ।

मंत्री : कपिलवस्तु का भावी सम्राट, बधाई स्वीकारें युवराज।

(मंत्री आदि प्रणाम में झुकते हैं। सिद्धार्थ उन्हें देखते हैं और फिर खिड़की के पास खड़े-खड़े कहीं खो जाते हैं।)

महामाया : बेटा, किस चिंता में डूब गए ? यह सोचना तो और दिन कर लोगे, आज के इस शुभ दिन तो रहने दो। चलो, महाराज, राजपंडित आदि शांतिपूजन के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं।

(सबका प्रस्थान। अकेले सिद्धार्थ ही रह जाते हैं।)

सिद्धार्थ : (स्वागत) एक नया कुलदीपक ! कपिलवस्तु का भावी सम्राट (किंचित उपेक्षा की हंसी के साथ)एक नया जन्म, जो कि रोगग्रस्त होगा, वृद्ध होगा और फिर एक दिन मृत्यु.....इस जन्म, रोग, वृद्धावस्था एवं मृत्यु के क्रम में फंसे रहने को जीवन कहते हैं। आज जन्म की प्रसन्नता है तो कल यही संबंधी उसके चले जाने पर उसे बहा देंगे। सारे संबंध इस देह के हैं। देह तो मरने वाली है। इसीलिये ये संबंध भी मरने वाले हैं और जो वस्तु मरने वाली है, उससे प्रेम या मोह कैसा ? न कोई पुत्र है, न पिता। न पति है, न पत्नी। सब विभिन्न देह हैं जो अपनी भोग भोगती हैं ? इससे छुटकारा पाए बिना सब व्यर्थ है।

(तभी महाराज शुद्धोधन पधारते हैं।)

सिद्धार्थ : (पिता को देखकर प्रणाम करते हुए)प्रणाम स्वीकार करें।

शुद्योधन : आयुष्यमान भव ! चलो सिद्धार्थ, आज का-सा मंगल दिन नित नहीं आता।

सिद्धार्थ : महाराज मुझे तो चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा दिखता है।

शुद्योधन : अधिक विचार करने से सिद्धार्थ मन में केवल प्रश्नि ही घिरते हैं।

सिद्धार्थ : किंतु, महाराज, जब अंग शिथिल हो जाएंगे, तब इन प्रश्नों से युद्ध करने की शक्ति ही कहाँ रहेगी ?

शुद्योधन : युवराज, तुम क्या कहना चाहते हो ?

सिद्धार्थ : कुछ नहीं, महाराज देखता हूँ, इस पुत्रजन्म के कारण मैं पितृऋण से मुक्त हुआ। शेष दो ऋणों से मुक्त होना ही पड़ेगा। (सहसा भाव बदल कर) चलिए, महाराज पाठ-पूजन की प्रतीक्षा हो रही होगी।

(दोनों का प्रस्थान पटाक्षेप।)

तृतीय दृश्य

(यशोधरा कक्ष में अपने पुत्र राहुल के साथ लेटी हुई है। कक्ष में स्वर्ण दीप जल रहा है। कमरे का दरवाजा हलके से खुलता है।)

यशोधरा : (चौंकते हुए)कौन ?

सिद्धार्थ : क्यों चौंक गई, यशोधरा ?

यशोधरा : (उठने की चेष्टा के साथ)प्रणाम आर्यपुत्र, अभी सोए नहीं ?

सिद्धार्थ : नहीं तो, आज तक सोया ही तो था। अब तो जागने की बेला आ गई यशोधरा।

यशोधरा : (बात न समझते हुए) क्या भिनसार हो गई ?

सिद्धार्थ : शायद हो जाए। हाँ, तुम क्यों नहीं सोयी ?

यशोधरा : राहुल अभी-अभी तो सोया है।

सिद्धार्थ : तो तुम भी सो जाओ, यशोधरे ! मैं चलूं।

यशोधरा : बैठिए।

सिद्धार्थ : जागने के बाद बैठा नहीं जाता है यशोधरा , बल्कि चला जाता है।

यशोधरा : यह आज आप कैसी बातें कर रहे हैं, कुशंकाओं से मेरा मन घबरा रहा है।

सिद्धार्थ : यह तुम्हारा मोह है। अच्छा तो जाऊँ न?

यशोधरा : जैसी आर्यपुत्र की इच्छा। (सो जाती है।)

सिद्धार्थ : (स्वत:)मैं तो जगाना चाहता हूं और तुम सोना चाहती हो। अच्छा यही सही। अकेले तुम्हीं नहीं बल्कि शेष को भी जगा सकूं इस रहस्य की प्राप्ति के लिए जाता हूं। विदा!

(सिद्धार्थ जाते हैं । पटाक्षेप)

चतुर्थ दृश्य

(भोर बेला। सूर्योदय हो रहा है। नदी तट पर सिध्धार्थ अपने विश्वस्त सेवक छंदक के साथ खड़े हैं।)

सिद्धार्थ : छंदक, यह नदी ही कपिलवस्तु राज्य की सीमा है न?

छंदक : हां, प्रभु !

सिद्धार्थ : तो मैं इस भूमि पर युवराज नहीं हूं न, छंदक?

छंदक : यदि यह भूमि आपको युवराज न माने तो मेरी कृपाण.....

सिद्धार्थ : (हँसते हुए)छंदक, इस मातृभूमि के लिए न कोई सम्राट है, न सेवक। अच्छा थोडा विश्राम करें।

छंदक : प्रभु, हम कपिलवस्तु से बीस योजन दूर हैं। लौटने में देर हो जाएगी। इस बेला तक तो आप रोज लौट जाते थे और जैसे-जैसे देर होगी, वैसे-वैसे महाराज को चिंता होगी।

सिद्धार्थ : तो छंदक सुनो.....मैं अब लौटूंगा नहीं।

छंदक : क्यों महाराज? क्या आप.....

सिद्धार्थ : हाँ छंदक, इस देश के जन्म, रोग, वृद्धावस्था और मृत्यु से निवृत्ति का उपाय खोजने के लिए मैं अब लौटूंगा नहीं।

छंदक : यह सब आप क्या कह रहे हैं, स्वामी?

सिद्धार्थ : मैं इस चक्र को, गति को नहीं स्वीकारता। इन नियमों से मुक्ति चाहता हूँ और इसलिए, छंदक, तुम अब लौट जाओगे।

छंदक : (सिद्धार्थ के चरणों में गिरकर रोते हुए)पर प्रभु, आपके बिना महाराज.....राजमाता.....

सिद्धार्थ : मैं आज से तुम्हारा प्रभु नहीं। मेरा किसी से कोई संबंध नहीं। मैं तो बस पथ का एक भिखारी हूँ, छंदक। (सिद्धार्थ अपने एक-एक वस्त्र उतारकर छंदक को देते हैं। छंदक रोता है। देखते-देखते सिद्धार्थ के तन पर राजपरिवार का एक भी वस्त्र शेष नहीं रहता।)

सिद्धार्थ : मैं भिक्षुक हूँ, तुम्हीं से पहली भिक्षा मांगता हूँ।

छंदक : (सिद्धार्थ के चरणों में फूट -फूटकर रो पड़ता है।)यह क्या कह रहे हैं, महाराज !

सिद्धार्थ : मझे महाराज न कहो, छंदक। सिद्धार्थ कहो। बोलों, मुझे भीख दोगे?

छंदक : सेवक को आज्ञा करें देव!

सिद्धार्थ : छंदक, मनुष्यों की भाषा बोलो। यदि तुम मुझे भीख नहीं दोगे, तो तुमहारे राजा का यह अंतिम वस्त्र भी फेंककर मुझे दिगंबर हो जाना होगा यहां से।

छंदक : (डर जाता है।)आज्ञा करें।

सिद्धार्थ : अपना यह सादा उपवस्त्र मुझे दे दो।
(छंदक अपना उपवस्त्रदेता है।)

सिद्धार्थ : और नदी से जल लाकर मेरे ये राजसी केश काट दो।

छंदक : प्रभु! यह नहीं होने का कभी....

सिद्धार्थ : जैसी तुम्हारी इच्छा, छंदक किंतु तुम्हारे अस्वीकारने के बाद भी ये कटेगें अवश्य ही। फिर क्यों नहीं तुम्हीं काट देते?
(छंदक रोते हुए जल लेने जाता है। लौटता है और देखते-देखते सिद्धार्थ के केश कटकर धरती पर गिर जाते हैं।)

सिद्धार्थ : (अत्यंत प्रसन्न होकर)जाओ छंदक, तुम्हारा कल्याण हो। तुम वास्तव में मेरे विश्वासपात्र रहे। परिवार को सांत्वना देना और कहना कि यदि सिद्धार्थ अपने पथ में सिद्ध हुआ तो कभी लौटेगा। अब जाओ।

छंदक : प्रभु, लौट चलिए।

सिद्धार्थ : जाओ छंदक, देर न करो। अब जाओ।

(सिद्धार्थ एक बार अपने घोड़े को प्यार करते हैं। देखते-देखते छंदक रोते हुए दोनों घोड़ों को लेकर नदी पार करके अदृश्य हो जाता है।)

सिद्धार्थ : (स्वत:) सिद्धार्थ! उठो और आगे बढ़ो। चारों दिशाएँ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं। चलो और निर्वाण का पथ जब तक न मिले, चलते चलो चलो.....

(पटाक्षेप)

शब्दार्थ-टिप्पण

अन्यमनस्क अनमना **कृपाण** कटारी, छोटी तलवार **दिगंबर** निर्वस्त्र **निर्वाण** परमगति, मोक्ष **प्रकोष्ठ** बड़ा कमरा **भिनसार** सबेरा **राजसी** राजा के योग्य, कीमती, बहुमूल्य **वाटिका** उद्यान, बगीचा

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) रोग और मृत्यु क्यों हैं?

(2) सिद्धार्थ के मतानुसार जीवन क्या है?

(3) हमारे संबंध मरनेवाले क्यों हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) सिद्धार्थकी अस्ववस्था का क्या कारण था?

(2) जन्म और जीवन के संबंध में सिद्धार्थ के क्या विचार थे?

(3) राजसी केश काटने से इन्कार कर देने पर सिद्धार्थ ने छंदक से क्या कहा?

3. सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) सिद्धार्थ ने गृह का त्याग क्यों किया?

(2) यशोधरा कौन थी? उन्होंने सिद्धार्थ से किस उत्सव में जाने की बात की? क्यों?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) जो वस्तु मरनेवाली है, उससे प्रेम या मोह कैसा!

(2) पहले मैं विचारों को घेरा करता था किंतु अब विचार मुझे घेरते हैं।

(3) मैं इस चक्र को, गति को नहीं स्वीकारता इन नियमों से मुक्ति चाहता हूं।

5. संधि-विग्रह कीजिए :

अत्यंत, वसंतोत्सव, वृद्धावस्था, समरांगण, सूर्योदय

6. विग्रह करके समास भेद बताइए :

मंगलवाद्य, युवराज, रोगग्रस्त, राजपंडित, पाठ-पूजन

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रामायण के आदर्श पात्रों का एक पात्रीय अभिनय कक्षा में कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- महाभिनिष्क्रमण अर्थात क्या? सिद्धार्थका गृहत्याग पाठ के आधार पर बच्चों को समझाइए।

•

27 नीलकंठ मोर

महादेवी वर्मा

(जन्म:सन 1907 ई.; मृत्यु : सन 1987 ई.)

महादेवी वर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था। उन्होंने प्रयाग विश्विविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। वे कई वर्षों तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की आचार्या रहीं। वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की मनोनीत सदस्या भी रहीं। भारत सरकार ने उन्हें पद्मविभूषण की उपाधि से सम्मानित किया।

कवयित्री के रूप में उनके काव्य में वेदना और करुंणा के स्वर प्रधान हैं तो गद्य लेखिका के रूप में उन्होंने अपने समय के पीड़ित, व्यथित लोगों एवं जीवों की वेदना को वाणी दी। जीवों के प्रति उनकी संवेदना और करुणा यथार्थ के धरातल पर अवस्थित हैं जो उनके संस्मरणों एवं रेखाचित्रों में दिखाई देती हैं. 'नीहार,' 'रश्मि,' 'सांध्यगीत,' 'दीपशिखा,' तथा 'यामा' इनके प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ तथा स्मृति की रेखाएँ , 'श्रृंखला का कडियाँ,' और 'अतीत के चलचित्र' आदि उनकी प्रमुख गद्य रचनाएँ है। 'यामा' पर उन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ था।

प्रस्तुत रचना नीलकंठ मोर के माध्यम से लिखिका ने अपने समकालीन जीवन की विसंगतियों के नेपथ्य में पशु-पक्षियों की प्रकृति का अत्यंत सजीव चित्रण किया है। कृष्ण-राधा-कुब्जा के मिचक का सांकेतिक चित्र नीलकंठ-कुब्जा के व्यवहार में परिलक्षित होता है। पक्षी स्वभाव का मानवीकरण भी इस रचना की विशेषता है।

प्रयाग जैसे शान्त और सांस्कृतिक आश्रम-नगर में नखासकोना एक विचित्र स्थिति रखता है। जितने दंगे-फसाद और छूरे-चाकूबाजी की घटनाएँ घटित होती हैं, सबका अशुभारम्भ प्राय: नखासकोने से ही होता है।

उसकी कुछ और भी अनोखी विशेषताएँ हैं। घास काटने की मशीन के बड़े चौड़े चाकू से लेकर फरसा , कुल्हाड़ी, आरी, छुरी आदि में धार रखनेवालों तक की दुकानें वहीं हैं। अर्थात् गोंठिल चाकू-छुरी को पैना करने के लिए दूर जाने की आवश्यकता नहीं है आँखों का सरकारी अस्पताल भी वहीं प्रतिष्ठित है। शत्रु-मित्र की पहचान के लिए दृष्टि कमजोर हो तो वहाँ ठीक करायी जा सकती है, जिसमें कोई भूल होने की सम्भावना न रहे। इसके अतिरिक्त एक और अस्पताल उसी कोने में गरिमापूर्ण ऐतिहासिक स्थिति रखता है। आहत, मुमूर्षु व्यक्ति की दृष्टि से यह विशेष सुविधा है। यदि अस्पताल के अन्त:कक्षों में स्थान न मिले, यदि डॉक्टर, नर्स आदि का दर्शन दुर्लभ रहे तो बरामदे पोर्टिको आदि में विश्राम प्राप्त हो सकता है और यदि वहाँभी स्थान भाव हो, तो अस्पताल के कम्पाउण्ड में मरने का संतोष तो मिल ही सकता है।

हमारे देश में अस्पताल, साधारण जन को अंतिम यात्रा में संतोष देने के लिऐ ही तो हैं। किसी प्रकार घसीटकर, टाँगकर उस सीमा-रेखा में पहुँचा आने पर बीमार और उसके परिचारकों को एक अनिवर्चनीय आत्मिक सुख प्राप्त होता है। इसके अधिक पाने की न उनकी कल्पना है, न माँग। कम-से-कम इस व्यवस्था ने अंतिम समय मुख में गंगाजल, तुलसी, सोना डालने की समस्या तो सुलझा ही दी है। यहाँ मत्स्य क्रय-विक्रय केन्द्र भी है और तेल-फुलेल की दुकानें भी मानो दुर्गन्ध में समरसता स्थापित करने का अनुष्ठान है।

पर नखासकोने के प्रति मेरे आकर्षण का कारण, उपर्युक्त विशेषताँ नहीं है। वस्तुत: वह स्थान मेरे खरगोश, कबूतर, मोर, चकोर आदि जीव-जन्तुओं का कारागार भी है। अस्पताल के सामने की पटरी पर कई छोटे-छोटे घर और बरामदे हैं, जिनमें ये जीव-जन्तु तथा इनके कठिन-हृदय जेलर दोनों निवास करते हैं।

छोटे-बड़े अनेक पिंजड़े बरामदे में और बाहर रखे रहते हैं, जिनमें दो खरगोशों के रहने स्थान में पच्चीस और चार चिड़ियों के रहने के स्थान में पचास भरी रहती हैं। इन छोटे-जीवों को हँसने-रोने के लिए भिन्न ध्वनियाँ नहीं मिलती हैं। अत: इनका महाकलरव महा-क्रन्दन भी हो तो आश्चर्य नहीं। इन जीवों के कष्ट-निवारण का कोई उपाय न सूझपाने पर भी मैं अपने-आपको उस ओर जाने से नहीं रोक पाती। किसी पिंजड़े में पानी न देखकर उसमें पानी रखवा देती हूँ। दाने का अभाव हो तो दाना डलवा देती हूँ। कुछ चिड़ियों को खरीदकर उड़ा देती हूँ। जिनके पंख काट दिये गये हैं, उन्हें ले आती हूँ। परन्तु फिर जब उस ओर पहुँच जाती हूँ, सब कुछ पहले जैसा ही कष्टकर मिलता है।

उस दिन, एक अतिथि को स्टेशन पहुँचाकर लौट रही थी कि चिड़ियों ओर खरगोशों की दुकान का ध्यान आ गया और मैंने ड्राइवर को उसी ओर चलने का आदेश दिया।

बड़े मियाँ चिड़ियावाले की दुकान के निकट पहुँचते ही उन्होंने सड़क पर आकर ड्राइवर को रुकने का संकेत दिया। मेरे कोई प्रश्न करने के पहले ही उन्होंने कहना आरम्भ किया, " सलाम गुरुजी! पिछली बार आपने मोर के बच्चों के लिए पूछा था। शंकरगढ से एक चिड़ीमार दो मोर के बच्चे पकड़ लाया है, एक मोर है, एक मोरनी। आप पाल लें। मोर के पंजों से दवा बनती

है, सो एसे ही लोग खरीदने आए थे। आखिर मेरे सीने में भी तो इन्सान का दिल है। मरने के लिए ऐसी मासूम चिड़ियों को कैसे दे दूँ। टालने के लिए मैंने कह दिया, "गुरुजी ने मँगवाये हैं। वैसे यह कमबख्त रोजगार ही खराब है। बस, पकड़ो-पकड़ो मारो-मारो!"

बड़े मियाँ के भाषण की तूफान मेल के लिए कोई निश्चित स्टेशन नहीं है। सुनने वाला थककर जहाँ रोक दे, वहीं स्टेशन मान लिया जाता है। इस तथ्य से परिचित होने के कारण ही मैंने बीच में उन्हें रोक पूछा, "मोर के बच्चे हैं कहा?" बड़े मियाँ के हाथ के संकेत का अनुसरण करते हुए मेरी दृष्टि एक तार के छोटे-से पिंजड़े तक पहुँची, जिसमें तीतरों के समान दो बच्चे बैठे थे। मोर हैं, यह मान लेना कठिन था। पिंजड़ा इतना संकीर्ण था कि वे पक्षी-शावक जाली के गोल फ्रेम में कसे-जड़े चित्र जैसे लग रहे थे।

मेरे निरीक्षण के साथ-साथ बड़े मियाँ की भाषण-मेल चली जा रही थी। "ईमान कसम गुरुजी, चिड़ीमार ने मुझसे इस मोर के जोड़े के नकद तीस रुपये लिये हैं। बारहा कहा, भई जरा सोच तो अभी इनमें मोर की कोई खासियत भी है कि तू इतनी बड़ी कीमत ही माँगने चला ! पर वह मूँजी क्यों सुनने लगा। आपका खयाल करके अछ्ता-पछ्ताकर देना ही पड़ा। अब आप जो मुनासिब समझें।" अस्तु तीस चिड़ीमार के नाम के और पाँच बड़े मियाँ के ईमान के देकर जब मैंने वह छोटा पिंजड़ा कार में रखा तब मानो वह जाली के चौखटे का चित्र जीवित हो गया। दोनों पक्षी-शावकों के छ्टपटाने से लगता था, मानो पिंजड़ा ही सजीव और उड़ने योग्य हो गया है।

घर पहुँचने पर सब कहने लगे, तीतर हैं, मोर कहकर ठग दिया है।

कदाचित् अनेक बार ठगे जाने का कारण ही ठगे जाने की बात मेरे चिढ़ जाने की दुर्बलता बन गई है। अप्रसन्न होकर मैंने कहा, "मोर के क्या सुर्खाब के पर लगे हैं। है तो पक्षी ही। और तीतर-बटेर क्या लम्बी पूँछ न होने कारण उपेक्षा योग्य पक्षी हैं?"चिढ़ा दिए जाने के कारण ही सम्भवत: उन दोनों पक्षियों के प्रति मेरे व्यवहार और यत्न में कुछ विशेषता आ गई।

पहले अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में उनका पिंजड़ा रखकर उसका दरवाजा खोला, फिर दो कटोरों में सत्तू की छोटी-छोटी गोलियाँ और पानी रखा। वे दोनों चूहेदानी जैसे पिंजड़े से निकल कर कमरे में मानो खो गए। कभी मेज के नीचे घुस गए, कभी आलमारी के पीछे। अन्त में इस लुका-छिपी से थककर, उन्होंने मेरे रद्दी कागजों की टोकरी को अपने नये बसेरे का गौरव प्रदान किया। दो-चार दिन वे इसी प्रकार दिन में इधर-उधर गुप्तवास करते और रात में रद्दी की टोकरी में प्रकट होते रहे। फिर आश्वस्त हो जाने पर कभी मेरी मेज पर, कभी कुर्सी पर और मेरे सिर पर अचानक आविर्भूत होने लगे। खिड़कियों में तो जाली लगी थी, पर दरवाजा मुझे निरन्तर बन्द रखना पडता था। खुला रहने पर चित्रा (मेरी बिल्ली)इन नवागन्तुकों का पता लगा सकती और तब उसकी शोध का क्या परिणाम होता, यह अनुमान करना कठिन नहीं है। वैसे वह चूहों पर भी आक्रमण नहीं करती, परन्तु यहाँ तो दो सर्वथा अपरिचित पक्षियों की अनधिकार चेष्टा का प्रश्न था। उसके लिए दरवाजा बन्द रहे और ये दोनों (उसकी दृष्टि में)ऐरे-गैरे मेरी मेज को अपना सिंहासन बना लें, यह स्थिति चित्रा जैसी अभिमानिनी मार्जारी के लिए असह्य ही कही जायगी।

जब मेरे कमरे का कायाकल्प चिड़ियाखाने के रूप में होने लगा तब मैंने बड़ी कठिनाई से दोनों चिड़ियों को पकडकर जाली के बड़े घर में पहुँचाया, जो मेरे जीव-जन्तुओं का सामान्य निवास है।

दोनों नवागन्तुकों ने पहले से रहने वालों में वैसा ही कुतूहल जगाया जैसा नववधू के आगमन पर परिवार में स्वाभाविक है। लक्का कबूतर नाचना छोड़कर दौड़ पड़े और उलके चारों और घूम-घूमकर गुटगूँ गुटगूँकी रागिनी अलापने लगे। बड़े खरगोश सभ्य सभासदों के समान क्रम से उनका निरीक्षण करने लगे। ऊन गेंद जैसे छोटे खरगोश उनके चारों और उछ्ल-कूद मचाने लगे। तोते मानो भलीभाँति देखने के लिए एक आँख बन्द करके उनका परीक्षण करने लगे। ताम्रचूड़ झूले से उतरकर और दोनों पंखों को फैलाकर शोर करने लगा। उस दिन मेरे चिड़ियाघर में मानो भूचाल आ गया।

धीरे-धीरे दोनों मोर-बच्चे बढ़ने लगे। उनका कायाकल्प वैसा ही क्रमश: और रंगमय था, जैसा इल्ली से तितली का बनना।

मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊँची तथा चमकीली हो गयी। चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गयी, गोल आँखों में इन्द्रनील की नीलाम द्युति झलकने लगी। लम्बी नील-हरित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूपछाँही तरंगें उठने-गिरने लगीं। दक्षिण-वाम दोनों पंखों में स्लेटी और सफेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूँछ लम्बी हुई और उसके पंखों पर चन्द्रिकाओं के इन्द्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंग-रहित पैरों को गर्वीली गति ने एक नयी गरिमा से रंजित कर दिया। उसका गर्दन ऊँची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीचे कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौन्दर्य था, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है। गति का चित्र नही आँका जा सकता।

मोरनी का विकास मोर के समान चमत्कारिक तो नहीं हुआ, परन्तु अपनी लम्बी धूपछाँही गर्दन, हवा में चंचल कलगी, पंखों की श्याम श्वेत पत्रलेखा, मंथर गति आदि से वह भी मोर की उपयुक्त सहचारिणी होने का प्रमाण देने लगी।

नीलाम ग्रीवा के कारण मोर का नाम रखा गया नीलकंठ और उसकी छाया के समान रहने के कारण मोरनी के नामकरण हुआ राधा।

मुझे स्वयं ज्ञात नहीं कि कब नीलकंठ ने अपने आपको चिड़ियाघर के निवासी जीव-जन्तुओं का सेनापति और संरक्षक नियुक्त कर लिया। सबेरे ही वह खरगोश, कबूतर आदि की सेना एकत्र कर उस ओर ले जाता, जहाँ दाना दिया जाता है और घूम-घूमकर मानो सबकी रखवाली करता था। किसी ने कुछ गड़बड़ की और वह अपने तीखे चंचुप्रहार से उसे दण्ड देने दौड़ा।

खरगोश के छोटे और शरीर बच्चों को वह चोंच से उनके कान पकड़कर ऊपर उठा लेता था और जब तक वे आर्तक्रन्दन न करने लगते, उन्हें अधर में लटकाए रखता। कभी-कभी उसकी पैनी चोंच से खरगोश के बच्चों का कर्णवेध संस्कार हो जाता था, पर वे फिर कभी उसे क्रोधित करने का अवसर न देते थे। उसके दण्डविधान के समान ही उन जीव जन्तुओं के प्रति उसका प्रेम भी असाधारण था। प्राय: वह मिट्टी में पंख फैलाकर बैठ जाता और वे सब उसकी लम्बी पूँछ और सघन पंखों में छुआ-छुऔअल-सा खेलते रहते थे।

एक दिन उसके अपत्यस्नेह का हमें ऐसा प्रमाण मिला कि हम विस्मित हो गए। कभी-कभी खरगोश, कबूतर आदि साँप के लिए आकर्षण बन जाते हैं और यदि नाली के घर में पानी निकलने के लिए बनी नालियों में से कोई खुली रह जाय तो उसका भीतर प्रवेश पा लेना सहज हो जाता है। ऐसी ही किसी स्थिति में एक साँप नाली के भीतर पहुँच गया।

सब जीव-जन्तु भागकर इधर-उधर छिप गये, केवल एक शिशु खरगोश साँप की पकड़ में आ गया। निगलने के प्रयास में साँप ने उसका आधा पिछला शरीर तो मुँह में दबा रखा था; शेष आधा जो बाहर था, उससे ची-चीं का स्वर भी इतना तीव्र नहीं निकल सकता था कि किसी को स्पष्ट सुनाई दे सके। नीलकण्ठ दूर ऊपर झूले में सो रहा था। उसी केचौकन्ने कानों ने उस मन्द स्वर की व्यथा पहचानी और वह पूँछ पंख समेट कर सर से एक झपटे में नीचे आ गया।

सम्भवत: अपनी सहज चेतना से ही उसने समझ लिया होगा कि साँप के फन पर चोंच मारने से खरगोश भी घायल हो सकता है। उसने साँप को फन के पास पंजों से दबाया और फिर चोंच से इतने प्रहार किये कि वह अधमरा हो गया। पकड़ ढीली पड़ते ही खरगोश का बच्चा मुख से निकल तो आया, परन्तु निश्चेष्ट-सा वहीं पड़ा रहा।

राधा ने सहायता देने की आवश्यक्ता नहीं समझी, परन्तु मन्द्र केका किसी असामान्य घटना की सूचना सब और प्रसारित कर दी। लाली पहुँचा, फिर हम सब पहुँचे। नीलकंठ जब साँप के दो खण्ड कर चुका, तब उस शिशु खरगोश के पास गया और रात भर उसे पंखों के नीचे उष्णता देता रहा।

कार्तिकेय ने अपने युद्ध-वाहन के लिए मयूर को क्यों चुना होगा,यह उस पक्षी का रूप और स्वभाव देखकर समझ में आ जाता है।

मयूर कलाप्रिय वीर पक्षी है, हिंसक मात्र नहीं। इसी से उसे बाज, चील आदि की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, जिनका जीवन ही क्रूर-कर्म है।

नीलकण्ठ में उसकी जातिगत विशेषताएँ तो थीं ही, उनका मानवीकरण भी हो गया था।

मेघों की साँवली छाया में अपने इन्दधनुष के गुच्छे जैसे पंखों को मण्डलाकर बनाकर जब वह नाचता था, तब उस नृत्य में एक सहजात लय-ताल रहता था। आगे-पीछे, दाहिने-बाएँ क्रम से घूमकर वह किसी अलक्ष्य सम पर ठहर-ठहर जाता था।

राधा नीलकंठ के समान नहीं नाच सकती थी, परन्तु उसकी गति में भी एक छन्द रहता था। वह नृत्यमग्न नीलकंठ के दाहिनी ओर के पंख को छूती हुई बायीं ओर निकल आती थी और बाएँ पंख को स्पर्श कर दाहिनी ओर। इस प्रकार उसकी परिक्रमा में भी एक पूरक ताल का परिचय मिलता था। नीलकंठ ने कैसे समझा लिया कि उसका नृत्य मुझे बहुत भाता है, यह तो नहीं बताया जा सकता; परन्तु अचानक एक दिन वह मेरे जालीघर के पास पहुँचते ही, अपने झूले से उतरकर नीचे आ गया और पंखों का सतरंगी मण्डलाकार छाता तानकर नृत्य की भंगिमा में खड़ा हो गया तब से यह नृत्य-भंगिमा नित्य का क्रम बन गयी। प्राय: मेरे साथ कोई न कोई देशी विदेशी अतिथि भी पहुँच जाता था और नीलकंठ की मुद्रा को अपने प्रति सम्मानसूचक समझकर विस्मयाभिभूत हो उठता था। कई विदेशी महिलाओं ने उसे "परफेक्ट जैन्टिलमैन" की उपाधि दे डाली।

जिस नुकीली पैनी चोंच से वह भयंकर विषधर को खंड-खंड कर सकता था, उसी से मेरी हथेली पर रखे हुए भुने चने ऐसी कोमलता से हौले-हौले उठाकर खाता था कि हँसी भी आती थी और विस्मय भी होता था। फलों के वृक्षों से अधिक उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे।

वसन्त में जब आम के वृक्ष सुनहली मंजरियों से लद जाते थे, अशोक नये लाल पल्लवों से ढँक जाता था, तब जालीघर में वह इतना अस्थिर हो उठता कि उसे बाहर छोड़ देना पड़ता। पर जब तक राधा को भी मुक्त न किया जाए, वह दरवाजे की बाहर ही उपालम्भ की मुद्रा में खड़ा रहता। मंजरियों के बीच उसकी नीलाम झलक संध्या की छाया से सुनहले सरोवर में नीले कमलदलों का भ्रम उत्पन्न कर देती थी। हवा से तरंगायित अशोक के रक्तिमाभ पत्तों में तो वह मूंगे के फलक पर मरकत से बना चित्र जान पड़ता था।

नीलकंठ और राधा की तो सबसे प्रिय ऋतु वर्षा ही थी। मेघों के उमड़ आने से पहले ही वे हवा में उसकी सजल आहट पा लेते थे और तब उनकी मन्द्र केका की गूँज-अनगूँज तीव्र से तीव्रतर होती हुई मानो बूंदों के उतरनेके लिए सोपान-पंक्ति बनने लगती थी। मेघ के गर्जन के ताल पर ही उसके तन्मय नृत्य का आरम्भ होता। और फिर मेघ जितना अधिक गरजता, बिजली जितनी अधिक चमकती, बूंदों की रिमझिमाहट जितनी तीव्र होती जाती, नीलकंठ के नृत्य का वेग उतना ही अधिक बढ़ता जाता और उसकी केका का स्वर उतना ही मन्द्र से मन्द्रतर होता जाता। वर्षा के थम जाने पर वह दाहिनी पंजे पर दाहिना पंख और बाएँ पर बायाँ पंख फैला कर सुखाता। कभी-कभी वे दोनों एक दूसरे के पंखो से टपकने वाली बूंदों को चोंच से पीकर-पंखों का गीलापन दूर करते रहते।

इन आनन्दोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा, यह भी एक करुण कथा है।

एक दिन मुझे किसी कार्य से नखासकोने से निकलना पड़ा और बड़े मियाँ ने पहले के समान कार को रोक लिया। इस बार किसी पिंजड़े की ओर नहीं देखूँगी, यह संकल्प करके मैंने बड़े मियाँ की विरल दाढ़ी और सफेद डोरे से कान में बँथी ऐनक को ही अपने ध्यान का केन्द्र बनाया। पर बड़े मियाँ के पैकों के पास जो मोरनी पड़ी थी उसे अनदेखा करना कठिन था। मोरनी राधा जैसी ही थी। उसके मूँज से बँधे दोनों पंजों की उँगलियाँ टूटकर इस प्रकार एकत्र हो गई थी कि वह खड़ी ही नहीं हो सकती थी। बड़े मियाँ की भाषण-मेल फिर दौड़ने लगी- "देखिए गुरुजी, कम्बख्त चिड़मारी ने बेचारी का क्या हाल किया है। ऐसे कभी चिड़िया पकड़ी जाती है। आप न आयी होती तो मैं उसी के सिर इसे पटक देता। पर आपसे भी यह अधमरी मोरनी ले जाने को कैसे कहूँ।"

सारांश यह कि सात रुपये देकर मैं उसे अगली सीट पर रखवाकर घर ले आयी और एक बार फिर मेरे पढ़ने-लिखने का कमरा अस्पताल बना। पंजों की मरहम पट्टी और देखभाल करने पर वह महीने भर में अच्छी हो गयी। उँगलियाँ वैसी ही टेढ़ी-मेढ़ी रहीं, परन्तु यह ठूँठ जैसे पंजों पर डगमगाती हुई चलने लगी। तब उसे जालीघर में पहुँचाया गया और नाम रखा गया कुब्जा। कुब्जा नाम के अनुरूप स्वभाव से भी वह प्रमाणित हुई।

अब तक नीलकंठ और राधा साथ रहते थे। अब कुब्जा उन्हें साथ देखते ही मारने दौड़ती। चोंच से मार-मारकर उसने राधा की कलंगी नोच डाली, पंख नोच डाले। कठिनाई यह थी कि नीलकंठ उससे दूर भागता था और वह उसके साथ रहना चाहती थी। न किसी जीव जन्तु से उसकी मित्रता थी, न वह किसी को नीलकंठ के समीप आने देना चाहती थी। उसी बीच राधा ने दो अण्डे पिए, जिनको वह पंखों में छिपाए बैठी रहती थी। पता चलते ही कुब्जा ने चोंच मार-मारकर राधा को ढकेल दिया फिर अण्डे फोड़कर ठूंठ जैसे पैरों से सब ओर छितरा दिए।

हमने उसे अलग बन्द किया तो उसने दाना-पानी छोड़ दिया और जाली पर सिर पटक-पटककर घायल कर दिया।

इस कलह-कोलाहल से और उससे भी अधिक राधा की दूरी से बेचारे नीलकंठ की प्रसन्नता का अन्त हो गया।

कई बार वह जाली के घर से निकल भागा। एकबार कई दिन भूखा-प्यासा आम की शाखाओं में छिपा बैठा रहा, जहाँ से बहुत पुचकार कर मैंने उतारा। एकबार मेरी खिड़की के शेड पर छिपा रहा।

मेरे दाना देने जाने पर वह सदा के समान अब भी पंखों का मण्डलाकार बनाकर खड़ा हो जाता था, पर उसकी चाल में थकावट और आँखों में एक शून्यता रहती थी। अपनी अनुभवहीनता के कारण ही मैं आशा करती रही कि थोड़े दिन बाद सब में मेल हो जाएगा। अन्त में तीन-चार मास के उपरान्त एक दिन सबेरे जाकर देखा कि नीलकंठ पूंछ-पंख फैलाए धरती पर उसी प्रकार बैठा हुआ है, जैसे खरगोश के बच्चों को पंखों में छिपाकर बैठता था। मेरे पुकारने पर भी उसके न उठने पर संदेह हुआ।

वास्तव में नीलकंठ मर गया था। "क्यों" का उत्तर तो अब तक नहीं मिल सका है। न कोई उसे बीमारी हुई, न उसके रंग-बिरंगे फूलों के स्तबक जैसे शरीर पर किसी चोट का चिन्ह मिला। मैं अपने शाल में लपेटकर उसे संगम ले गयी। जब गंगा की बीच धार में उसे प्रवाहित किया गया, तब उसके पंखों की चन्द्रिकाओं से बिम्बित-प्रतिबिम्बित होकर गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर के समान तरंगित हो उठा।

नीलकंठ के न रहने पर राधा तो निश्चेष्ट-सी कई दिन कोने में बैठी रही। वह कई बार भाग कर लौट आया था, अत: वह प्रतीक्षा के भाव से द्वार पर दृष्टि लगाए रहती थी। पर कुब्जा ने कोलाहल के साथ खोज-ढूँढ आरम्भ की। खोज के क्रम में वह प्राय: जाली का दरवाजा खुलते ही बाहर निकल आती थी और आम,अशोक, कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूँढ़ती रहती थी। एक दिन वह आम से उतरी ही थी कि कजली (अल्सेशियन कुत्ती) सामने पड़ गई। स्वभाव के अनुसार कजली पर भी चोंच से प्रहार किया। परिणामत: कजली के दो दाँत गर्दन पर लग गये। इस बार उसका कलह-कोलाहल और द्वेष-प्रेम भरा जीवन बचाया न जा सका। परन्तु इन तीन पक्षियों ने मुझे पक्षीप्रकृति की विभिन्नता का जो परिचय दिया है, वह मेरे लिए विशेष, महत्व रखता है।

राधा अब प्रतीक्षा में ही दुकेली है। आषाढ़ में जब आकाश मेघाच्छन्न हो जाता है, तब वह कभी ऊँचे झूले पर और कभी अशोक की डाल पर अपनी केका को तीव्र से तीव्रतर करके नीलकंठ को बुलाती रहती है।

शब्दार्थ-टिप्पण

नखास पशु पक्षीबाजार, जहाँ चिड़ियाँ और छोटे जीव बिकते हैं **गोंठिल** भोथरा **मुमूर्ष** मरणशील, मृत्यु का इच्छुक **पोर्टिको** कार, मोटर रखने का गैरेज **परिचारक** सेवक **अनिवर्चनीय** अवर्णनीय **आत्मिक** मानसिक **मत्स्य** मछली फुलेल इत्र, सुगंधि **कारागार** जेल **क्रंदन** रोना, विलाप **शावक** शिशु , पशु पक्षी **बारहा** बारबार **मूँजी** धुनी **बसेरा** निवास **आश्वस्त** विश्वास **आर्विभूत** अवतरित, उत्पन्न **अनधिकार** अधिकारहीन **मार्जरी** बिल्ली **कायाकल्प** पूर्णपरिवर्तन, नवीनीकरण **लक्का** सफेद **ताम्रचूड** मुर्गा **इल्ली** कोशित **द्युति** चमक **ग्रीवा** गरदन **उदीप्त** आलोकित, उर्जायित **वाम** बायाँ **मंथर** धीमी **चंचु** चोंच **कर्णवेध** कान छिदना **अपत्य** बच्चा संतान **निश्चेष्ट** बिना हिल डुले **निष्क्रिय** मंद्र, गंभीर, प्रसन्नकर्ता **केकारव** कुहुकने की आवाज **उष्णता** गरमी **सहजात** सहज रूप से उत्पन्न **सम** ताल, बँधान **विस्मय** अचरज **अभिभूत** ज्यादा प्रभावित, वशीभूत **मंजरी** बौर **उपालंभ** उलाहना, शिकायत **मरकत** पन्ना(एकरत्न) **तन्मय** तल्लीन, अभिमुख **स्तबक** पुष्पगुच्छ, केशगुच्छ **सोपान** सीढ़ी के चरण **कुब्जा** कुबड़ी, कुबरी

स्वाध्याय

1. लेखिका ने अपने पालतू प्राणियों के नाम दे रखे हैं उन नामों के साथ प्राणीनाम के सही जोड़े मिलाकर लिखिए :

अ	ब
(1) मोर	(1) चित्रा
(2) मोरनियाँ	(2) लाली और डॉली
(3) कुतिया	(3) मोर
(4) बिल्ली	(4) कुब्जा और राधा
	(5) कजली

2. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) प्रयाग शहर.....शहर का दूसरा नाम है।
(A) इलाहाबाद (B) बनारस (C) उज्जैन (D) नासिक

(2) अतिथि को स्टेशन पहुँचाकर लौटते समय लेखिका को .....की दूकान का ध्यान आया और ड्राइवर को उधर चलने को कहा।
(A) मत्स्य (B) तेल-फुलेल (C) चिड़ियों और खरगोश (D) मेवे-मिठाई

(3) दोनों पक्षी-शावकों के .....से लगता था मानो पिंजड़ा ही सजीव और उड़ने योग्य हो गया है।
(A) चहचहाने (B) छटपटाने (C) क्रंदन (D) गाने

(4) लेखिका ने नन्हें खरगोश की तुलना.....से की है।
(A) ऊन की गेंद (B) रूई के गोले (C) बर्फ की सफेदी (D) मेमने

(5) निलकंठ के .....के समान ही उन जीव-जन्तुओंके प्रति प्रेम भी असाधारण था।
(A) सुंदर लम्बी पूँछ (B) सौंदर्य (C) बंकिम ग्रीवा (D) दंड विधान

(6) मंथर शब्द का विरोधी (विरुद्धार्थी) शब्द.....है।
(A) तीव्र (B) मंद (C) मृदु (D) तिक्त

(7) अपत्य शब्द का अर्थ है.....।
(A) आपत्ति (B) जो न गिरे (C) बच्चा (D) अंडा

3. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) नखासकोना से कैसी घटनाओं के अशुभारंभ की बात कही गई है।
(2) नखासकोने प्रति लेखिका के आकर्षण का क्या कारण है।
(3) बडे मियाँ ने लेखिका को क्या कहकर संबोधित किया ?
(4) घर पहुँचने पर मोर के बच्चों को देखकर सब क्या कहने लगे ?
(5) शुरु में मोर के बच्चों को किस प्राणी से बचाने के लिए अपने पढ़ने-लिखने के कमरे का दरवाजा बंद रखती थी ?
(6) लेखिका द्वारा पाले गए जीव-जन्तुओं का सामान्य निवास कहाँ है ?

(7) मोर का नाम नीलकंठ क्यों रखा गया ?

(8) मोरनी का नाम क्या रखा गया ?

(9) मोर खरगोश के नन्हें बच्चों को उनके कान पकड़कर कब तक उठाए रखता था ?

(10) विदेशी महिलाओं ने नीलकंठ को क्या उपाधि दे रखी थी ?

(11) दूसरी मोरनी (कुब्जा)का स्वभाव कैसा था ?

4. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) आँखों के सरकारी अस्पताल के अलावा नखासकोने के दूसरे अस्पताल की किन चीजों को लेखिका ने अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है ?

(2) ठगे जाने की बात सुनकर लेखिका क्यों अप्रसन्न हो गई ?

(3) जालीघर में पहुँचाये जाने के पहले मोर के बच्चों ने अपना बसेरा कहाँ बनाया था ?

(4) नीलकंठ खरगोश के बच्चों को किस तरह दंडित करता था ?

(5) जीव-जन्तुओं के प्रति नीलकंठ का प्रेम कैसे प्रकट होता था ?

(6) नीलकंठ ने साँप के फन पर सीधे प्रहार क्यों नहीं किया ?

(7) वसंत ऋतु का नीलकंठ पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(8) वर्षा के थंम जाने पर नीलकंठ और राधा अपने पंखों का गीलापन कैसे दूर करते थे ?

(9) कुब्जा राधा के साथ कैसा व्यवहार करती थी ?

(10) नीलकंठ की उदासी का क्या कारण था ?

5. पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) नखासकोने में जीव-जन्तुओं को कैसे रखा गया है ?

(2) नखासकोने के जीव-जन्तुओं के कष्ट को कम करने के लिए लेखिका क्या-क्या करती थीं ?

(3) मोर के बच्चों के पालने में लेखिका को क्या-क्या ध्यान रखना पड़ा ?

(4) मोर के बच्चों के कायाकल्प का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ?

(5) नीलकंठ का प्राणियों के प्रति स्नेह कैसे प्रकट होता है ?

(6) नीलकंठ ने साँप से खरगोश-शावक की रक्षा कैसे की ?

(7) लेखिका के जालीघर के पास पहुँचते ही नीलकंठ अपनी खुशी कैसे व्यक्त करता था ?

(8) वर्षाऋतु में नीलकंठ के कार्यकलाप का वर्णन कीजिए।

(9) जालीघर के अन्य जीवों पर नवांगतुकों (मोर के बच्चों) के आगमन का क्या प्रभाव दिखाई दिया ?

(10) कुब्जा के जालीघर के बाद नीलकंठ के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन दिखाई दिया ?

(11) नीलकंठ-राधा-कुब्जा ने लेखिका को पक्षी-प्रकृति की भिन्नता का कैसे परिचय दिया ?

6. व्याख्या कीजिए :

(1) 'इनका महाकलरव महाक्रंदन भी हो तो आश्चर्य नहीं।'

(2) 'यहाँ मत्स्य विक्रयकेन्द्र है और तेल-फुलेल की दुकानें भी, मानो दुर्गन्ध में समरसता स्थापित करने का अनुष्ठान है।'

(3) 'मयूर कलाप्रिय वीर पक्षी है हिंसक मात्र नहीं।'

(4) 'राधा अब प्रतीक्षा में ही दुकेली हैं।'

7. संधि विग्रह कीजिए :

शुभारंभ, अनधिकार, नवागंतुक, नीलाम, विस्मयाभिभूत, रक्तिमाभ, निश्चेष्ट

8. सविग्रह समास बताइए :

नील-हरित, दक्षिण-वाम, नीलकंठ, जीव-जन्तुं, नृत्यमग्न, टेढ़ी-मेढ़ी, कलह-कोलाहल, द्वेष -प्रेम, पक्षि-शावक

9. नीचे दिये गए शब्दों में से प्रत्यय अलग करके बताइए :

समरसता, कष्टकर, चिड़ियावाले, व्यावहारिक, सहचारिणी, अभिमानिनी

10. नीचे दिए गए शब्दों में से उपसर्ग अलग करके लिखिए :

अशुभारंभ, अनअधिकार, असह्य, असाधारण, विभिन्न, निश्चेष्ट

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- मोर के बारे में निम्निलिखित मुदों का समावेश करते हुए एक लघु निबंध लिखें ।
- मोर का रंग-रूप , वर्षा का प्रभाव,वसंतऋतु का प्रभाव,अन्यजीवों के साथ संबंध,आहार-विहार,उसके प्रति हमारा कर्तव्य।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को कृष्ण-राधा, और कुब्जा के बारे में जानकारी दें।
- इस पृथ्वी पर ' जितना अधिकार मनुष्य का है, उतना ही अन्य जीवों का ' -इस बात की चर्चा करें।
- समग्र जीव-जगत के प्रति विद्यार्थी संवेदनशील बनें, ऐसा प्रयास करें।

•

28 देख चिड़िया

राजेश जोशी

(जन्म:सन् 1946 ई.)

राजेश जोशी का जन्म मध्यप्रदेश के नरसिंह गढ में हुआ था। आठवें दशक के ये बहुचर्चित कवि रहे हैं। इनकी शिक्षा-दीक्षा भोपाल में हुई। इनकी कविता में प्रगतिशील कविता की प्रखर जनवादी चेतना प्रकट होती है। उनकी सामाजिक संवेदनशीलता ने ही उनकी कालगत को गति और दिशा प्रदान की है। इनकी कविताएँ यथार्थ के ठोस धरातल से जुड़ी हैं। इसलिए अपने समय का प्रतिनिधित्व करने में ये पूर्णत: सक्षम हैं।

समकालीन जनवादी कविता को राजेश जोशी की कविता एक नया कलेवर, एक नवीन दिशा प्रदान करती है। समरगाथा नामक इनकी लम्बी कविता के अतिरिक्त एक दिन बोलेगें पेड़, राजेश जोशी की प्रमुख बहुचर्चित एवं प्रसिद्धि प्राप्त कृति है।

'देख चिड़िया,' 'एक दिन बोलेंगे पेड' से उद्धत की गई है। इस कविता में चिड़िया के माध्यम से हमें अपनी स्वतंत्रता, अपनी आजादी के प्रति सजग और सतर्क रहने की बात कही गई है। आज का समय आमने-सामने युद्ध का नहीं है, बल्कि आर्थिक व्यवस्था को मजबूत करना या उस पर अपना प्रभुत्व जमाने का है। इस कविता में चिड़िया प्रतीक के माध्यम से कहा गया है कि समय आने पर उसे अपने रंग की तरह उसके बारुदी स्वभाव का भी परिचय देना चाहिए।

चिड़िया
ज्यादा इतरा मत
दिमाग मत चढ़ा आसमान पर
कि तू चाहे तो छुट्टी रह सकती है
हर वक्त
कि तूने तो पंख पा लिए हैं
कि तू उड़ना सीख गई है।

देख चिड़िया
आजू-बाजू देख
ऊपर-नीचे देख
बाजार से आते
उस हाथ को देख
जो दिखते-दिखते अचानक
सलाकों में बदल जाता है।

इन सबसे निबटने को
काफी नहीं है
पंख होना
या सीख लेना उड़ना।

बारूद के रंगवाली चिड़िया
बारूद का स्वभाव भी सीख
उड़ना-गाना
तो ठीक
लेकिन
ताव खाना भी सीख।

शब्दार्थ-टिप्पण

इतराना इठलाना, **छुट्टी रहना** मुक्त रहना, **निबटना** सामना करना, मुकाबला करना, **ताव खाना** गुस्सा होना।

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) चिड़िया के इतराने का क्या कारण है ?
(2) बारूद के स्वभाव से कवि का क्या तात्पर्य है ?
(3) कवि चिड़िया को ताव खाने की सीख क्यों देते हैं ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) किनसे निपटने के लिए पंख होना आवश्यक नहीं है ?
(2) बाजार से आते हाथ सलाखों में बदल जाते हैं का क्या अर्थ है ?
(3) चिड़िया किसका प्रतीक है ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) देख चिड़िया कविता का केन्द्रीय भाव विस्तार से समझाइए ।
(2) कवि चिड़िया को बारूद का स्वभाव सीखने के लिए क्यों कहते हैं ?
(3) अचानक सलाखों में बदलना काव्य पंक्ति का भाव विस्तार कीजिए ।

4. पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) बाजार से आते
उस हाथ को देख
जो दिखते-दिखते अचानक
सलाखों में बदल जाता है।

(2) बारूद का स्वभाव भी सीख
उड़ना-गाना
तो ठीक
लेकिन
ताव खाना भी सीख

5. निम्न मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

आसमान पर दिमाग चढ़ाना-घमंड करना

6. समानार्थी शब्द लिखिए :

आसमान , पंख, हाथ

7. विरूद्धार्थी शब्द लिखिए :

रोना, ऊपर, सीखना

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- राजेश जोशी की अन्य कविताओं का संकलन तैयार करें।
- अन्य कवियों की इसी भाव की पाँच कविताओं का संकलन तैयार करें।
- इस कविता को चित्र के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए विद्यालय के बुलेटिन बोर्ड पर लगाएँ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- चिड़िया की आत्मकथा' निबन्ध की चर्चा करें।
- ग्लोबलाइजेशन से परिचित करवाएँ एवं लाभालाभ की चर्चा करें।

29 सहानुभूति

हरिशंकर परसाईं

(जन्म:सन् 1924 ई.; निधन : सन् 1995ई.)

हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य व्यंग्यकार श्री हरिशंकर परसाई जी का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी नामक गाँव में हुआ था। इन्होंने नागपुर विश्व-विद्यालय से हिन्दी में एम.ए. किया। कुछ दिनों तक अध्यापन करने के बाद आप स्वतंत्र लेखन के क्षेत्र में आए। हिन्दी साहित्य में हास्य-व्यंग्य को इन्होने शिष्ट और सम्मानित आसन पर आरूढ़ करवाया। हिन्दी साहित्य में आप ऐसे पहले कृति व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने व्यंग्य को विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया। व्यंग्य विधा को हास्यवाले संचारी भाव से मुक्ति दिलाई और प्रगतिशील साहित्य के सौन्दर्य बोध को महत्वपूर्ण अवयव-विडंबना और तिरस्कार से जोड़ा। यही कारण है कि कबीर, नजीर, गालिब, और निराला वाला विवादी स्वर उनके यहाँ प्रमुखता से उभरा है। आप प्रेमचन्द तथा मुक्तबोध की परम्परा को अपनी परंपरा मानते हैं। वर्तमान समाज में फैले भ्रष्टाचार, ढोंग, अवसरवादिता, अंधविश्वास, साम्प्रदायिकता एवं प्रभृति, कुप्रवृत्तियों पर करारा व्यंग्य आपकी रचनाओं में बड़े ही प्रभावशाली ढंग से उभरकर सामने आया है।

इनकी भाषा सरल-सहज हलकी-फुलकी किंतु तीखी और चुटीली होती है। 'रानी नागफनी की कहानी', 'तट की खोज', इनके उपन्यास हैं। 'हंसते हैं रोते हैं,' 'जैसे उनके दिन फिरे' आपके कहानी संग्रह हैं। 'अपनी-अपनी बीमारी', 'तब की बात और थी', 'सदाचार का तावीज', आदि आपके प्रसिद्ध निबन्ध संग्रह हैं। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' नामक निबन्ध संग्रह पर आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है।

प्रस्तुत रचना में परसाईंजी कहते हैं कि आजकल सच्ची सहानुभूति नष्ट होती जा रही है और दिखावा तथा आडम्बर मात्र महत्वपूर्ण बन गया है। जीवित व्यक्ति तथा उसके कार्यों की उपेक्षा की जाती है और मरते ही उसके प्रति सहानुभूति का स्रोत प्रवाहित होने लगता है। किसीकी मृत्यु पर शोक प्रदर्शन भी भावनाहीन रूढ़िमात्र बन गया है। सच्ची सहानुभूति का सम्बन्ध हृदय से होता है, प्रदर्शन से नहीं इस बात को विभिन्न उदाहरणों से इस रचना में व्यंग्य के माध्यम से समझाया गया है।

एक कविमित्र ने रेल से कटकर आत्महत्या कर ली। मैं उसकी शवयात्रा में जाने लायक साहस नहीं बटोर पाया। वह साथी था, वर्षों का मित्र! तीस साल के उस जवान मित्र के दो टुकडे भी हम नहीं देख सके। कुछ लोगों का आग्रह था कि हमें उसके दो टुकड़े भी देखना था। उन्होंने तो जी भर उसे देखा था, उसकी शवयात्रा में गये थे और बड़े शौक से रस लेकर वर्णन कर रहे थे कि कैसे कटा, कहां से कटा, खून कहाँ गिरा, आँखें कैसी थी, सिर कैसा था। दो टुकड़े इतनी दिलचस्पी से देखने वालों में से कई ने, तब उसकी ओर आँखें भी नहीं उठाई थीं, जब वह समूचा था। टुकड़े देखने वालों ने हमारी निंदा आरंभ की, जिन्होंने उसे समूचा देखा था। कुछ लोग स्नेह और सहानुभूति का घड़ा भरकर रखे रहते हैं और आदमी के मरने की राह देखते रहते हैं। इनका हृदय आग बुझाने के लिए पानी से भरी रखी हुई बाल्टी की तरह होता है, जिसका उपयोग तभी होता है, जब आग लगती है। इनका स्नेह और सहानुभूति प्राप्त करने के लिए आदमी को मरना पड़ता है। इन लोगों ने, हम नहीं जाने वालों को हृदयहीन कहा। फिर अखबार वालों ने कटाक्ष किया। महत्वपूर्ण मृत्यु का उपयोग जो रोचक समाचार बनाने के लिए करते हैं, उन्होंने हम लोगों की सहृदयता पर प्रश्न चिह्न लगाया । अखबारी सहानुभूति मैंने एक बार स्वयं देखी थी। एक दैनिक के दफ्तर में संपादक के पास बैठा था। संपादक अगले अंक के लिए 'बैनर खोज' रहे थे। कोई बड़ा समाचार मिल नहीं रहा था और वे परेशान थे। सहसा रेडियो ने एक बड़े लोकप्रिय नेता की मृत्यु का समाचार प्रसारित किया। संपादक खुशी से उछल पड़े और टेबिल पर हाथ मारकर बोले, फाइन ! अच्छा 'बैनर' बन जाएगा। अखबारनवीसों ने न जाने वालों पर टिप्पणी करके उस कवि की प्रतिष्ठा को भी बढ़ाया नहीं, घटाया ही। अर्थ तो यही निकला न कि उसकी शवयात्रा में कई साहित्यिक ही नहीं गए। यह भी क्या कवि! 'नादान की दोस्ती' वाली कहावत ऐसे ही मौके पर याद आती है।

सहानुभूति का हिसाब नहीं करना है, संवेदना की तुलना नहीं करनी और न यही कहना है कि हम औरों से अधिक सहृदय हैं। एक बात मन में उठती है कि जीवित की अवहेलना और मृतक का सम्मान कितना बढ़ गया है। पाँच सौ साल पहले

कबीर बड़ी हैरत में चिल्लाया था--

'जियत बाप से दंगम दंगा,
मरे हाड़ पहुँचाए गंगा !'

याद आता है कि ईसा जब भक्तों के दल के साथ बढ़े जा रहे थे, तब एक आदमी ने आकर कहा कि मैं मृत भाई को दफनाकर अभी आता हूँ। ईसा ने कहा- 'लेट द डेड बरी देअर डेड !' तुम चलो मेरे साथ ! ईसा ने उस 'फार्म ' का विरोध किया था, जो जीवन को ढँक लेता है। देखता हूँ, बुरी तरह 'फार्म' ने हमारी भावनाओं को आवृत्त कर रखा है। रूप और रूपक का बोलबाला है। स्नेह, सहानुभूति, करुणा का भी एक प्रकट रूप रूढ़ हो गया है और उसी को हम आंतरिक भाव से अधिक मानने लगे हैं। सच्चा संवेदन भी जब रूढ़ हो जाता है, तब वह एक भावहीन, रिक्त थोथा रिफ्लेक्स हो जाता है। बिन बोले का दु:ख बड़ा कहा गया है, पर अब कोलाहल से दु:ख की मात्रा मापी जाती है। शवयात्रा में जो तफरीहन भी जाए उसका दु:ख बड़ा गिना जाएगा और जो दु:ख से टूटकर घर बैठा रहे, उसे निष्ठुर माना जाएगा। प्रथा है कि पुत्र की अंत्येष्टि क्रिया में पिता नहीं जाता भला पिता पुत्र का दाह होते कैसे देखेगा! अधिक दु:ख वाले को घर में ही बैठने देना चाहिए। लेकिन अब शायद अधिक दु:ख का सबूत देने के लिए बाप को भी रूपक रचना पड़ेगा। एक आदमी को जानता हूँ, जो हर शवयात्रा में जाता है। दाहसंस्कार के प्रबंध के लिए उस जैसा विश्वासी आदमी दूसरा नहीं है। करुण-से-करुण मृत्यु पर जब आसपास लोग सिसकते होते हैं, उसके चेहरे पर शिकन नहीं जाती। वह उत्सव के उत्साह से रस्सी, घास-बाँस और हंडी की व्यवस्था में व्यस्त रहता है। क्या वह हर मृत्यु पर सब से अधिक दु:खी आदमी होता है ?

नीरो रोता भी समारोह में था। हम सभी छोटे-छोटे नीरो बने जा रहे हैं। जो समारोह में न रोए, उसका रोना, रोना नहीं गिना जाएगा। पहले 'मदनोत्सव' होते थे, अब रुदनोत्सव होते हैं। इन रुदनोत्सवों में सच्चा रोने वाला तो रह जाता है। झूठा रोनेवाला रंग जमा लेता है। एक नेता की शवयात्रा मैंने देखी थी। उसका शव एक ट्रक पर रखकर ४-५ मील दूर नर्मदाघाट पर ले जाया जा रहा था। एक व्यक्ति जो बड़ी उत्तेजना से जुलूस की व्यवस्था कर रहा था, एकदम उचक के ट्रक पर चढ़ गया और शव के सीने पर दोनों हाथ रखकर दहाड़ मारकर रोने लगा, "हाय-जी" ऐसा ओवरएक्टिंग हुआ कि ट्रेजडी की जगह कॉमेडी हो गई। मृतक के सगे भाई बेचारे नीचा सिर किए अंतिम पंक्ति में चलने लगे। उनका रोना हराम कर दिया, उस विकट विलापी ने। दूसरे दिन अखबारों में छपा कि उक्त व्यक्ति 4 -5 मील शव से चिपका हुआ क्रंदन करता गया और रास्ते में उसे कई बार मूर्च्छा आ गई। यह आगे क्यों नहीं लिखा कि धिक्कार है उन वज्रहृदय भाइयों को, जो एक बार भी नहीं चीखे और चुपचाप पीछे चलते रहे।

शोक समारोह कभी-कभी कैसे हास्यापद हो जाते हैं, इसकी आपबीती बताता हूँ। मैं एक स्कूल में अध्यापक था। १० बजे लड़कों की सामूहिक प्रार्थना होती थी। वे आपस में लत्ती मारते, पेन्सिल कोंचते, कान खींचते, चिमटी लेते, प्रार्थना कह लेते थे। सामने चबूतरे पर खड़े अध्यापक भी यह फुसफुसाते हुए निभा लेते थे कि यार, आज दस तारीख हो गई पर वेतन नहीं मिला अभी तक। बेचारे रोज प्रार्थना करें फिर भी इतना-सा वरदान न मिले के वेतन पहली को मिल जाएगा। मैं प्रार्थना में शामिल नहीं होता था। संस्था के मालिकों ने मुझे यह सोचकर नहीं छेड़ा होगा कि ईश्वर के होने को कोई निश्चय नहीं है, पर यह आदमी तो निश्चित है। अनिश्चित का पक्ष लेकर निश्चित से कौन झंझट करे। मैं अपने कमरे में बैठा रहता। एक विशेष अवसर पर मैं उस स्थल पर पहुँचता था-तब जब किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के लिए शोकप्रदर्शन करना होता। शोकभाषण मेरे जिम्मे था। हर दो-चार माह में ऐसे व्यक्ति मृत होते ही हैं, जिनके लिए स्कूलों में शोकप्रस्ताव पास होते हैं और छुट्टी होती है। मुझे हेडमास्टर से सूचना मिल जाती कि आज शोकभाषण करना है। मैं आँखों में असीम दर्द भरकर मुख पर दु:ख बिछाकर धीरे-धीरे नीचे देखता कमरे से निकलता और चबूतरे पर खड़ा हो जाता। सामने सैंकड़ों लड़कों की कतारें होतीं। विकल नयनों से मैं एकबार उन लड़कों को देखता और भारी गले से बोलना आरंभ कर देता- आज हम गहन शोक की छाया तले खड़े हैं.....भाषण के अंत में यह अवश्य कहता कि मृतक जो स्थान रिक्त कर गया है, वह कभी नहीं भरेगा- यद्यपि किसी-किसी के मरने से कोई स्थान ही रिक्त नहीं होता, बल्कि ऐसा लगता है कि अच्छा हुआ, 'टयूमर' कट गया। मैं हर मरनेवाले में मनुष्य के सब गुण आरोपित कर देता था,

वह चाहे विश्वप्रसिद्ध व्यक्ति हो या मुहल्ले का नेता। चेखव की एक कहानी में मुझ जैसा एक पात्र है, जो मृत्यु पर भाषण करने में उस्ताद है। उसके पास 'रेडीमेड' भाषण हैं। उसे लोग सोते से उठाकर स्मशानभूमि ले जाते हैं, मरने वाले का नाम मात्र बता देते हैं और धड़ल्ले से शोकपूर्ण भाषण दे देता है। एक बार नशे की झोंक में वह नामों से गड़बड़ा गया और उस व्यक्ति की मृत्यु पर बोल गया, जो उसके ठीक सामने खड़ा था। मुझे भी शोक भाषण का अभ्यास हो गया था। ठंड में जब काली शेरवानी धारण किए मैं बोलता; तब तो ऐसा लगता जैसे पादरी अंतिम आशीर्वाद दे रहा है। मेरे भाषण के बाद छुट्टी हो जाती।

कुछ दिनों में लड़कों ने मेरे प्रार्थना में आने का संबंध छुट्टी से जोड़ लिया. मैं आता दिखता, तो समझ जाते कि कोई मरा है और आज छुट्टी हो जाएगी। फिर तो लड़के कभी किसी की मृत्यु की खबर पाकर मेरे पास, आते और बड़ी गंभीर मुद्रा में कहते, 'सर , अमुक आदमी की मृत्यु हो गई। शोक सभा होनी चाहिए। मैं उन्हें टालता, तो वे जोर देते, सर सर्वत्र शोक छाया हुआ है। वह महापुरुष था। उसकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।' एक दिन तो मुझसे आकर कहने लगे कि डाकू मानसिंह के लिए शोकसभा करनी चाहिए। मैंने डाँटा,तो कहने लगे कि चाहे डाकू हो, पर था तो प्रसिद्ध आदमी। एक दिन एक प्रसिद्ध आदमी की मृत्यु हुई। हेडमास्टर को यह निर्णय करने में देर लगी कि मरने वाला छुट्टी के योग्य था या नहीं। लड़के निराश हो चुके थे। अंतिम क्षण में हेडमास्टर ने मुझे बुला भेजा। मुझे आते देखते ही लड़के खुशी से उचकने लगे और ताली बजाकर चिल्लाने लगे, "छुट्टी होगी! छुट्टी! छुट्टी!" मैंने क्रोध से उनकी ओर देखा और डाँटा। फिर भारी स्वर में शुरू किया, "आज हम गहन शोक की छाया तले–" वाक्य समाप्त होने के पहले ही लड़के कोलाहल करते हुए भाग खड़े हुए। कहा जाएगा कि अनुशासन नहीं था लड़कों में। मैं कहता हूँ शोक प्रदर्शन की भावनाहीन रूढ़ि का यही परिणाम होता है। आत्मा अगर वास्तव में होती हो तो उसकी शांति बड़ी भंग होती होगी, हमारी इन आत्मा की प्रार्थना वाली शोकसभाओं से।

इन रूपों में कहाँ सच्चा संवेदन है ? अर्थी के पीछे चलने वालों में कौन दोस्त और कौन दुश्मन है, इसकी कोई पहचान नहीं है। मेरे एक परिचित की बीमारी में जितने लोग उन्हें देखने आए, उनमें से आधे भी उन्हें वोट देते, तो वे लोकसभा का चुनाव जीत जाते। पर वे बेचारे म्युनिसपिल की वार्डमेंबरी का चुनाव ही हार गए।

फार्म जहाँ नहीं है, वहाँ भी भावना है, इसे हम क्यों नहीं मानते ? शायद वहाँ थोड़ी अधिक ही हो। जहाँ आडंबर प्रधान हो गया वहाँ सच्ची भावना कैसे रहेगी ? खादी जिसके शरीर पर न हो, उसे कुछ समय पहले तक देशभक्त ही नहीं समझते थे। ऐसा लग रहा था कि खादी का देश की अर्थव्यवस्था से संबंध तोड़कर लोग मंदिर में खादी का थान रखकर उसकी पूजा करेंगे।

जिस दिन पादरी का बढ़िया रेशमी चोगा सिल गया, उस दिन से चर्च में शायद उनके ईश्वर ने आना छोड़ दिया। जितनी देर मुल्ला मस्जिद की गुंबद से सब को सुनाकर खुदा को पुकारता है। उतनी देर उसका खुदा मस्जिद से भागकर कहीं चला जाता होगा।

जब पंडित ने पूजा में तरह–तरह के बहाने से यजमान से पैसे रखवाना शुरू किया, तो उनके देवता घबड़ाकर खिसक लिए।

यह सब शायद मन की बहक है। आखिर रीति–नीति भी तो कोई चीज है। रूढ़ि का भी तो अपना महत्त्व है। माना कि हम मनुष्य के बेटे को सूली पर टाँग देते हैं, पर गले में 'क्रास' लटकाए तो घूमना ही चाहिए।

इसलिए उठूँ। शोकसभा में जाना है। वहाँ जाने वालों के नाम छपेंगे।

शब्दार्थ-टिप्पण

सहानुभूति किसी के सुख–दु:ख को अपना सुख–दु:ख समझना **जियत** जीते जी **अखबारनवीस** पत्रकार **कटाक्ष** चुभने वाली बात का संकेत **तफरोहन** घूमते घामते **फार्म** रूढ़ि **बहक** भावावेश में भटकन **बैनर** प्रमुख शीर्षक **मंजिल** लक्ष्य **रिफ्लैक्स**– प्रतिबिंबित **विकल** व्याकुल, बेचैन **हैरत** आश्चर्य **चेखव** एक सुप्रसिद्ध रूसी लेखक (1860-1904 ई.)सैंकड़ों कहानियों, उपन्यासों, व नाटकों के लेखक जिनकी कृतियां विश्व की लगभग 71 भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। प्रेमचंद के मतानुसार चेखव विश्व के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार हैं। **नीरो** रोम का सम्राट (37-68 ई.) सन् 64 ई. में रोम नगर को आग लग गई थी, आधा शहर जलकर राख हो गया था, पर वह उस विनाशलीला को देखता हुआ आनंद से सारंगी बजा रहा था।

मुहावरे

प्रश्नचिह्न लगाना–संदेह उत्पन्न करना **बोलबाला**–प्रभाव फैलाना **रंग जमाना**–असर डालना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) कविमित्र को समूचा देखनेवालों की निंदा कौन करने लगे ?

(2) शवयात्रा में किसका दु:ख बड़ा गिना जाता है ?

(3) वर्तमान समय में किसका रोना 'रोना' नहीं माना जाता ?

(4) अर्थी के पीछे चलनेवालों में किस बात की पहचान नहीं होती ?

(5) खादी के महत्त्व को लेकर कौन-सी अतिशयोक्ति की गई है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) स्नेह और सहानुभूति का घड़ा भरकर रखनेवालों के विषय में लेखक क्या कहते हैं ?

(2) अखबारी सहानुभूति का कौन-सा प्रत्यक्ष प्रमाण दिया गया है ?

(3) दाह संस्कार संबंधी विश्वासी व्यक्ति के बारे में लेखक ने कौन-सी जानकारी दी है ?

(4) विकट विलापी ने नेताजी की शवयात्रा में कौन-सा रंग जमाया ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) शोक प्रसंग पर भाषण देने में उस्ताद पात्र की विशेषताएँ अंकित कीजिए।

(2) 'शोक समारोह हास्यास्पद हो जाते हैं' उल्लेखित उदाहरण द्वारा समझाइए।

(3) स्नेह, सहानुभूति और करूणा का कौन-सा रूप रूढ़ हो गया है ? स्पष्ट कीजिए।

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) 'सच्चा संवेदन भी जब रूढ़ हो जाता है, तब वह एक भावहीन रिक्त थोथा रिफ्लैक्स हो जाता है।'

(2) 'इनका हृदय आग बुझाने के लिए पानी से भरी रखी हुई बाल्टी की तरह होता है, जिसका उपयोग तभी होता है जब आग लगती है।'

5. सही विकल्प चुनकर खाली जगह भरिए :

(1) .....रोता भी समारोह में था।

(A) चेखव (B) नीरो (C) लेखक (D) कविमित्र

(2) एक बात मन में उठती है कि जीवित की अवहेलना और मृतक का.....कितना बढ गया है।

(A) सम्मान (B) शोकप्रदर्शन (C) महत्त्व (D) आडंबर

(3) सच्ची सहानुभूति का संबंध.....से होता है।

(A) प्रदर्शन (B) स्नेह (C) हृदय (D) शोक

(4) 'जियत बाप से दंगम दंगा मरे हाड़ पहुँचाए गंगा।' यह कथन किसका है ?

(A) नीरो (B) कबीर (C) चेखव (D) परसाईंजी

6. निम्नलिखित शब्दों से समानार्थी शब्द लिखिए :

स्नेह, छात्र, कोलाहल, नादान, साहस, साथी, समाचार, खून, दल, प्रथा

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

आरंभ, ट्रेजडी, मृत्यु, शांति, हर्ष, यजमान, विश्वास, निश्चित, उपयोग, असीम, उपयोग

8. संधि-विच्छेद कीजिए :

व्यस्त, मदनोत्सव, रुदनोत्सव, अध्यापक, प्रार्थना, प्रतिष्ठा, सहानुभूति, निश्चय, यद्यपि

9. निम्नलिखित संज्ञाओं के स्त्रीलिंग रूप लिखिए :

कवि, संपादक, छात्र, पुत्र, धोबी, श्रीमान, मालिक, विलाव

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- 'पर-उपदेश कुशल बहुतेरे' विषय पर विचार-विस्तार लिखिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'जैसे उनके दिन फिरे' पुस्तक से अन्य कहानी पढ़कर बच्चों को सुनाएँ।

•

व्याकरण

1 वर्णविचार

हिन्दी में 'वर्ण' शब्द का प्रयोग उच्चरित ध्वनि तथा उनके लिपिचिह्न दोनों के लिए किया जाता रहा है। वर्ण भाषा के उच्चरित तथा लिखित दोनों रूपों के प्रतीक हैं। 'वर्ण' भाषा की सबसे छोटी इकाई हैं।

1. हिन्दी की ध्वनि व्यवस्था

भाषा के उच्चरित स्वरूप में दो प्रकार की ध्वनियाँ हैं- खंड्य ध्वनियाँ और खंड्येतर ध्वनियाँ। जिन ध्वनियों को हम पृथक-पृथक दर्शा सकते हैं, वे ध्वनियाँ खंड्य ध्वनियाँ कहलाती हैं। खंड्य ध्वनियों के दो वर्ग हैं-स्वर तथा व्यंजन। आप जानते हैं व्यंजन वर्णों में स्वर 'अ' जुड़ा रहता है।

उदाहरण के लिए कोई एक शब्द लीजिए जैसे-दाहोद, दाहोद में द्+आ+ह्+ओ+द्+अ कुल छः ध्वनियाँ हैं, इनमें से 'द,''ह,' और 'द' ये तीन व्यंजन ध्वनियाँ है तथा 'आ,''ओ' और 'अ' ये तीन स्वर ध्वनियाँ हैं। एक विद्यार्थिनी 'मणिनगर' में रहती है। आइए, देखे कि 'मणिनगर' में कितनी ध्वनियाँ हैं ?

मणिनगर- म्+ अ+ण्+इ+न्+अ+ग्+अ+र्+अ कुल 10 ध्वनियाँ हैं। इन में म्, ण्, न्, ग्, और र् व्यजंन हैं। हमारे देश का नाम भारत है। भारत शब्द में भ्+आ+र्+अ+त्+अ यानी कुल छः ध्वनियाँ हैं। इनमें भ, र, त व्यंजन तथा आ, (दो बार) अ, ये स्वर हैं।

हिन्दी की ध्वनि व्यव्स्था में 'स्वर' स्वतंत्र रूप बोले जाते हैं। इनके उच्चारण के समय वायु बिना किसी अवरोध के मुखविवर से निकलती है। व्यंजन का उच्चारण किसी स्वर की मदद से होता है तथा इनके उच्चारण के समय हवा मुख में थोड़ा ज्यादा अवरुद्ध होकर बाहर निकलती है। स्वर व्यंजन में मात्रा के रूप में जुड़े होते हैं। जिन वर्णों के साथ मात्रा नहीं होती, उनमें भी स्वर 'अ' तो रहता ही है।

उच्चरित रूप में शब्द के अंतिम व्यंजन में निहित 'अ' का उच्चारण प्रायः नहीं होता। पर पूरा व्यंजन लिखा जाता है। जब स्वर रहित व्यंजन का प्रयोग करना पड़ता है तब व्यंजन के नीचे हलंत चिह्न(्) लगता है। जैसे-ट् द् ह् इत्यादि । शब्द के अंतिम संयुक्त व्यंजन में स्वर अवश्य रहता है। जैसे --महेन्द्र=म्+अ्+ह+ए्+न्+द्+र्+अ् ; चिंता= च्+इ+न्+त्+आ ।

खंड्येतर ध्वनियाँ : इन ध्वनियों को अलग करके दर्शाया नहीं जा सकता किन्तु इनके प्रयोग के कारण शब्द के अर्थ या कथन के आशय में अंतर आ जाता है। दीर्घता, अनुनासिकता, संगम(संहिता) अनुतान और बलाघात ये खंड्येतर ध्वनियाँ है।

दीर्घता : ह्स्व और दीर्घ मात्राएँ अर्थभेद का कारण बनती हैं, जैसे-
चिंता-चीता, सुर-सूर, बेल-बैल, मोर-मौर ।

अनुनासिकता : यह भी अर्थभेदक होती है, जैसे- आँधी-आधी, गोंद-गोद, पूँछ-पूछ, साँस-सास, हैं-है,

संगम : उच्चारण करते समय किन शब्दों को प्रवाह में एक साथ पढ़ना है और किनके बीच हलका-सा विराम देना है। इसी विराम स्थान को संगम या संहिता कहते हैं। यह भी अर्थभेदक है जैसे--
वह नदी में तैर रहा था। उसने कुत्ते को रोटी न दी।
आज विद्यालय में जलसा है। गर्मी में रेतीला मैदान जल सा दिखाई देता है।

अनुतान : बोलने में भावों के अनुसार स्वर का उतार-चढ़ाव होता है उसे अनुतान या सुरलहर कहते हैं। हिन्दी में तीन प्रकार के अनुतान का प्रयोग होता है जैसे--
वह विद्यालय जा रहा है। (सामान्य कथन)
वह विद्यालय जा रहा है ? (प्रश्न)
वह विद्यालय जा रहा है ! (आश्चर्य)

बलाघात : हिन्दी में बोलते समय किसी शब्द विशेष पर श्वास के दबाव से जो बल आ जाता है, उसे बलाघात कहते हैं। इसके

मैंने विज्ञान की पुस्तक पढ़ी। (किसी और विषय की नहीं, विज्ञान की)
मैंने विज्ञान की पुस्तक पढ़ी। (कुछ और नहीं (पत्रिका आदि), पुस्तक ही)

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित मोटे टाइप में छपे शब्दो पर बलाघात है। हिन्दी में वर्णों पर लगनेवाले बलाघात अर्थभेदक नहीं है। जैसे-- पिताजी ('ता' पर बलाघात)
सात ('सा' पर बलाघात)
उसे ('से' पर बलाघात)

2. हिन्दी वर्णमाला

हिन्दी वर्णों के समूह को वर्णमाला कहा जाता है। हिन्दी के वर्ण देवनागरी लिपि में लिखे जाते हैं। ये हमें परंपरागत रूप से संस्कृत से प्राप्त हुए हैं। भाषा की विकासयात्रा के क्रम में हिन्दी ने अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी के कुछ वर्ण स्वीकार किए हैं। हिन्दी वर्णों की संख्या का निर्धारण एक समस्या है। भारतीय संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा घोषित हो जाने के फलस्वरूप हिन्दी वर्णों का मानकीकरण बहुत जरूरी हो गया था। केन्द्रीय हिंदी निदेशालय ने शीर्षस्थ विद्वानों के साथ विचार-विमर्श के पश्चात् जो मानक हिन्दी वर्णमाला निर्धारित की है, वह नीचे दी जा रही है।

मानक हिन्दी वर्णमाला :

	स्वर	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ
	मात्राएँ	- ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ
	अनुस्वार	(ं) (अं)
	विसर्ग	(:) (अः)
	अनुनासिकता चिह्न	ँ
व्यंजन	:	क ख ग घ ङ
		च छ ज झ ञ
		ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़
		त थ द ध न
		प फ ब भ म
		य र ल व
		श ष स ह
संयुक्त व्यंजन	:	क्ष (क्+ष) त्र (त्+र) ज्ञ (ज्+ञ) श्र (श्+र)
		हल चिह्न- ् (ड्)
		गृहीत स्वर- ऑ (ॉ) (अंग्रेजी से)
		गृहीत व्यंजन- ख़ ज़ फ़ (अरबी-फारसी से)

वर्णमाला में अं अः तथा ऋ को स्वरों के साथ रखा गया है क्योंकि ये स्वरों के योग से ही बोले जाते हैं। **'ऋ'**स्वर का प्रयोग केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों में ही होता है, जैसे -- कृष्ण, घृत, दृश्य, ऋतु आदि।

फिलहाल 'ऋ' का उच्चारण उत्तर भारत में प्राय: 'रि' की तरह होता है, जब कि महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण के राज्यों में 'ऋ' का उच्चारण 'रु' की तरह होता है। ऋ की मात्रा (ृ) होती है, इस कारण इसे स्वर के साथ रखा गया है। अं, अः, ये क्रमश: अनुस्वार (ं-) और विसर्ग (:) के रूप में वर्ण से जुड़ते हैं। इनका उच्चारण भी व्यंजन की भाँति होता है।

अनुस्वार (ं-) जिस व्यंजन से पहले आता है उसी वर्ग के अंतिम वर्ण (नासिक्य) के रूप में उच्चरित होता है। जैसे - गंगा (गङ्गा) : मंजिल (मञ्जिल) , दंड (दण्ड), बंद (बन्द), चंपा (चम्पा)।

य, र, ल, व, श, ष, स और ह के साथ अनुस्वार का उच्चारण किसी भी नासिक्य व्यंजन (ङ्, ञ् , ण्, न्, म्) की तरह हो सकता है।

विसर्ग (:) का उच्चारण 'ह्' की तरह होता है।

वर्णों के भेद : वर्णमाला में वर्णो के दो भेद किये गए हैं – स्वर तथा व्यंजन।

स्वरों की संख्या अब 12 हो गई है। (अ,आ, इ, इ, उ, उ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, ऑ)

मानक व्यंजनों की संख्या अब कुल 35 है। इनमें (ख़, ज़, फ़ शामिल हैं।) क्ष, त्र, ज्ञ तथा श्र संयुक्त व्यंजन हैं। इन्हें स्वतंत्र रूप से लिखते अवश्य हैं, फ् ये अलग से व्यंजन नहीं गिन जा सकते। 'ळ' वर्ण का उच्चारण 'ल' और 'ढ' के बीच होता है, जो हिंदी में लुप्त प्राय है।

स्वर वर्णों के भेद : हिन्दी स्वर वर्णों के मूलत: दो भेद हैं –

(1) अनुनासिक

(2) निरनुनासिक

अनुनासिक स्वर : इनके उच्चारण में वायु की कुछ मात्रा नाक से बाहर निकलती है। जैसे अँ, आँ, इँ, ईँ, उँ, ऊँ, एँ, ऐं, ओं, औं। यानी सभी स्वरों के अनुनासिक उच्चारण हो सकते हैं।

निरनुनासिक स्वर: इनके उच्चारण में हवा मुख विवर से सीधे बाहर निकल जाती है। उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर(मात्रा की दृष्टि से) स्वरों को दो भागों में बाँटा जाता है – ह्रस्व स्वर तथा दीर्घ स्वर ।

ह्रस्व स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय (एक मात्रा) लगता है, वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं , जैसे – अ, इ, उ और ऋ।

दीर्घ स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व की तुलना में लगभग दुगुना समय लगता है। उन्हे दीर्घ स्वर कहते हैं : जैसे आ, ई, ऊ, एं, ऐ,ओ, औ, तथा ऑ ।'ऋ' के दीर्घ स्वर का प्रयोग केवल संस्कृत में होता है, हिन्दी में नहीं। दीर्घ स्वर स्वतंत्र स्वर हैं, ह्रस्व स्वरों के दीर्घ रूप नही। 'ऐ' तथा 'औ' संस्कृत में संयुक्त स्वर हैं।

पारंपरिक रूप से 'य' के पहले आनेवाले 'ऐ' का उच्चारण 'अइ' तथा 'व' के पहले आनेवाले 'औ' का उच्चारण 'अउ' हो जाता है। जैसे– गैया – गइया, भैया – भइया, कौवा – कउवा, हौवा – हउवा। आ, ई, ऊ, ऐ, और औ संधि स्वर भी हैं।

व्यंजन : हिन्दी में क वर्ग (5), च वर्ग (5), ट वर्ग (7), ततवर्ग (5), प वर्ग (5), अंतस्थ य, र, ल, व और ऊष्म श, ष स, ह, ह को मिलाकर कुल 36 व्यंजन थे। इनमें ख़, ज़, फ़ को मिला देने पर अब मानक हिन्दी में 39 व्यंजन हो गए हैं। वर्णमाला के व्यंजनों में 'अ' जुड़ा है। क्+अ=क, प्+अ=प, य्+अ=य, यानी क=क्+अ, प= प्+अ, य=य्+र इत्यादि।

व्यंजनों का वर्गीकरण – व्यंजनों का वर्गीकरण उनके उच्चारण तथा प्रयत्न (श्वास की मात्रा, स्वरतंत्री का कंपन, जीभ या अन्य अवयवों द्वारा वायु में अवरोध)के आधार पर किया जाता है।

(क) उच्चारण स्थान के आधार पर :

व्यंजनों का उच्चारण करते समय हमारी जीभ मुख्य विवर के विभिन्न स्थानों;
जैसे– कंठ, तालु, दाँत आदि को छूती है। इस आधार पर वर्णों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार होता है–

(1) कंठ्य (गले से)–क, ख, ग, घ, ङ, ह और ख़

(2) तालव्य (तालु से)– च, छ, ज, झ, ञ , य और श ।

(3) मूर्धन्य (तालु के मूर्धा भाग से) ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़ तथा ष।

(4) दंत्य– (दाँतों से) त, थ, द, ध, न।

(5) ओष्ठ्य (दोनों ओठों से) प, फ, ब, भ, म ।

(6) दंत्योष्ठ्य (निचले ओठ, ऊपरी दाँत से) व, फ़

(ख) उच्चारण प्रयत्न के आधार पर :

(1) **श्वास की मात्रा के आधार पर**

अल्प प्राण – इनके उच्चारण में मुख से कम हवा निकलती है; जैसे – क, ग, ङ,च, ज, ञ, ट, ड, ण, त द, न, प, ब म (प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा पाँचवाँ वर्ण)तथा य, र, ल, व ।

महाप्राण – इनके उच्चारण में मुख से निकलती हवा की मात्रा अधिक होती है; जैसे .ख, ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, ढ़, घ, ध, फ, फ़, (प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा वर्ण) तथा श, ष, स, और ह ।

(2) **स्वरतंत्री के कंपन के आधार पर** – जिन ध्वनियों के उच्चारण के समय स्वर तंत्री में कंपन होता है, उन्हें सघोष ध्वनियाँ कहते हैं और जब कंपन नहीं होता तब अघोष ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं, जैसे –

सघोष – सभी स्वर, प्रत्येक वर्ग के अंतिम तीन वर्ण (तीसरा, चौथा, पाँचवाँ) तथा ड़, ढ़ ज़, य, र, ल, व, स और ह।

अघोष – प्रत्येक वर्ग के पहले दो व्यंजन तथा फ़, श, ष, स और ख़ ।

(3) **उच्चारण अवयवों द्वारा श्वास में अवरोध के आधार पर**-– व्यंजनों का उच्चारण करते समय उच्चारण अवयव मुख विवर में किसी स्थान विशेष को स्पर्श करते हैं, ऐसे व्यंजनों को स्पर्श व्यंजन कहते हैं। जैसे –

क ख ग घ ङ ; च छ ज झ ञ ; ट, ठ, ड, ढ, ण ; त थ द ध न ; प फ ब भ म । श

इसी तरह जिन व्यंजनों का उच्चारण करता समय वायु स्थान विशेष पर घर्षण करते हुए निकलती है, संघर्षी व्यंजन कहते हैं जैसे – ख़ ज़ फ़, श ष स ह।

अंतस्थ व्यंजन : इनके उच्चारण में वायु में कम अपरोध होता है; जैसे–य र ल व । य और व को अर्ध स्वर भी कहा जाता है।

इनके अतिरिक्त बाकी बचे व्यंजनों की स्थिति इस प्रकार है –

'र' जीभ की नोक वर्त्स्य (मसूढ़े) से टकराती है, इसे 'लुंठित' कहते हैं।

'ल' हवा जीभ के दोनों किनारों को छूकर–बाहर निकलती है, इसे 'पार्श्विक' कहते हैं। 'ळ' 'ड़ तथा ढ़,–जीभ ऊपर उठकर झटके के साथ नीचे आती है ; इन्हें 'उत्क्षिप्त' व्यंजन कहते हैं।

कुछ विद्वान च छ ज झ को संघर्षी व्यंजन मानते हैं।

विशेष : प्रत्येक वर्ग का पाँचवाँ वर्ण नासिक्य है। इसके उच्चारण में थोडी हवा हवा नाक से निकलती है जैसे – ङ्, ञ्, ण्, न्, म्।

3. हिन्दी की लिपि और वर्तनी

आप जानते ही हैं कि हिन्दी की लिपि देवनागरी है। वर्णमाला के संदर्भ में यह लिपि इससे पहले के प्रकरण में दी गई है। मानक हिन्दी में पुराने ऋ (अ)भ (झ) घ (ध) और म (भ) ळ (ल) वर्णो का रूप बदला गया है। यद्यपि प्राचीन पुस्तकों में ये वर्ण अभी भी दिखाई देंगे। देवनागरी लिपि में दीर्घ ॠ (ॠ) लृ तथा (ल्लृ) भी सम्मिलित हैं। कित्तु इनका प्रयोग हिन्दी में नहीं होता अत: इन्हें मानक हिन्दी में शामिल नहीं किया गया है।

वर्तनी : शब्दों में प्रयोग होनेवाले वर्णों की क्रमिकता को वर्तनी कहा जाता है। अंग्रेजी शब्द स्पेलिंग का यह पर्याय है। हिज्जे वर्तनी का ही दूसरा नाम है। वर्तनी प्रयोग की शुद्धता केवल शब्द स्तर पर ही नहीं अपितु वाक्य और अनुच्छेद स्तर पर समझना होता है। विराम चिह्न वर्तनी व्यवस्था के ही अंग हैं। मानक हिन्दी वर्तनी संबंधी अद्यतन नियम इस प्रकार हैं :

(1) **संयुक्त वर्ण :**

(क) खड़ी पाई वाले व्यंजन :

खड़ी पाई वाले व्यंजनों का ,संयुक्त रूप ख़ड़ीपाई को हटाकर ही बनाना चाहिए ; जैसे-–
ख्याति, लग्न, विघ्न, स्वच्छ, छज्जा, नगण्य, कुत्ता, पथ्य, ध्वनि, न्याय, प्यास, धब्बा, अलभ्य, सुरम्य, शय्या, उल्लू, व्यास, शस्य, पुष्प।

(ख) अन्य व्यंजन : (अ) क और फ के संयुक्ताक्षर :

संयुक्त, पक्का, और दफ्तर की तरह बनाए जाएँ न कि संयुक्त पक्का दफ्तर की तरह।
(आ) ड़, छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल चिह्न लगाकर बनाए जाएँ , जैसे -–
वाङ्मय पट्टी, बुड्ढा, विद्या, ब्राह्मण, आदि।

(वाङ्मय, पट्टी, बुड्ढा, विद्या, ब्राह्मण नहीं)

(इ) संयुक्त **'र'** के प्रचलित तीनों रूप यथावत् रहेंगे ; जैसे :

प्रकाश, धर्म, राष्ट्र।

(ई) **'श्र'** का प्रचलित रूप ही मान्य होगा। त् + र के दोनों संयुक्त रूप त्र तथा ल मान्य रहेंगे।

(उ) हलंत चिह्न से बननेवाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' के मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व किया जाए न कि पूरे युग्म के पूर्व ; जैसे-- कुट्टिम, द्वितीय, बुद्धिमान, चिह्नित आदि। (कुट्टिम, द्वितीय, बुद्धिमान, चिह्नि नहीं। साथ ही संस्कृत के संयुक्ताक्षरों को पुरानी शैली में लिखा जा सकेगा ; जैसे -- चिह्न , विद्या, चच्चल, विद्धान, द्वितीय, बुद्धि, अङ्क आदि ।

(2) **विभक्ति-चिह्न** :

(क) हिन्दी के विभक्ति चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में शब्द से अलग लिखे जाएँ , जैसे- बालक ने, बालिका को , माता से, आदि। सर्वनाम शब्दों में विभक्ति-चिह्न प्रतिपदिक के साथ मिलाकर लिखे जाएँ ; जैसे-- मैंने, उसने, उसको आदि।

(ख) सर्वनामों के साथ यदि दो विभक्ति-चिह्न हों तो उनमें से पहला, सर्वनाम के साथ और दूसरा पृथक लिखा जाए: जैसे - उसके लिए, इनमें से आदि।

(ग) यदि सर्वनाम और विभक्ति के बीच 'ही' या 'तक' का निपात हो तो विभक्ति चिह्न पृथक लिखा जाएगा: जैसे आप ही के लिए , मुझ तक को आदि।

(3) क्रियापद :

संयुक्त क्रियाओ में सभी अंगभूत क्रियाएँ पृथक - पृथक लिखी जाएँ : जैसे- पढ़ा करता है, जा रहा था, आ सकता है आदि।

(4) हाइफन : हाइफ़न का विधान स्पष्टता के लिए किया गया है।

(क) द्वंद्व (द्वंद्व) समास के पदों के बीच हाइफन रखा जाए: जैसे राम-लक्ष्मण, शिव-पार्वती-संवाद, देख-रेख, चाल-चलन, लेन-देन आदि।

(ख) सा, जैसा आदि के पूर्व हाइफन रखा जाए : जैसे- तुम-सा, राम-जैसे, चाकू-से तीखे आदि।

(ग) कठिन संधियों से बचने के लिए हाइफ़न का प्रयोग किया जा सकता है, जैसे - द्वि अक्षर, द्वि -अर्थक आदि।

(घ) तत्पुरुष समास में हाइफन का प्रयोग केवल वहीं किया जाए, जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो, अन्यथा नहीं,: जैसे - भू-तत्व। सामान्यत: तत्पुरुष में हाइफन लगाने की आवश्यकता नहीं है, जैसे रामराज्य, राजकुमार, ग्रामवासी, गंगाजल आदि।

इसी तरह यदि अ-नख (बिना नखका) जैसे समस्त पद में हाइफ़न न लगाया जाए तो उसे 'अनख' पढ़े जाने से 'क्रोध' का अर्थ निकल सकता है। अ-नति (नम्रता का भाव), अनति (थोड़ा) : अ-परस (जिसे किसी ने छुआ न हो, अपरस (एक चर्म रोग) : भू-तत्व (पृथ्वी-तत्व), भूतत्त्व (भूत होने का भाव) आदि समस्त पदों की यही स्थिति है।

(5) अव्यय : 'तक' और 'साथ' अव्यय हमेशा पृथक् लिखे जाएँ: जैसे यहाँ तक, आपके साथ। हिंदी में आह, ओह , अहा, सो, भी, न, जब, तब, कब, वहाँ, कहाँ सदा इत्यादि अव्यय तथा जिन अव्ययों के साथ विभक्ति चिह्न आते हैं : जैसे- यहाँ से , वहाँ से , कब से, आदि में अव्यय पृथक ही लिखे जाएँ। सम्मानार्थक श्री और जी अव्यय भी पृथक लिखे जाएँ: जैसे श्री श्रीराम, श्री महात्मा जी, कन्हैयालालजी आदि।

(6) श्रुतिमूलक 'य', व :

जहाँ विकल्प के रूप में श्रुतिमूलक य, व का प्रयोग होता है, वहाँ उसे न किया जाए: यानी किए-किये, नई-नयी, हुआ-हुवा आदि में पहले स्वरात्मक रूपों का ही प्रयोग किया जाए। यह नियम क्रिया, विशेषण तथा अव्यय आदि सभी रूपों और स्थितियों में लागू माना जाए जैसे - दिखाए गए नई दिल्ली, पुस्तक लिए हूए आदि। किन्तु जहाँ 'ये' शब्द का ही तत्व हो वहाँ परिवर्तित नहीं होगा : जैस स्थायी : दायित्व, स्थायीभाव आदि।

(7) अनुस्वार : (ं) तथा अनुनासिकता चिह्न (ँ) दोनों प्रचलित रहेंगे। (क) संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ वर्ग के पाँचवें अक्षर के बाद उसी वर्ग के शेष चार वर्णो में से कोई वर्ण हो तो एकरूपता और मुद्रण। लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए : जैसे गंगा, चंचल, घंटा, संपादक आदि में पंचमाक्षर के बाद उसी वर्ग का वर्ण आता है। अत: यहाँ अनुस्वार का प्रयोग होगा (ग़ङ्गा, चञ्चल, घण्टा, सम्पादक नहीं) । यदि पाँचवें अक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए अथवा वही पंचमाक्षर दुबारा आये, तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में नहीं बदलेगा, जैसे वाङ्मय, अन्य, अन्न, सम्मान, चिन्मय आदि।
(ख) चंद्रबिंदु के बिना प्राय: अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है, हंस-हँस,अँगना-अंगना आदि में। अत: ऐसे भ्रम को दूर करने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। किन्तु जहाँ (विशेषकर शिरोरेखा के ऊपर जुड़नेवाली मात्रा के साथ) चंद्रबिंदु के प्रयोग से मुद्रण आदि में बहुत कठिनाई हो वहाँ चंद्रबिंदु के स्थान पर विन्दु के प्रयोग की छूट दी गई है, जैसे - में,नहीं मैं आदि। कविता के संदर्भ में चंद्रबिन्दु का प्रयोग यथास्थान अवश्य किया जाना चाहिए। इसी तरह छोटे बच्चों को आरंभिक कक्षाओं में जहाँ चंद्रबिन्दु का उच्चारण सीखना अभीष्ट हो, वहाँ सर्वत्र इसका प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे - कहाँ, हँसना, आँगन, सँवारना, में, मैं, नहीं इत्यादि।

विशेष : हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके दो रूप बराबर चल रहे हैं। विद्वत समाज में दोनों रुपों की एक-सी मान्यता है। फिलहाल इनकी एकरूपता आवश्यक नहीं समझी गई है। कुछ उदाहरण हैं-गरदन-गर्दन, गरमी-गर्मी, बरफ-बर्फ, बिलकुल-बिल्कुल, सरदी-सर्दी, कुरसी- कुर्सी, भरती-भर्ती, फुरसत - फुर्सत, बरदाश्त - बर्दास्त, वापस - वापिस, आखीर-आखिर, बरतन-बर्तन, दोबारा - दुबारा, दुकान - दूकान, बीमारी - बिमारी आदि।

(8) हलंत चिह्न : संस्कृत मूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी में सामान्यत: संस्कृत रूप ही रखा जाना जाए, किन्तु जिन शब्दों के प्रयोग में हिन्दी में हलंत चिह्न लुप्त हो चुका है, उसमें उसको फिर से लगाने का प्रयत्न न किया जाए, जैसे - महान, विद्वान आदि।

(9) पूर्वकालिक प्रत्यय : पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' को क्रिया से मिलाकर लिखा जाए, जैसे - रोकर, देखकर, पढ़कर आदि ।

(10) विसर्ग : संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है और यदि वे तत्सम रुप में प्रयुक्त हो रहे हों तब उनमें विसर्ग लगाना जरुरी है, जैसे - दु:खानुभूति। किन्तु यदि शब्द के तदभव रूप में विसर्ग का लोप हो चुका है तो उस रूप में विसर्ग के बिना भी काम चल जाएगा,जैस -'सुख-दुख के साथी'।

(11) ध्वनि परिवर्तन : संस्कृत मूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों का त्यों ग्रहण किया जाए। ब्रह्मा, चिह्न, उऋण को ब्रम्हा, चिन्ह, उरिण में बदलना उचित नहीं है। इसी तरह ग्रहीत, दृष्टव्य, प्रदर्शिनी, अत्याधिक, अनाधिकार जैसे अशुद्ध प्रयोग ग्राह्य नहीं हैं। इन्हें क्रमश: गृहीत,द्रष्टव्य, प्रदर्शनी, अत्यधिक अनधिकार ही लिखना चाहिए। तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनों के संयोग की स्थिति में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो गया है, उसे न लिखने की छूट है, जैसे अर्द्ध/अर्ध, उज्ज्वल/उज्वल तत्त्व/तत्व आदि।

(12) 'ऐ','औ' का प्रयोग : हिन्दी में 'ऐ'और 'औ' का प्रयोग दो प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए होता है।'है' तथा 'और' में पहला रूप है जब कि गवैया और 'कौवा'आदि में दूसरा रूप 'ऐ' और 'औ' का ही प्रयोग दोनों के लिए किया जाए, गवय्या या कव्वा नहीं।

(13) विदेशी ध्वनियाँ : अरबी-फारसी या अंग्रेजी मूलक के शब्द जो हिन्दी के अंग बन चुके हैं। और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिन्दी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है, हिन्दी रूप में ही स्वीकार किए जा सकते हैं; जैसे कलम, किलो, दाग आदि।(क़लम क़िला, दाग़ नहीं)पर जहाँ शुद्ध विदेशी रूप का उच्चारणगन अंतर बताना जरूरी हो वहाँ हिन्दी के प्रचलित रूपों यथास्थान नुक्ते लगाए जाएँ; जैसे- खाना-ख़ाना, राज-राज़, फन-फ़न। सारांशत: पाँच मुख्य विदेशी ध्वनियाँ (क़, ग़, ख़, ज़, और फ़) हिन्दी में आई हैं। जिनमें से दो (क़ और ग़)तो हिन्दी उच्चारण (क, ग) में बदल गई हैं; एक (ख़) लगभग हिन्दी **'ख'** में खपने की प्रक्रिया में है। शेष दो अभी भी अपना अस्तित्व बनाए रखने लिए संघर्षरत हैं ।

•

2 संधि

संधि यानी जोड़। भाषा में दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे संधि कहते हैं। हिन्दी में अधिकांश संधियाँ संस्कृत से आए तत्सम शब्दों में होती हैं। संधि में पहले पद का अंतिम वर्ण बादवाले पद के प्रथम वर्ण के मेल से संधि होती है। जैसे-- विद्यालय- विद्या+आलय (आ+आ)

वेद+अंग (वेद्+अ+अंग)=वेदांग (अ+अ=आ)

संधियाँ तीन प्रकार की होती हैं - स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि।

स्वर संधि : दो स्वरों के आपसी मेल के कारण जब स्वरों में परिवर्तन होता है, तो उसे स्वर संधि कहते हैं। संस्कृत में स्वर संधि के निम्नलिखित पांच भेद माने गए हैं :

(1) दीर्घ संघि, (2) गुण संधि, (3)वृद्धि संधि, (4) यण संधि और (5) अयादि संधि।

(1) दीर्घ संधि : जब अ,इ,उ या आ, ई, उ के साथ क्रमश: अ या आ, इ या ई, उ या ऊ आते हैं तो वे ध्वनियाँ मिलकर क्रमश: आ, ई, ऊ हो जाती हैं। ये ध्वनियाँ ह्स्व + ह्स्व, ह्स्व + दीर्घ, दीर्घ + ह्स्व या दीर्घ + दीर्घ हो सकती हैं। जैसे

समय + अनुकूल	(अ + अ = आ)	= समयानुकूल
परम + आनंद	(अ + आ = आ)	= परमानंद
रेखा + अंश	(आ + अ = आ)	= रेखांश
प्रभा + आकर	(आ + आ = आ)	= प्रभाकर
रवि + इन्द्र	(इ + इ = ई)	= रवीन्द्र
कपि + ईश	(इ + ई = ई)	= कपीश
योगी + इन्द्र	(ई + इ = ई)	= योगीन्द्र
नदी + ईश	(ई + ई = ई)	= नदीश
सु + उक्ति	(उ + उ = ऊ)	= सूक्ति

(2) गुण संधि : जब अ या या के बाद इ या ई हो तो दोनो मिलकर 'ए', उ या ऊ हो तो 'ओ' तथा 'ऋ' हो तो 'अर् हो जाता हैं। जैसे :-

सुर + इन्द्र	(अ + इ = ए)	= सुरेन्द्र
सुर + ईश	(अ + ई = ए)	= सुरेश
महा + इन्द्र	(आ + ई = ए)	= महेन्द्र
महा + ईश	(आ + ई = ए)	= महेश
पर + उपकार	(अ + उ = ओ)	= परोपकार
महा + उदय	(आ + उ = ओ)	= महोदय
गंगा + ऊर्मि	(आ + ऊ = ओ)	= गंगोर्मि
देव + ऋषि	(अ + ऋ = अर्)	= देवर्षि
महा + ऋषि	(आ + ऋ = अर्)	= महर्षि
राजा + ऋषि	(आ + ऋ = अर्)	= राजर्षि

(3) वृद्धि संधि : यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' हो तो दोनों मिलकर 'ऐ' तथा 'ओ' या 'औ' हो तो दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं : जैसे-

एक + एक	(अ + ए = ऐ)	= एकैक
मत + ऐक्य	(अ + ऐ = ऐ)	= मतैक्य
सदा + एव	(आ + ए = ऐ)	= सदैव
महा + ऐश्वर्य	(आ + ऐ = ऐ)	= महैश्वर्य

वन + औषधि (अ + ओ = औ) = वनौषधि
परम + औदार्य (अ + औ = औ) = परमोदार्य
महा + ओषध (अ + ओ = औ) = महौषध

(4) यण संधि : जब ह्स्व या दीर्घ इ, उ या ऋ के बाद कोई असवर्ण हो तो वह क्रमश: य् , व् , और र् हो जाता है। जैसे–

यदि + अपि (इ + अ = य्) = यद्यपि
इति + आदि (इ + आ = या) = इत्यादि
अति + उत्तम (इ + उ = यु) = अत्युत्तम
नि + ऊन (इ + ऊ = यू) = न्यून
प्रति + एक (इ + ए = ये) = प्रत्येक
दधि + ओदन (इ + ओ = यो) = दध्योदन
सखी + ऐक्य (ई + ऐ = यै) = सख्यैक्य
वाणी + औचित्य (ई + औ = यौ) = वाण्यौचित्य

मनु + अंतर (उ + अ = व) = मन्वंतर
सु + आगत (उ + आ = वा) = स्वागत
अनु + ईक्षण (उ + ई = वी) = अन्वीक्षण
अनु + एषण (उ + ए = वे) = अन्वेषण
लघु + ओष्ठ (उ + ओ = वो) = लघ्वोष्ठ
गुरु + औदार्य (उ + औ = वौ) = गुर्वौदार्य
वधु + ऐषणा (ऊ + ऐ = वै) = वध्वैषणा

पितृ + अनुमति (ऋ + अ = र्) = पित्रनुमति
मातृ + आज्ञा (ऋ + आ = रा) = मात्राज्ञा
मातृ + इच्छा (ऋ + इ = रि) = मात्रिक्षा
मातृ + उपदेश (ऋ + उ = रु) = मात्रुपदेश

विशेष : संस्कृत में स्वर संधि का एक भेद 'अयादि संधि' भी है। किन्तु हिन्दी में इस संधि से बने शब्दों (ने + अन्– नयन, पो + अक़ = पावक तथा ने + अक = नायक) को मूल शब्द माना जाता है। अत: उसका विवरण यहाँ नहीं दिया गया है।

•

3 हिन्दी : शब्द – संपदा

(अ) स्रोत के आधार पर हिन्दी शब्दों के प्रकार

हिन्दी के अंधिकांश मूल शब्द संस्कृत से सीधे आए हैं या संस्कृत से पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से विकसित होकर। हिन्दी भाषा की विकास यात्रा में उसने अपनी समकालीन भारतीय तथा विदेशी भाषा के कुछ शब्दों को भी अपनाया है। कुछ शब्द तो इतने घुल मिल गए हैं कि वे विदेशी लगते ही नहीं। इनके अलावा हिन्दी भाषा में लोक बोलियों या जनभाषाओ के बहुत शब्द प्रचलित हैं। जरुरत के मुताबिक हम नए शब्द गढ़ भी रहे है। इस तरह हिन्दी की शब्द संपदा को इतिहास या स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रकारो में विभाजित कर सकते हैं :

(1) तत्सम शब्द (2) तद्भव शब्द (3) देशज शब्द (4) विदेशी(आगत) शब्द तथा (5) संकर शब्द।

(1) स्रोत की दृष्टि से शब्द के प्रकार :

तत्सम शब्द : संस्कृत के जो शब्द हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयोग किये जाते हैं, उन्हे तत्सम शब्द कहा जाता है। कुछ तत्सम शब्द – अभिमान, अतिरिक्त, निर्देश, निर्मम, रात्रि, अश्व

तद्भव शब्द : तद्भव शब्द का अर्थ है जैसा हो गया हैं। उससे उत्पन्न संस्कृत के जिन शब्दो का रूप हिन्दी में कुछ न कुछ परिवर्तन हो गया है, उन्हें तद्भव शब्द कहा जाता है।

तत्सम शब्द	तद्भव शब्द	तत्सम शब्द	तद्भव शब्द
गृह	घर	निष्ठुर	निठुर
आश्चर्य	अचरज	ज्येष्ठ	जेठ
हस्ति	हाथी	कूप	कुआँ
दुर्बल	दुबला	बिन्दु	बूंद
भ्रमर	भौंरा	ग्राम	गाँव
भिक्षा	भीख	मक्षिका	मक्खी
रात्रि	रात	अश्रु	आँसू
कर्ण	कान	छिद्र	छेद
प्रस्तर	पत्थर	चर्म	चमड़ा

तत्सम शब्द :

अखंड	निस्संकोच	विद्रोह	कुख्यात
अहिंसा	प्रदूषण	अभिषेक	उत्कंठा
अवगुण	सक्रिय	अलंकृत	विकल्प
अध:पतन	कुप्रथा	सुपात्र	अंतर्धान
अभिनय	परामर्श	बहिष्कृत	विक्रय

तद्भव शब्द :

चोंच	दुपहिया	दूध	मोर
अनपढ़	अधजला	अनाज	निकम्मा
कपूत	चौपाई	अधपका	बिनमाँगा

निम्नलिखित शब्दों के सामने उनके तत्सम या तद्‌भव रूप लिखिए।

हाथ -_____ दुग्ध- _____ रात्रि- _____ घोटक- _____
मयूर-_____ भौंरा- _____ कुंभकार-_____ मूरत- _____ साधन- _____

देशज शब्द : जो शब्द न तो तत्सम है, न तद्‌भव हैं और न ही बाहर की किसी भाषा से लिये गये हैं उन्हें 'देशज' शब्द कहा जाता है। उनकी उत्पत्ति ठीक से ज्ञात नहीं है। जैसे -
भड़भड़ाना, चमचमाना, जगमगाना, झाड़ू, पेड़, झाड़, लोटा, टाँग, ठेठ, खटखटाना, ठसक, फुफकार

विदेशी शब्द : (आगत शब्द) जो शब्द भारत के बाहर के देशों की भाषाओं मुख्यत: अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी से आये हैं उन्हें (विदेशी) आगत शब्द कहा जाता है ।

अरबी-फारसी :	अल्लाह	फौज	आका	कागज	खजाना	बेगम
	बगीचा	बर्फ	खत	औरत	कालीन	फकीर
	कत्ल	खर्च	कानून	जालिम	बारुद	सजा़
अंग्रेजी :	अफसर	डॉक्टर	स्कूल	बटन	मास्टर	पैंट
	मशीन	हैट	डायरी	पुलिस	नर्स	यूनियन
	मिल	कॉलोनी	सोसायटी	कमीशन	इंजन	पॉलिसी
अन्य भाषाओं से :	रिक्शा	चाय	बाल्टी	अल्मारी	तौलिया	पादरी
	कारतूस	आलपिन	गोदाम	फीता	तंबाकू	चाबी

संकर शब्द : जो शब्द दो अलग-अलग भाषाओं से निर्मित हुए हैं उन्हें संकर शब्द कहा जाता है। जैसे -

किताबघर	जिलाधीश	घड़ीसाज	थानेदार	रेलगाड़ी
डाकखाना	रेलयात्रा	योजना कमीशन	बेसमझ	अफसरशाही
पार्टीबाजी	फूलदान	बंदूकची		

(2) अर्थ की दृष्टि से शब्द के प्रकार

अनेकार्थी शब्द : जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हे अनेकार्थी शब्द कहा जाता है।

प्राण - जीवन, श्वास, बल, वायु
फल - लाभ, परिणाम, खाद्य-पदार्थ
शून्य - आकाश, निर्जन, ब्रह्म, अभावसूचक
वर्ण - अक्षर, जाति, रंग
कर - किरण, टैक्स, हाथ, करने की क्रिया
जड़ - मूर्ख, निर्जीव, मूल, अचेतनता
मत - नहीं, वोट, विचार

समानार्थी शब्द : एक ही अर्थ को प्रकट करनेवाले एक से अधिक शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहा जाता है। परन्तु प्रत्येक शब्द की अपनी अर्थगत विशेषता होती है।

सूर्य - भास्कर, दिनकर, प्रभाकर, दिनेश, रवि, भानु
कमल - जलज, पंकज, सरोज, नलिन, राजीव
अग्नि - आग, पावक, अनल,

कृष्ण	–	मोहन, गोपाल, कान्हा, घनश्याम, श्याम, वासुदेव
इच्छा	–	अभिलाषा, लालसा, कामना, मनोरथ
ईश्वर	–	प्रभु, परमेश्वर, ईश, भगवान
नदी	–	सरिता, तटिनी, तरंगिणी, सरित
प्रेम	–	प्यार, स्नेह, अनुराग, राग, प्रणय
पक्षी	–	खग, विहग, नभचर, पंछी
पृथ्वी	–	भूमि, धरा, अवनि, वसुंधरा, धरती, धरणी

विपरीतार्थक शब्द : ऐसे दो शब्द जो अर्थ की दृष्टि से परस्पर विरोधी हों उन्हे विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहा जाता है।

शब्द	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**
अर्थ	अनर्थ	विष	अमृत
अग्रज	अनुज	शोक	हर्ष
अंगीकार	बहिष्कार	निश्चित	अनिश्चित
अनिवार्य	वैकल्पिक(ऐच्छिक)	वरदान	अभिशाप
आलस्य	स्फूर्ति	विधवा	सधवा
आधुनिक	प्राचीन	अस्त	उदय
अवनि	अम्बर	तरल	ठोस
गुप्त	प्रकट	बंजर	उपजाऊ
आस्था	अनास्था	वियोग	संयोग
आयात	निर्यात	पुरस्कार	दंड

अभ्यास

– निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

आकाश, राजा, गंगा, मनुष्य, स्त्री, जंगल, मेघ

– विलोम शब्द लिखिए :

कृत्रिम, सधवा, ज्येष्ठ, आलस्य, स्मरण, सशक्त, वियोग, नास्तिक, पवित्र, आरंभ

– निम्नलिखित शब्दों में से देशज शब्द छाँटकर लिखिए :

फौज, भड़भड़ाना, शैलजा, लोटा, थरिया, अफसरशाही

– पाँच विदेशी तथा पाँच संकर शब्दों की सूची बनाइए ।

•

4 पद रचना

उपसर्ग-प्रत्यय तथा समास :

शब्द भाषा की सबसे छोटी अर्थवान इकाई है। जब यह शब्द वाक्य के बाहर होता है तो शब्द कहलाता है, किन्तु जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तब इसे 'पद' कहा जाता है: जैसे - पेड़, आम, लगना, तीन शब्द हैं। इनके मेल से वाक्य बनता है - पेड़ पर आम,लगे हैं' यहाँ तीनों शब्दों **'पेड़', 'आम'** और लगे हैं को पद कहा जाएगा। अर्थात शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तब पद कहलाता है।

वाक्य में प्रयोग को योग्यता के लिए कभी-कभी शब्द में कुछ जोड़ना या घटाना पड़ता है, तो कभी शब्द का रूप बदलना पड़ता है। इस तरह पद रचना की निम्नलिखित विधियाँ हैं :

(1) **उपसर्ग या प्रत्यय जोड़ना :** जैसे - अनुपस्थित, भारतीय

(2) **स्वतंत्र शब्द जोड़ना :** जैसे - प्रजातंत्र, जनगण, विद्यालय (समास - संधि)

(3) **ध्वनि परिवर्तन :** पीटना - पिटवाना, लूटना - लुटाना

(4) **अनुनासिक चिह्न लगाना :** बहुवचन बनाने में (लड़कियाँ, लड़के)

उपसर्ग : वे शब्दांश जिनका अपना कोई अर्थ नहीं होता किन्तु किसी शब्द के पूर्व जुड़कर एक नये शब्द का निर्माण करते हैं या शब्द के अर्थ में विशेषता या परिवर्तन लाते हैं। उन्हे उपसर्ग कहते हैं।

उपसर्ग :

अ	- अचल	आ	- आजन्म
अति	- अतिशय	अधि	- अधिनायक
अप	- अपमान	दुस	- दुस्साहस
नि	- निवारण	निस्	- निश्चल
प्रति	- प्रतिकार	वि	- विशेष
अभि	- अभिमान	निर	- निराकार
दर	- दरअसल	अन्	- अनावश्यक

संस्कृत के उपसर्ग :

अति, अ, अधि, अन्, अनु, अप, आंभ, अव, आ, उत्, उप, दुर, दुस, नि, निर्, निस, परा, प्र, प्रति, वि, सम्, सु, स्व, कु, तत्

हिन्दी के उपसर्ग :

अ - अमर, कु - कुटिल, अध - अधखिला, अन - अनपढ़, उ - उजडा,
भर - भरपेट, क - कपूत, बिन - बिनब्याहा

उर्दू के उपसर्ग :

अल - अलमस्त, ला - लाइलाज, बे - बेकसूर, गैर - गैरहाजिर
ब - बदबू, खुश - खुशमिजाज

नीचे लिखे उपसर्गो की सहायता से शब्द बनाइए ।

अति, गैर, बे, बद, नि, कु, अधि, उत, प्र, खुश

उपसर्ग अलग कीजिए :

लावारिस, दुभाषिया, कुकर्म, नामुमकिन, बेनकाब, विनाश, प्रचार, निदान, आगमन, अधिपति, अचल

प्रत्यय : वे शब्दांश जो मूल शब्द के पश्चात जोड़े जाते हैं उन्हें प्रत्यय कहा जाता है। उपसर्ग की भाँति प्रत्यय का प्रयोग अलग से नहीं किया जाता, वे शब्द के साथ जुड़कर ही आते हैं।

प्रत्यय दो प्रकार के होते है।

(1) कृत प्रत्यय(2) तद्धित प्रत्यय

कृत प्रत्यय : वे शब्दांश जो कियाओं (धातुओं) के अन्त में जुड़कर शब्द का निर्माण करते हैं, उन्हें कृत प्रत्यय कहा जाता है।

उदाहरण :

अंत	– भिड़ंत	ई	– धमकी	कर	– गिनकर
आ	– भूला	आव	– छिड़काव	अनीय	– दयनीय
आवा	– दिखावा	एरा	– लुटेरा	अना	– कामना
इयल	– मरियल	आक	– तैराक	हार	– पालनहार
नी	– चटनी	न	– बेलन	अन	– भवन
उक	– भिक्षुक	त्व	– गुरुत्व	तव्य	– कर्तव्य

तद्धित प्रत्यय : जो शब्दांश संज्ञा, विशेषण, के अन्त में जुड़ते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहा जाता है ।

उदाहरण :

ता	– प्रभुता, वीरता	ईय	– राष्ट्रीय	पूर्वक	– प्रेमपूर्वक
त्व	– पुरुषत्व, व्यक्तित्व	तया	– साधारणतया	इमा	– नीलिमा
क	– गायक	था	– अन्यथा	आइन	– पंडिताइन
पन	– बचपन	मती	– श्रीमती	ईन	– कुलीन
पा	– मोटापा	ऊ	– बाजारू	आनी	– देवरानी

उपसर्ग की भांति प्रत्यय संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फारसी तथा अंग्रेजी के हो सकते है ।

•

5 समास

'समास' का अर्थ है 'संक्षेप'। पंडित कामता प्रसाद गुरु के अनुसार 'दो या अधिक शब्दों (पदों) का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतंत्र शब्द बनता है, उस शब्द को सामासिक शब्द कहते हैं और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है उसे समास कहा जाता है।'

- समास में कम से कम दो पदों का योग होता है।
- समस्त पद में (विभक्ति प्रत्ययों) कारक चिह्नों का लोप हो जाता है।
- समस्त पदों को खंडों में विभाजित करके सम्बन्ध को स्पष्ट करना 'विग्रह' कहलाता है।

सामासिक शब्द - नभचर

समास विग्रह - नभ में विचरण करने वाला

- समास के कई भेद हैं। हिन्दी के मुख्य समास इस प्रकार है :

समास

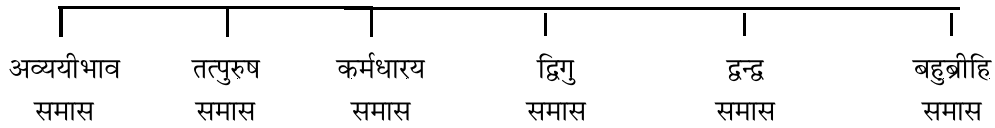

हम यहाँ मात्र अव्ययीभाव, द्वन्द तथा बहुब्रीहि समास से आपको परिचित करवाने जा रहे हैं।

अव्ययीभाव समास : अव्ययीभाव समास में पहला पद अव्यय और दूसरा पद संज्ञा होता है । दोनों को मिलाकर पूरा शब्द अव्यय के समान हो जाता है। अव्ययीभाव समास लिंग, वचन, कारक, पुरुष आदि की हष्टि से परिवर्तित नहीं होते हैं। उदाहरण : -

समस्त पद	**विग्रह**
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
आजीवन	जीवनभर
यथासमय	समय के अनुसार
सपरिवार	परिवार के साथ
प्रत्यक्ष	आँखों के सामने

द्वन्द्व समास : जहाँ दोनों पद प्रधान हों वहाँ द्वन्द समास होता है। विग्रह करने पर 'और', 'तथा', 'या' आदि योजक शब्द लगते हैं। उदाहरण :-

समस्त पद	**विग्रह**
रामकृष्ण	राम और कृष्ण
माता-पिता	माता और पिता
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य
सुख-दुःख	सुख और दुःख
नर-नारी	नर और नारी

बहुब्रीहि समास : जिस समास का कोई भी पद प्रधान नहीं होता, बल्कि अन्य पद प्रधान होता है, उसे बहुब्रीहि समास कहते है। समास होने पर पूरा पद विशेषण की तरह काम करता है। वह किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान आदि विशेष्य की अपेक्षा रखता है। उदाहरण : –

समस्त पद	**विग्रह**
चक्रपाणि	चक्र है हाथ में जिसके अर्थात् विष्णु
लम्बोदर	लंबा(बडा) है उदर जिसका अर्थात् गणेश
अजातशत्रु	नहीं पैदा हुआ है जिसका शत्रु अर्थात् वह
तिरंगा	तीन रंगों वाला अर्थात् भारत का राष्ट्र ध्वज
निशाचर	रात में विचरण करने वाला अर्थात् राक्षस

– बाकी समासो का परिचय दशवी कक्षा में करवाया जाएगा।

•

6 अलंकार

अलंकार का सामान्य अर्थ है – आभूषण या गहना। जिस प्रकार नारी की शोभा आभूषणों से बढ़ती है ठीक उसी प्रकार काव्य में प्रयुक्त शब्द और अर्थ की शोभा उनके अलंकारों से बढ़ती है।

काव्य के शब्दों, अर्थोंकी शोभा बढ़ाने वाले धर्मों को अलंकार कहते हैं। अलंकार के दो प्रकार हैं।

(1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

1. शब्दालंकार : जब काव्य में शब्दों के कारण चमत्कार या सौन्दर्य उत्पन्न हो तथा उन्हें अपने स्थान से हटा देने पर सौन्दर्य नष्ट हो जाये तो उसे शब्दालंकार कहा जाता है। शब्दालंकार के कई प्रकार हैं, जैसे –
अनुप्रास, यमक, श्लष आदि

अनुप्रास : वर्णो की आवृति को अनुप्रास अलंकार कहा जाता है। आवृति अर्थात् एक ही वर्ण का एक से अधिक बार आना।
'कठिन कलाह आई है करत करत अभ्यास' में 'क' वर्ण की आवृति से अनुप्रास अलंकार है।

यमक अलंकार : जब काव्य में एक ही शब्द एक से अधिक बार आए लेकिन उनके अर्थ अलग–अलग हों तो वहाँ यमक अलंकार होता है। जैसे –
कनक–कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
या पाये बौराय जग, वा खाये बौराय ॥

यहाँ कनक शब्द दो बार आया है। पहले कनक का अर्थ सोना तथा दूसरे कनक का अर्थ धतूरा है।

श्लेष अलंकार : श्लेष अर्थात् चिपका हुआ। जहाँ एक शब्द का एक से अधिक अर्थ प्राप्त हो वहाँ श्लेष अलंकार होता है, जैसे –
चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर ।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर ॥

यहाँ वृषभानुजा तथा हलधर शब्दों के एक से अधिक अर्थ हैं। वृषभानु + जा – वृषभानु की पुत्री राधा, वृषभ की बहन गाय। हलधर के वीर – बलदेव के भाई कृष्ण (वृषभ + अनुजा) बैल के भाई

वक्रोक्ति अलंकार : वक्र + उक्ति अर्थात् टेढ़ा कथन। जहाँ (वाक्य) वक्ता के कथन का भिन्न अर्थ लिया जाए वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है। उदाहरण :–
भूषन भारि सँभारि है, क्यों इहिं तन सुकुमार ।
सूधे पाइ न धर परै, सोभा ही कै भार ॥

शोभा के भार के मारे पैर सीधे नहीं पड़ रहे हों तो आभूषणों का बोझ कैसे संभलेगा। (काकु वक्रोक्ति)

•

7 संवाद-लेखन

नाटक, एकांकी, कहानी तथा उपन्यास आदि में पात्रों के पारस्परिक औपचारिक वार्तालाप को संवाद कहते हैं। संवाद का सामान्य अर्थ है-बातचीत।

संवाद, नाटक और एकांकी का मूल तत्त्व है। अच्छे संवाद-लेखन की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(1) संवाद की भाषा सरल होनी चाहिए ताकि आसानी से संप्रेषित हो सके।
(2) संवाद छोटे-छोटे और स्पष्ट होने चाहिए। तभी आकर्षण बढ़ेगा।
(3) संवाद परिवेश और विषय के अनुरूप होने चाहिए।
(4) संवाद व्यक्ति के अनरूप होने चाहिए।
(5) संवाद में जितनी ज्यादा स्वाभाविकता होगी, वह उतना ही रोचक, सजीव और मनोरंजक होगा।
(6) संवाद का आरंभ कुतूहल जगानेवाला होना चाहिए।
(7) संवाद का अंत स्वाभाविक और रोचक होना चाहिए।
(8) पात्रों के चरित्र, स्वभाव तथा संस्कृति के अनुरूप भाषा होनी चाहिए।

उदाहरण : अपनी पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानी अपना अपना भाग्य के संवादों को अलग छाँटकर देखिए। आप प्रेमचंद के नाम से परिचित हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी ईदगाह के संवाद देखिए :

हामिद - यह चिमटा कितने का है ?
दुकानदार - यह तुम्हारे काम का नहीं है जी
हामिद - बिकाउ है कि नहीं ?
दुकानदार - बिकाउ नहीं है और यहाँ क्यों लाद लाये हैं ?
हामिद - तो बताते क्यों नहीं कि कै पैसे का है ?
दुकानदार - छे पैसे लगेंगे।
हामिद - ठीक बताओ।
दुकानदार - ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो तो लो, नहीं चलते बनो।
हामिद - तीन पैसे लोगे ?

विज्ञापन लेखन

विज्ञापन का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। आपने अखबारों में सरकारी, गैर सरकारी और व्यक्तिगत विज्ञापनों के साथ-साथ तरह-तरह के व्यावसायिक विज्ञापन देखे होंगे। विज्ञापन की भाषा संक्षिप्त सटीक होनी चाहिए। कुछ सामान्य विज्ञापनों का प्रारूप नीचे दिया गया है।

वर्गीकृत विज्ञापन नौकरी हेतु :

आवश्यकता है 50 टेलीकालर्स की जो हिन्दी, अंग्रेजी और गुजराती अच्छी तरह बोल सकते हैं। आकर्षक वेतन दिन पाली के लिए महिलाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। संपर्क करें : श्रद्धा इंफोटेक, अरविन्द भवन, आश्रमरोड, अहमदाबाद-380006.

वैवाहिक विज्ञापन :

वणकर 30 / 5,2'' बी. को, प्राइवेट संस्थान में कार्यरत सुशील, गृहकार्य मे कुशल सुंदर कन्या हेतु कार्यरत वर चाहिए । जातिबंधन नहीं। संपर्क करें : seem.**@gmail.com. M. 987654321

नाम परिवर्तन :

मैं भूराराम बालमराम पसरीचा, निवास 140/842 गुज. हाउ. कॉलोनी, गोमतीपुर, अहमदाबाद घोषित करता हूँ कि अब मेरा नाम विवेक बालमराम पसरीचा हो गया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाए ।

व्यावसायिक विज्ञापन :

विभिन्न प्रकार के रंगों के केमिकल्स, डाइज़ और इंटरमीडिएट्स के लिए संपर्क करें सुधाकें, विशाला मार्केट, रिंगरोड, सूरत :M. 0987654321

•

8 पत्र

पत्र के माध्यम से सूचना, संदेश और हृदयगत भावों को शब्द रूप में सहजता से व्यक्त किया जाता है। पत्रों के माध्यम से सम्बन्ध दृढ़ होते हैं।

पत्र लेखन एक कला है। अच्चे पत्र की कुछ विशेषताएँ----

(1) पत्र की भाषा सरल,सहज एवं प्रभावपूर्ण होनी चाहिए।

(2) पत्र में विचारों, भावों की स्पष्टता होनी चाहिए। विषयान्तर नहीं होना चाहिए।

(3) पत्र में कम से कम शब्दों में अधिक विचार व्यक्त करने चाहिए।

(4) साहित्यिक पत्र में, रोचकता तथा उत्सुकता का भाव निहित होना चाहिए।

(5) पत्र लिखने का एक क्रमबद्ध तरीका होता है। सम्बन्धों के आधार पर भाषा का चयन करना चाहिए।

मुख्यत: पत्र दो प्रकार के होते हैं।

(1) अनौपचारिक-पत्र

(2) औपचारिक-पत्र

औपचारिक-पत्र :-औपचारिक पत्र के अन्तर्गत सरकारी-पत्र व्यावसायिक-पत्र, अर्ध-सरकारी-पत्र, प्रार्थना-पत्र, आवेदन-पत्र, शिकायती-पत्र आदि आते हैं।

अनौपचारिक-पत्र:-व्यक्तिगत, सामाजिक एवं पारिवारिक सम्बन्धों के सिलसिले में लिखे गये पत्र अनौपचारिक-पत्र कहे जाते हैं। जैसे माता-पिता भाई-बहन, मित्र, परिवार के अन्य सदस्यों को लिखे जाने वाले पत्र

पत्र के अंग : पत्र चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक सामान्यत: उसके निम्नलिखित अंग होते हैं :

. पता और दिनांक

. संबोधन तथा अभिवादन शब्दावली का प्रयोग

. पत्र की सामग्री

. पत्र की समाप्ति, स्वनिर्देश, हस्ताक्षर

औपचारिक पत्र के लिए-

पता और दिनांक

पत्र के बाईं ओर कोने में लेखक का पता लिखा जाता है और उसके नीचे तारीख लिखी जाती है।

संबोधन तथा अभिवादन-

औपचारिक स्थिति में निम्नलिखित संबोधन प्रयोग किए जाते है।

मान्यवर / प्रिय महोदय / महोदया

प्रियश्री / श्रीमती / सुश्री (नाम या उपनाम)

अभिवादन: नमस्ते प्रिय (नाम) जी या कुछ भी नही

पत्र की सामग्री : विषय के अनुरूप सामग्री

पत्र की समाप्ति, स्वनिर्देश , हस्ताक्षर

अंत में औपचारिक वाक्य, प्रेषक या उसके स्थानापन्न व्यक्ति के हस्ताक्षर, पूरा नाम, पद, और संलग्न पत्र / पत्रक या सामग्री

कतिपय नमूने - नव वर्ष में मित्र को शुभ कामना पत्र बी-128, सेक्टर--7, गांधीनगर-380 007

प्रिय तबस्सुम,

नमस्ते।

मेरी ओर से नव वर्ष की अनेक शुभकामनाएँ । तुम्हारा नव वर्ष मंगलमय और उपलब्धियों से भरा हो, ऐसी शुभकामना।

अनेक शुभकामनाओं सहित

तुम्हारी सखी,

स्मृति ठक्कर

प्रार्थना पत्र

सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य,
नवसर्जन हाईस्कूल, देवनगर..

मान्यवर,

सविनय निवेदन हैं कि मेरे नव निर्मित घर पर 20 नवम्बर 2015 को गृहप्रवेश का आयोजन किया गया है। अत : उक्त तारीख को मैं वर्ग में उपस्थित नहीं रह पाऊँगा।

सादर प्रार्थना है कि आप उस दिन की अनुपस्थिति क्षमा कर देने की कृपा करें। इसके लिए कृतज्ञ रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
विपिन वैद
कक्षा 9 B, रो. नं. 53

देवनगर
18-11-2015

शिकायती पत्र

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
नगर महापालिका,
अहमदाबाद,

महोदय,

निवेदन है कि आजकल हमारे मुहल्ले में नियमित रूप से सफाई नहीं हो रही है। सड़कों पर कूड़ा कई दिनों तक पड़ा रहता है। इससे मुहल्ले में बीमारियों के फैलने की आशंका है।

अत: आपसे प्रार्थना है कि उचित निर्देश देकर इस अव्यवस्था को दूर करने की कृपा करें।

भवदीय,
इकबाल अहमद
ब्लॉक हितकारिणी समिति
15, संजयनगर
अमराईवाडी, अहमदाबाद-26
ता. 15-7-2015

व्यावसायिक पत्र

सेवा में
व्यवस्थापक
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
ए-5, ग्रीन पार्क
नई दिल्ली-110016

महोदय,

कृपया निम्नलिखित पुस्तकों की एक-एक प्रति वी.पी.पी. द्वारा निम्नलिखित पते पर भेजने का कष्ट करें।

(1)सरदार वल्लभाई पटेल - ले.विष्णु प्रभाकर
(2) हमारे त्योहार
(3) भारत : अल बरुनी - अनु. नूरनबी अब्बासी
(4) राजेन्द्र प्रसाद : आत्मकथा
(5) उपनिषदों की कहानियाँ - भगवानसिंह

भवदीया,

नरेन्द्र कौर,
A-3 / 212 जवाहर कॉलोनी
सरदारनगर, अहमदाबाद.
ता. 16-02-2016

विज्ञापित पद के लिए आवेदन पत्र

प्रेषकः
जयदीप परमार
बी–27 सर्वोत्तमनगर,
ओ.एन.जी.सी. के पास, साबरमती,
अहमदाबाद–380 005

सेवामें
निदेशक, शिक्षक प्रशिक्षण परिषद
सेक्टर 10 ए, गांधीनगर – 382010

विषय : 'कंम्प्यूटर ओपरेटर' पद हेतु आवेदन

महोदय,

दैनिक 'राजस्थान पत्रिका' दिनांक 11 जनवरी 2016 में प्रकाशित आपके विज्ञापन के संदर्भ में 'कंम्प्यूटर ऑपरेटर' पद के लिए मैं अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ। शैक्षिक एवं अन्य विवरण संलग्न हैं।

प्रार्थना है कि इस पद पर सेवा का अवसर प्रदानकर अनुग्रहीत करें।

भवदीय
जयदीप परमार

दिनांक 12 जनवरी 2016
संलग्न (1) विस्तृत बायोडाटा (स्व वृत्र)
(2) प्रमाणपत्रों की प्रतिलिपियाँ

स्व–वृत (बायो डेटा)

नाम	:	जयदीप परमार
जन्मतारीख	:	5 जनवरी 1994
पता	:	बी / 27सर्वोत्तम नगर ओ. एन. जी. सी. के पास साबरमती, अहमदाबाद–380005

शैक्षिणक वितरण :

उत्तीर्ण परीक्षा	:	बोर्ड / विश्वविद्यालय	वर्ष	अंक प्रतिशत
हाईस्कूल	:	माध्यमिक शिक्षा परिषद गुजरात, वडोदरा.	2004	79
हायर सेकंडरी	:	उच्चत्तर माध्यमिक शिक्षा परिषद गांधीनगर, गुजरात.	2006	68
बी.ए.	:	गुजरात विश्व विद्यालय अहमदाबाद	2009	62
कंम्प्यूटर	:	CCC, CCC+	2011	83
अनुभव	:	ग्रामीण प्रायोगिकी परिषद में वर्ष 2012-13 में कम्प्युटर ऑपरेटर (1 वर्ष)		
इतर रुचियाँ	:	समाज सेवा और रेडक्रोस, चित्रकला, पेन्टिंग		

निमंत्रण पत्र

वार्षिकोत्सव समारोह
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
कुकरवाडा, महेसाणा 382830

प्रिय महोदय,

विद्यालय के वार्षिकोत्सव समारोह में आप सादर आमंत्रित हैं।

मुख्य अतिथि : श्री.....अध्यक्ष, गुजरात साहित्य अकादमी
अध्यक्ष : श्री.....निदेशक, माध्यमिक शिक्षा परिषद, गुजरात

कार्यक्रम :

विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन
सांस्कृतिक कार्यक्रम
पारितोषिक विवरण
मुख्य अतिथि के दो शब्द
अध्यक्षीय प्रवचन
आभार दर्शन

कार्यक्रम की तारीख : 15 फरवरी 2016
समय : अपराह्न 4:30 बजे
स्थल : विद्यालय सभागार

कृपया समय पर पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने की कृपा करें ।

उत्तरापेक्षी,
सचिव,
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
कुकरवाडा, महेसाणा

निवेदक,
आचार्य

•

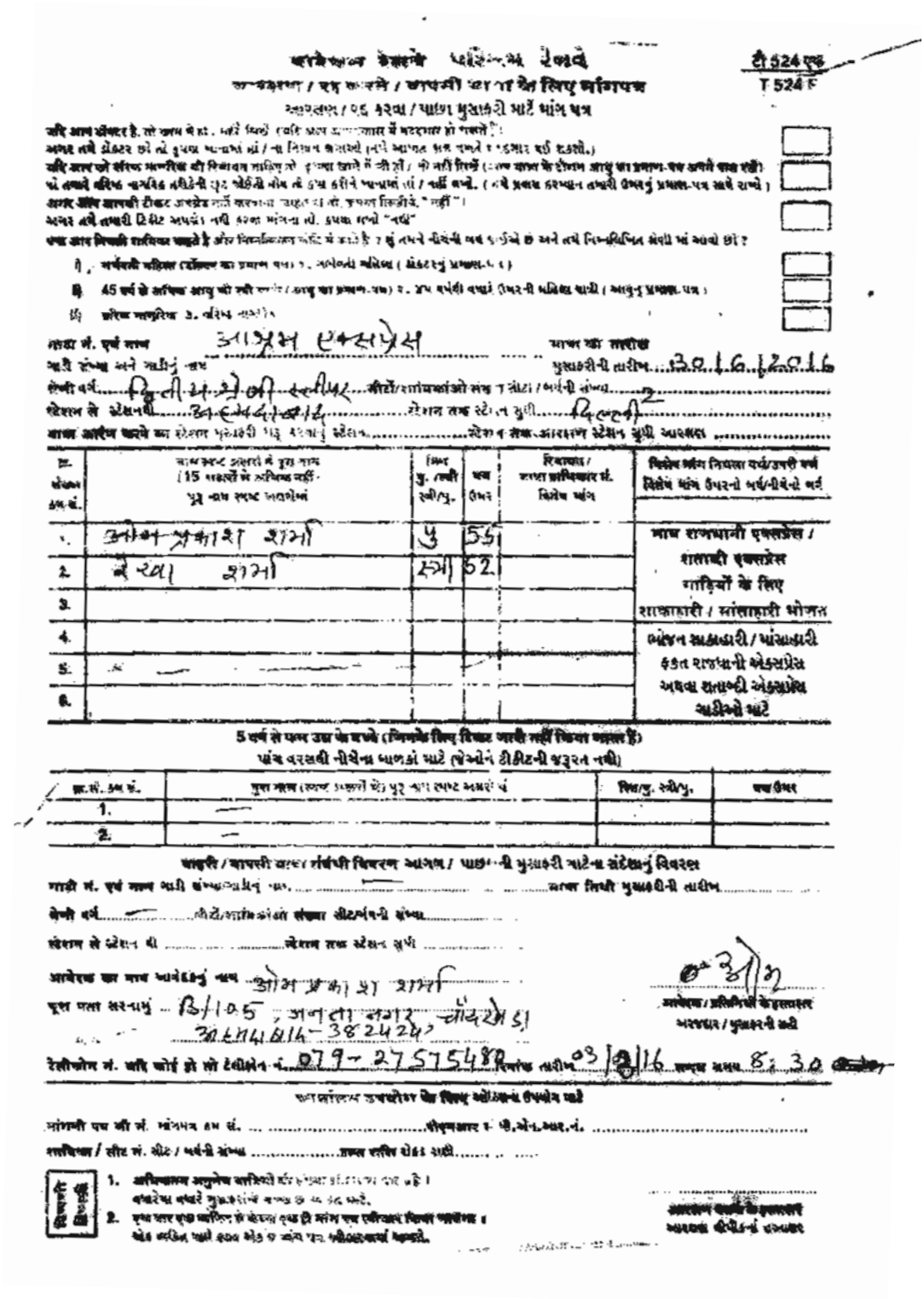

रेलवे आरक्षण पत्र

T 524 F

गाड़ी सं. एवं नाम: आश्रम एक्सप्रेस

मुसाफरीनी तारीख: 30.6.2016

श्रेणी वर्ग: द्वितीय श्रेणी स्लीपर — बर्थनी संख्या: 2

स्टेशन से: अहमदाबाद — स्टेशन तक: दिल्ली

क्र. सं.	नाम	लिंग पु./स्त्री	आयु	विशेष मांग
1.	ओम प्रकाश शर्मा	पु	55	
2.	रेखा शर्मा	स्त्री	52	
3.				
4.				
5.				
6.				

मात्र राजधानी एक्सप्रेस / शताब्दी एक्सप्रेस गाड़ियों के लिए शाकाहारी / मांसाहारी भोजन

5 वर्ष से कम उम्र के बच्चे (जिनके लिए टिकट जारी नहीं किया जाता है)

क्र. सं.	पूरा नाम	लिंग पु./स्त्री	आयु
1.	—		
2.	—		

आवेदक का नाम: ओम प्रकाश शर्मा

पूरा पता: B/105, अनन्ता नगर, चाँदखेड़ा, अहमदाबाद - 382424

टेलीफोन नं.: 079-27575480 — दिनांक: 03/6/16 — समय: 8:30

आवेदक / प्रतिनिधि के हस्ताक्षर: ओम

आरक्षण क्लर्क के हस्ताक्षर

9 निबंध लेखन

निबंध गद्य रचना का उत्कृष्ट रूप है। विषय का भलीभ्रांति प्रदान, लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति और भाषा का चुस्त प्रांजल रूप-ये तीनों ही अच्छे निबंध की विशेषताएँ हैं।

हमारे अनुभव या ज्ञान का कोई भी क्षेत्र अथवा हमारी कल्पना निबंध का विषय हो सकती है: जैसे - विज्ञान, दीपावली, चाँदनीरात, प्रात:काल, सत्संगति, मित्रता, भिखारी, हिमालय, इत्यादि। रचनाके रूप में निबंधकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :

1. निबंध के वाक्य परस्पर संबद्ध होते हैं। विचारों में कार्य-कारण संबंध बना रहता है।
2. भाषा विषय के अनुरूप होती है। गंभीर, चिंतन प्रधान, साहित्यिक विषयों के निबधो में प्राय: तत्सम शब्दावली रहती है जब कि सहज-सामान्य विषयों के निबंधो में सरल, बोलचाल की भाषा होती है।
3. निबंध को प्रभावशाली और रोचक बनाने के लिए यथास्थान उपयुक्त उद्धरणों, लोकोक्तियों, मुहावरों तथा सूक्तियों का प्रयोग किया जाना चाहिए। प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से निबंध के निम्नलिखित प्रकार हैं -

   (1) वर्णनात्मक (किसी त्योहार का वर्णन, मेले का वर्णन, क्रिकेट मैच का वर्णन आदि)
   (2) विवरणात्मक (ताजमहल, मेरी पाठशाला आदि।)
   (3) भाव प्रधान (मेरी माँ, मेरा प्रिय मित्र आदि।)
   (4) विचार प्रधान (स्वदेशप्रेम, अध्ययन, अनुशासन, समय-आयोजन)

निबंधलेखन की पूर्व तैयारी

निबंध लिखने से पहले विषय के विभिन्न मुद्दों पर विचार करना अपेक्षित है। शिक्षक या सहपाठियों के साथ चर्चा करन से पहले निबंध की रूपरेखा बना लेनी चाहिए, ताकि कोई मुद्दा या बिन्दु छूट न जाए ।

रूपरेखा तैयार कर लेने के बाद तत्संबंधी सामग्री का विभिन्न स्त्रोतों से संचय करना उपयोगी होता है। (विषयानुकूल उदाहरणो, उद्धरणों, सूक्तियों, तर्को, प्रमाणों का)

रुपरेखा के आधार पर निबंध लिखते समय छात्रो द्वारा प्रसंगानुसार निजी अनुभवों का उल्लेख किया जाना चाहिए । निबंध की रूपरेखा को तीन अंगों में बाँटा जा सकता है- प्रस्तावना या भूमिका, मुख्यअंश ओर उपसंहार।

प्रस्तावना : निबंध की आधारशिला है, इसलिए इसका संक्षिप्त तथा प्रभावी होना आवश्यक है। प्रस्तावना ऐसी होनी चाहिए कि उसे पढ़ने पर पाठक के मन आगे पढ़ने का कुतूहल उत्पन्न हो। निबंध का पहला अनुच्छेद ही उसकी प्रस्तावना होती है। इसमें निबंध के विषय के प्रमुख बिंदुओं को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

मुख्य अंश : प्रस्तावना के बाद और उपसंहार के पहले तक का निबंध का कलेवर मुख्य अंश माना जाता है। विषयवस्तु को अलग-अलग अनुच्छेदों में बाँटकर अपनी बात कहनी चाहिए। ये अनुच्छेद परस्पर सम्बद्ध होने चाहिए। मुख्य अंश में चार-पाँच छोटे अनुच्छेद में मात्र एक ही भाव या विचार रहना चाहिए। यह विभाजन तर्कसंगत होना चाहिए।

उपसंहार : यह निबंध का अंतिम भाग है। यह भी प्राय: एक अनुच्छेद का होता है। इसमें विषयवस्तु के विवेचन के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है। निष्कर्ष में लेखकीय विचार या प्रतिक्रिया हो सकती है। उपसंहार स्पष्ट, सुगठित और तर्कसंगत होना चाहिए जिससे पाठक पर स्थायी प्रभाव पड़ सके।

उदाहरण : अपनी पाठ्यपुस्तक का 'तर्क और विश्वास' शीर्षक पाठ देखिए।

•

10 अनुच्छेद-लेखन

किसी एक भाव या विचार को व्यक्त करने हेतु लिखे गए संबद्ध और लघु वाक्य-समूह को अनुच्छेद-लेखन कहते हैं। इसमें एक विचार बिन्दु होता है। अनुच्छेद स्वयं में एक स्वतंत्र और स्वत:पूर्ण रचना हो सकती है। कोई भी विषय देकर अनुच्छेद लिखने के लिए कहा जा सकता है। विषय का परिचय, विषय का संक्षिप्त वर्णन और निष्कर्ष वाक्य, सभी कुछ एक ही अनुच्छेद में समाहित होता है। हालांकि अनुच्छेद के लिए वाक्य संख्या का निर्धारण नहीं किया जाता फिर भी संक्षिप्तता इसका एक अनिवार्य गुण है। कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि -

1. एक अनुच्छेद में एक ही विचार व्यक्त हो।
2. अनुच्छेद के सभी वाक्य विचार की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हों।
3. अनुच्छेद का निष्कर्ष। केन्द्रीय भाव अनुच्छेद के आरंभ में या अंत के वाक्य में अवश्य आना चाहिए।

उदाहरण :

प्रकाश स्तंभ :

समुद्र में बहुत सी जगहों पर ऐसी चट्टाने या छोटे पर्वत होते हैं, जो जल की सतह के ऊपर दिखाई नहीं पड़ते। पानी में चलनेवाले जहाज इनसे टकरा जाएँ, तो टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ। ऐसी चट्टानो पर बहुत ऊँचा मीनारनुमा खंभा बना दिया जाता है। रात के अँधेरे में भी जहाज यह जान सके कि चट्टान कहाँ है और उससे बचे रहें, इसके लिए खंभे के ऊपरी भाग पर तीव्र प्रकाश किया जाता है। ऐसे खम्भो को प्रकाश-स्तम्भ कहते हैं। खंभे के निचले भाग में रहने के लिए कोठरियाँ बनी होती हैं, जिनमें प्रकाश स्तंभ के कर्मचारी रहा करते हैं।

•

रेल समय सारणी देखना

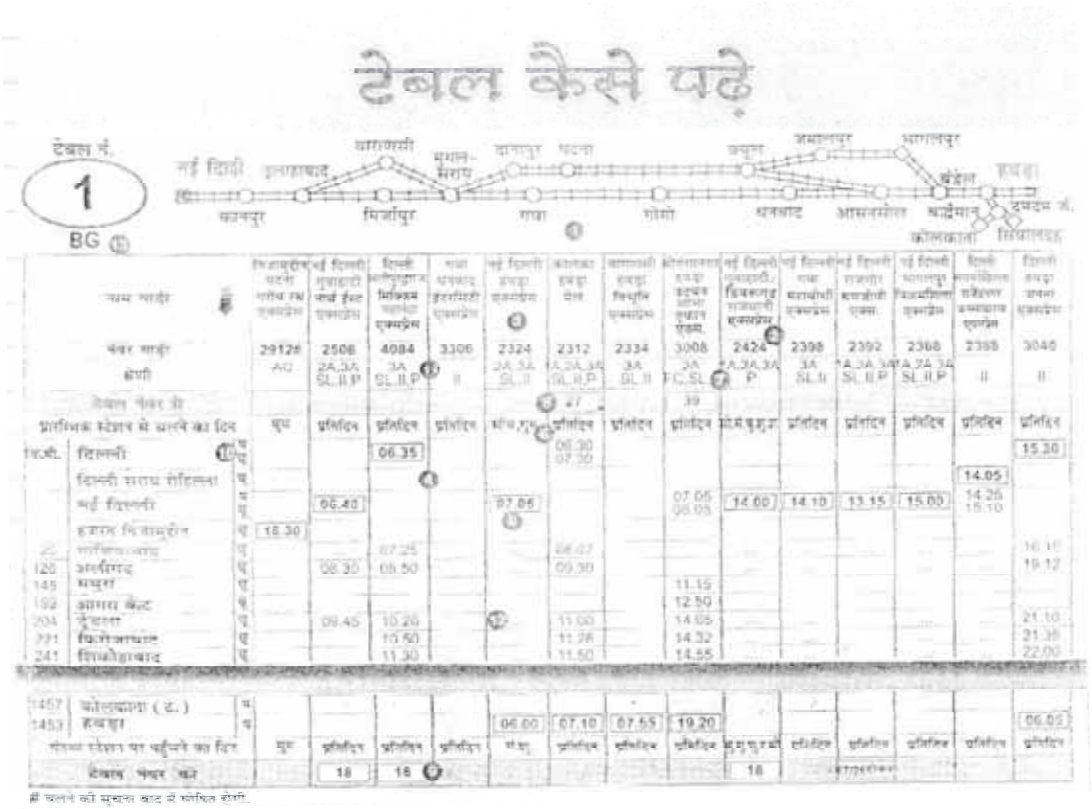

1. यह संक्षेप में गाड़ी का मार्ग दर्शाता है, जो टेबल में सूचीबद्ध है।
2. राजधानी, शताब्दी, जनशताब्दी, एवं गरीबरथ लाल रंग से दिखाई गई हैं।
3. सुपर फास्ट गाड़ियां पीले रंग से दिखाई गई है।
4. मेल /एक्सप्रेस गाड़ियां नीले व सफेद से दिखाई गई है।
5. 07 .5 गाड़ी का आरंभिक स्टेशन अथवा गंतव्य. स्टेशन दर्शाता है।
6. चलने के दिन : सो.–सोमवार, मं.–मंगलवार, बु.–बुधवार।
   गु.–गुरुवार, शु.–शुक्रवार, श.–शनिवार, र.–रविवार, दिए गए दिन
   गाड़ी चलने वाले प्रारम्भिक स्टेशनों एवं गंतव्य स्टेशनों के है।
7. श्रेणी : 1A–प्रथम एसी, 2A-2 टायर एसी शयन,3A-3 टायर एसी।
   EC-कार्यपालक कुर्सीयान, CC-एसी कुर्सीयान, FC–प्रथम श्रेणी।
   SL–शयनयान श्रेणी, 2S- द्वितीय श्रेणी सीट (आरक्षित),
   II- द्वितीय श्रेणी सीट (अनरक्षित),
8. टेबल नंबर से : अगर कोई गाड़ी पिछले टेबल से आ रही है तो उसका नंबर यहां दिखाया गया है।
9. टेबल नंबर को : अगर कोई गाड़ी आगे दूसरे टेबल मैं आती है तो उसका नंबर यहां दिखाया गया है।
10. प. एवं छू : गाड़ियों के आगमन एवं प्रस्थान को क्रमशः प. एव. छू से दर्शाया गया है।
11. P-गाड़ी में भोजनालय का होना दर्शाता है।
12. ... दर्शाता है कि गाड़ी उस स्टेशन पर नहीं रुकती है, खाली स्थान यह दर्शाता है गाड़ी दूसरे मार्ग से चलती है।
13. टेबल नंबर के नीचे BG–बड़ी लाइन (ब्रोड गेज) MG–छोटी लाइन (मीटर गेज),NG–सकरी लाइन (नैरो गेज), दर्शाता है।

•

यातायात के संकेत

शहर की सड़कों के चौराहों पर आपने तीन बत्ती लाल, नारंगी(पीली), हरी, वाले सिग्नलों के खंभे देखे ही होंगे। ये बत्तियाँ हमें क्रमश: रुकने, देखने और जाने का संकेत देती हैं। इसके अलावा सड़क पर अन्य संकेत भी बने होते हैं। वाहन चालकों को यातायात के नियमों और मुख्य संकेतों की जानकारी न होने से दुर्घटना होने की संभावना बढ़ जाती है। आइए, सुरक्षित यात्रा के लिए इन प्रमुख सड़क चिह्नों की जानकारी प्राप्त करें।

लाल रुको : स्टॉप लाइन से कुछ पहले ही रुक जाएँ। दो वाहनों के बीच अंतर बनाए रखें ताकि आगे की सड़क साफ दिखाई दे। लालबत्ती पर आप बाएँ मुड़ सकते हैं बशर्ते ऐसा करने की मनाहीवाला बोर्ड न लगा हो।

नारंगी सावधान : नारंगी (पीली) बत्ती का मतलब है चौराहा खाली करो। इस दौरान आप यदि सड़क के बीच में फँस जाएँ तो बिना घबराए शांति से चौराह पार कर लें।

हरी चलो : हरी (नीली) बत्ती होने पर आप बिना इधर-उधर देखे ही न निकल पड़े, बल्कि यह देख लें कि दूसरी तरफ की सभी गाड़ियाँ निकल गई हैं न।

सड़क पर दाएँ या बाएँ मुड़ते समय पैदल यात्रियों और दूसरी तरफ से आ रहे वाहनों के लिए मुड़ने का संकेत देना याद रखें।

नीचे अनिवार्य सड़क चिह्न दिए गए हैं, जिनका पालन न करना कानूनन अपराध है।

प्रवेश निषेध | एकतरफा यातायात | दोनों तरफ वाहन निषेध

सभी मोटर वाहन निषेध | ट्रक निषेध | बैलगाड़ी निषेध | तांगा निषेध

हाथगाड़ी निषेध | साइकिल निषेध | पैदल निषेध | दाहिने मुड़ना निषेध

बाएं मुड़ना निषेध | मुड़ना निषेध | ओवरटेक निषेध | हॉर्न बजाना निषेध

इसी तरह कुछ सड़क चिह्न चेतावनी या सुरक्षा के लिए जो वाहन चालकों के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। इनमें से प्रमुख सूचना चिह्न नीचे दिए गए हैं।

पैदल पार करना | आगे स्कूल है

टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता दाई ओर | टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता बाई ओर

कौन-सी यातायात के इन चिह्नों के अलावा राष्ट्रीय राजमार्गो, एक्सप्रेस वे तथा स्टेट हाइवे पर यात्रियों को सुविधा कहाँ मिलेगी, इसके प्रतीक चिह्न भी लगे होते हैं।

शब्दकोश देखना

कोश हमें मुख्य रूप से शब्दों के अर्थ तथा उनके विभिन्न प्रयोगों की जानकारी देते हैं।शब्दकोश में शब्दों से जुड़ी व्याकरणिक कोटियों की (संज्ञा, विशेषण, क्रिया) उनके लिंग, उच्चारण, उनकी व्युत्पत्ति, उनसे व्युत्पन्न विभिन्न रूप, वर्तनी, मुहावरे तथा प्रयोग के दृष्टांत आदि की जानकारी मिलती है। शब्दकोश के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं:

(1) एक भाषी कोश-(हिंदी-हिंदी, अंग्रेजी-अंग्रेजी, गुजराती-गुजराती आदि)
(2) द्विभाषी कोश - (हिन्दी-अंग्रेजी, अंग्रेजी-हिन्दी, गुजराती-हिन्दी, गुजराती-अंग्रेजी इत्यादि)
(3) बहुभाषी कोश - त्रिभाषी या तीन से अधिक भाषाओं के कोश
(4) विश्व कोश - (इंसाइक्लोपीडिया) विभिन्नशीर्षकों, विषयों से संबंधित ज्ञानात्मक जानकारी)
(5) फिसॉरस - (एक ही भाषा के शब्दों के पर्यायों, संबंद्ध शब्दों तथा रूपों की सूचना।)
(6) विशिष्ट विषयों के स्वतंत्र कोश - (गणित कोश, अर्थशास्त्र कोश, भौतिकशास्त्र कोश... इत्यादि।)

शब्दकोश देखना : कोश चाहे जिस भाषा या विषय के हों , सभी में शब्दों को अकारादिक्रम में ही प्रस्तुत किया जाता है। अंग्रेजी में यह क्रम a,b,c,d,e,f..है तो हिन्दी का वर्णक्रम इस प्रकार है ।

स्वर : अँ /अं अः आँ /आं आ ऑ इं इ ईं ई उँ/उं / उ / ऊँ/ऊ ऋ
एँ /एं ए ऐं ऐ ओं ओ औं औ ।

व्यंजन : क क्ष ख ग घ च छ ज/ज़ ज्ञ झ ट ठ ड /ड़ ढ/ढ़ ण त त्र थ द ध न प फ/फ़ ब भ म य र ल व श श्र ष स ह।

उदाहरण : कँ/कं कः क काँ/कां का किं कि कीं की कुँ/ कुं कु कूँ/कूं कू कृंकृ कें के कैं कै कों को कौं कौ

सामान्य नियम :(1) कोश के वर्ण क्रम में पूर्व अक्षर के पहले अनुनासिक व अनुस्वार चिह्न रँ, रं युक्त वर्ण आएँगे: जैसे- हँस, हंस, हस, हाँस, हास।

(2) आधे वर्ण पूर्ण वर्ण के बाद आएँगे :जैसे - कर, कर्कट, कौन, क्या।

(3) संयुक्ताक्षरों का वर्णक्रम उनके घटकों के क्रम से निर्धारित होता है : जैसे --
क्ष (क्+ष), त्र (त् +र), ज्ञ (ज् +), श्र (श् +र), क्रम (क्+्+म), कर्म (क् +र्+म) द्ध (द्+ध), द्व (द्+व), द्य (द+य)।

•

पूरक वाचन

1 सच्चा प्रेम

रामनरेश त्रिपाठी

(जन्म:सन 1881 ई.; मृत्यु : सन 1962 ई.)

रामनरेश त्रिपाठी छायावाद पूर्व की खड़ीवोली हिन्दी के महत्त्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। उनका जन्म कोइरीपुरी, जिला-जौनपुर (उ. प्र.)में हुआ था। आरंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद स्वाध्याय से हिन्दी, अंग्रेजी,बांग्ला और उर्दू का ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने उस समय के कवियों के प्रिय विषय समाजसुधार के स्थान पर रोमांटिक प्रेम को कविता का विषय बनाया। उनकी कविताओं में देशप्रेम और वैयक्तिक प्रेम दोनों मौजूद हैं, लेकिन देशप्रेम को ही विशेष स्थान दिया है। 'मिलन,' 'पथिक' 'स्वप्न,' खंडकाव्य तथा 'मानसी' काव्य संग्रह इनकी अमर कृतियाँ हैं।

'कविता कौमुदी'(आठ भाग)में उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, उर्दू और बांग्ला की लोकप्रिय कविताओं का संकलन किया है। इसी के एक खंड में ग्रामगीत (लोकगीत) संकलित है जो हिन्दी में पहला मौलिक कार्य है। कविता के अलावा उन्होंने नाटक, उपन्यास, संस्मरण, तथा आलोचना आदि अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। उन्होंने कई वर्षों तक 'बानर' नामक बाल पत्रिका का संपादन भी किया जिसमें मौलिक एवं शिक्षाप्रद कहानियाँ, प्रेरक प्रसंग आदि प्रकाशित होते थे।

यहाँ संकलित काव्यांश उनके खंड काव्य 'स्वप्न' के पाँचवें सर्ग से उद्धृत है जिसमें कवि ने व्यक्तिगत प्रेम के साथ-साथ देशप्रेम का चित्रण करते हुए देशप्रेम को उत्तम बताया है।

सच्चा प्रेम वही है जिसकी
तृप्ति आत्मबलि पर हो निर्भर
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है
करो प्रेम पर प्राण निछावर ।
देशप्रेम वह पुण्य-क्षेत्र है
अमल असीम त्याग से विलसित
आत्मा के विकास से जिसमें
मनुष्यता होती है विकसित ॥ 1 ॥

जितनी हैं शक्तियाँ मनुज को
प्राप्त हुई इस जग के भीतर
उन्हें दान करते रहना ही
है मनुष्य का धर्म यहाँ पर ।
त्रिगुणात्मक है जगत, यहाँ है
कोई नहीं पदार्थ हानिकर
भला-बुरा उनका प्रयोग ही
है सुख दु:ख का हेतु यहाँ पर ॥ 2 ॥

किसी समय जग बहुत सुखी था
शांत पवित्र प्रेम से सुंदर
मूढ़ जनों के दुरुपयोग से
यह बन गया घोर दुःख का घर ।
सदुपयोग से विष पावक भी
हो जाते हैं सुख उत्पादक
किन्तु अबुध अनुचित प्रयोग से
कर लेते हैं उन्हें विघातक ॥ 3 ॥

शब्दार्थ--टिप्पण

आत्मबलि अपना बलिदान **त्रिगुणात्मक** तीन गुण वाली तमोगुण, रजोगुण, सतोगुण **पावक** आग **अबुध** बुद्धिहीन, मूर्ख **विघातक** हानिकारक, विनाशकारी

•

2 प्रतिदिन तीन मिनिट दौड़िए

संकलित

प्रस्तुत लेख में बताया गया है कि प्रात:काल में टहलने का आन्नद ही कुछ और होता है, और यदि हम नित्य तीन मिनट दौड़े तो क्या कहना ?इससे न केवल हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहता है अपितु मन भी प्रफुल्लित रहता है। शरीर में स्फूर्ति रहती है। अत: यदि आप नित्य टहलते हो तो उसके साथ-साथ तीन मिनट नित्य दौड़ना शुरु कीजिए। यदि न टहलते हो तो कम से कम टहलना शुरु कीजिए।

मै प्रतिदिन प्रात:काल डेढ़ घंटे टहलता हूँ। कब से टहलता हूँ यह बता सकना कठिन है पर इतना कह सकता हूँ कि टहलना प्रारंम्भ किए बीस वर्ष अवश्य हुए होंगे । तब से टहलने में कभी व्याघात नहीं पड़ा। जाड़ा तो कभी मेरा टहलना रोक ही नहीं पाया। वर्षा के दिनों में भी यदि हल्की वर्षा हो रही हो तो अवश्य टहलने निकल जाता हूँ। यदि बादल घिरे हों और तेज वर्षा की सम्भावना हो तो भी नहीं रुकता चाहे खूब भीगकर या भीगते-भीगते ही क्यों न घर लौटना पड़े। कभी बाहर जाता हूँ तो अपने मेजबान (अतिथेय) को भी साथ लेता हूँ। सन्ध्या को टहलना वैसे मुझे पसंद नहीं है, परन्तु यदि कभी सबेरे नहीं टहल सका हूँ तो उस दिन मैने यह कमी सन्ध्या को टहल कर अवश्य पूरी की है पर एसा समय वर्ष में पाँच-दस बार ही आता होगा।

अकेले टहलने का मेरा आनन्द अपना है। उसी समय लगता है कि यह समय मेरा है। पढ़ी हुई चीज पर विचार करता हूँ। पढ़ते समय उससे कितना आनन्द प्राप्त होता है। किसी मित्र को मधुर-सा पत्र लिखना हुआ तो उसका मजमून मैं इसी समय स्थिर करता हूँ। मेरे प्राय: सभी लेख प्राप्त टहलते समय ही सोचे गए हैं। लिखते समय तो कागज पर लिखना भर रह जाता है। फिर भी टहलने में मेरा साथ चाहने वालों को मैं अपना साथ देता अवश्य हूँ।

इधर मेरे साथ मेरे एक मित्र श्री उमापतिजी टहलने जाने लगे थे। वह अपना वजन घटा रहे थे क्योंकि उन्हें किसी ने बता दिया था कि टहलने से वजन घटता है। वजन से अधिक वह अपनी तोंद घटाने के लिए उत्सुक थे, जिसका घेरा उनकी छाती से तीन इंच अधिक था। महीने भर टहलने के बाद जब उन्होंने नाप लिया तो उनकी तोंद तीन इंच घटी ही पर साथ ही साथ छाती भी दो इंच घट गई। इस फल से वह बहुत ही खिन्न हुए । पेट का तीन इंच घटना तो उन्हे पसन्द था, पर इसके साथ छाती का घटना उन्हें स्वीकार नहीं था।

उनकी इस खिनन्ता को देखकर उनके बड़े भाई ने उन्हें दौड़ने की सलाह दी। पर उमापतिजी दौड़ना चाहते ही न थे। एक दिन उनके भाई मुझे अपने घर के दरवाजे पर मिले तो मुझसे बोले-उमा को दौड़ने को कहता हूँ, पर यह दौड़ ही नहीं रहा है। कुल तीन मिनिट दौड़े तो इसका पेट बहुत घट सकता है। दौड़ते समय आदमी पंजे पर दौड़ता है, जिसका सीधा असर तोंद पर पड़ता है और, वह तेजी से घटती है।

आप घबरायें नहीं, मैं कल से उन्हें तीन मिनिट दौड़ा दूँगा।

मैंने उन्हें यह आश्वासन दिया और चला गया।

दूसरे दिन सुबह मैं उमापतिजी को साथ लेने उनके घर की ओर चला तो उनके बड़े भाई रास्ते ही में मिल गये। वह कुछ हाँफ-से रहे थे। मुझे देखकर बोले---

देखिए, तीन मिनिट नहीं, एक मिनिट ही आज उमा को दौड़ाइये और धीरे-धीरे एक सप्ताह में तीन मिनिट पूरे कीजिए। मै आज अभी एक मिनिट दौड़कर आ रहा हूँ। पहले दिन एक मिनिट दौड़ना काफी है।

उनकी कथनी और करनी की यह एकता देखकर मुझे उन पर श्रद्धा हो आई। मैंने उमापतिजी को एक मिनिट से ही दौड़ाना शुरु कराने का आश्वासन दिया। फिर उमापतिजी को साथ लेकर टहलने निकला। आगे एक इमली का बड़ा सा पेड़ था, वहीं से हमने दौड़ना शुरु किया और एक मिनिट पूरा होते ही बन्द कर दिया। धीरे-धीरे एक सप्ताह में हम तीन मिनिट नित्य दौड़ने लगे। इमली का पेड़ आते ही हम चलते-चलते अनायास दौड़ने लगते और आगे बबूल आता था, वहाँ तक पहुँचते ही रुक जाते। वहीं तीन मिनिट पूरे होते।

मैं दौड़ते समय नित्य ही यह सोचता कि आज इस दौड़ने के कारण शरीर में अवश्य ही दर्द होगा, पर ऐसा कभी नहीं हुआ। शुरु में ही नहीं हुआ, तो फिर आगे क्या होता। अब तो तीन मिनिट दौड़ने की हमारी आदत बन गई थी। दौड़ना शुरु होते ही साँस गहरी हो जाती, फेफड़े पूरे भरने लगते, गले से कुछ कफ निकलता, गला और नाक साफ हो जाते, कभी-कभी मुँह पर थोड़ा पसीना भी चिलचिला आता और आगे का टहलना अधिक आसान और सुखदायक हो जाता।

दौड़ना प्रारंम्भ करने पर मैंने स्पष्ट देखा कि शरीर में स्फूर्ति बढ़ गई है। यद्यपि मैंने कभी उस पर विशेष रूप से ध्यान नहीं दिया, पर बढ़ी हुई चीज तो दिखाई दे ही जाती है। मन भी अधिक प्रसन्न रहने लगा और दो बजे के लगभग जो थोड़ा आराम करने की तबीयत होती थी, काम में थोड़ी टालमटुल पैदा हो जाती थी, वह प्रवृति भी चली गई। टहल कर घर लौटने पर ठंडे पानी से नहाने में अधिक आनन्द आने लगा। इस प्रकार दौड़ने का लाभ मेरे सामने बिल्कुल स्पष्ट है। श्री उमापतिजी की तो एक महीने के बाद ही बदली हो गई और वह बम्बई चले गये, पर यह कहने की आवश्यकता नहीं कि दौड़ने से उन्हें बड़ा लाभ हुआ। उनकी तोंद भी घटी और उनका स्वास्थ्य भी पहले से अच्छा रहने लगा।

उमापतिजी अब दौड़ रहे हैं, या नहीं, मैं नहीं जानता, पर मेरा दौड़ना जारी है। मैं आपको भी नित्य तीन मिनिट दौड़ने की राय देना चाहता हूँ। आप टहलते हों तो उसके साथ-साथ तीन मिनिट नित्य दौड़ना शुरु कीजिए। यदि न टहलते हो तो पहले टहलना शुरु कीजिए। दौड़ने की सलाह मैं आपको बाद में दूँगा।

शब्दार्थ-टिप्पण

व्याघात चोट **मजमून** विषयवस्तु **खिन्नता** दु:खी **स्फूर्ति** फुर्ती

•

3 ठुकरा दो या प्यार करो

सुभद्राकुमारी चौहान

(जन्म : सन् 1904 ई, निधन : सन् 1947 ई.)

सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। बचपन से ही इनको हिन्दी से विशेष प्रेम था। इनका विवाह मध्यप्रदेश के खंडवा निवासी ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ हुआ। विवाह के साथ ही इनके जीवन-क्रम में एक नया मोड़ आ गया। महात्मा गांधी के आन्दोलन का सुभद्राजी पर गहरा प्रभाव पड़ा और ये राष्ट्र-प्रेम पर कविताएँ लिखने लगीं। सुभद्राकुमारी चौहान की काव्य-साधना के पीछे उत्कट देश-प्रेम, साहस और बलिदान की भावना है। देश को स्वतंत्र कराने के लिए जेल-जीवन की यातनाएँ सहने में इन्हें जितना सुख मिलता था, उतना ही उन सात्विक अनुभूतियों को कविता द्वारा व्यक्त करने में भी प्राप्त होता था।

इन्होंने अपने काव्य में पारिवारिक जीवन के मोहक चित्र अंकित किए हैं, जिनमें वात्सल्य की मधुर व्यंजना हुई है। इनके काव्य में एक ओर नारी सुलभ ममता और सुकुमारता है वहीं दूसरी ओर वीरांगना का शौर्य एवं ओज भी है। अलंकारों या कल्पित प्रतीकों के मोह में न पड़कर अनुभूति को सहज रूप से प्रकट करने में ही इनकी कला की सफलता है। 'मुकुल' इनका प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है। 'सीधे-सादे चित्र,' 'बिखरे मोती' और 'उन्मादिनी' इनकी कहानियों के संकलन हैं।

प्रस्तुत कविता 'ठुकरा दो या प्यार करो' में सुभद्राकुमारी चौहान सरल भाषा में अपने ईष्ट के प्रति अपने मनोभावों को प्रकट करती हैं। किसी भी प्रकार के बाह्याडम्बर और दिखाने के बगैर वे अपने आपको प्रभु के श्रीचरणों में पूर्णरूप से समर्पित करती हैं और कहती हैं कि मैं तो आपकी ही हूँ चाहो तो प्यार करो चाहो तो ठुकरो दो।

देव! तुम्हारे कई उपासक, कई ढंग से आते हैं।
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे, कई रंग की लाते हैं।
धूमधाम से साजबाज से, वे मंदिर में आते हैं।
मुक्तामणि बहुमूल्य वस्तुएँ, लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं।
मैं ही हूँ गरीबिनी ऐसी, जो कुछ साथ नहीं लाई।
फिर भी साहस कर मंदिर में, पूजा करने को आई।
धूप दीप नैवेद्य नहीं है, झांकी का शृंगार नहीं।
हाय गले में पहिनाने को, फूलों का भी हार नहीं।
स्तुति मैं कैसे करूँ कि स्वर में मेरे हैं, माधुरी नहीं।
मन का भाव प्रकट करने को, मुझमें है चातुरी नहीं।
नहीं दान है नहीं दक्षिणा, खाली हाथ चली आई।
पूजा की भी विधि नहीं जानती, फिर भी नाथ चली आई।
पूजा और पुजापा प्रभुवर, इसी पुजारिन को समझो।
दान दक्षिणा और निछावर, इसी भिखारन को समझो।
मैं उन्मत्त प्रेम का लोभी, हृदय दिखाने आई हूँ।
जो कुछ है बस यही पास है इसे चढ़ाने आई हूँ।

चरणों पर अर्पण है, इसको चाहो तो स्वीकार करो।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है ठुकरा दो या प्यार करो॥

शब्दार्थ-टिप्पण

उपासक उपासना (पूजा) करने वाला **मुक्ता** मोती **मणि** बहुमूल्य रत्न **नैवेद्य** नेवज, देवयजन, चढ़ावा **पुजापा** पूजा की सामग्री **उन्मत्त** अनिषिद्ध, अपराधमुक्त **अर्पण** बलिवस्तु, चढ़ावा, प्रदान

•

4 भूकम्प

रामवृक्ष बेनीपुरी

(जन्म : सन् 1899 ई, निधन : सन् 1968 ई.)

प्रसिद्ध समाजवादी चिंतक रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव में हुआ था। स्वातंत्र्य संग्राम, महात्मा गांधीजी का आगमन जैसी अनेक घटनाओं का असर बेनीपुरीजी के जीवन और कृतित्व पर स्पष्ट परिलिक्षित होता है। स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लेने के कारण इनकी पढ़ाई रुक गई, बाद में स्वाध्याय द्वारा ज्ञानार्जन किया। पत्रकारित्व, साहित्य सर्जन इनकी रुचि के क्षेत्र रहे है। 'रामचरितमानस' तथा 'जनता' जैसी साप्ताहिक पत्रिकाओं का संपादन इन्होंने किया था। नाटक, एकांकी, प्रहसन, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, आदि साहित्य प्रकारों में रामवृक्ष बेनीपुरीजी का विशेष योगदान रहा है।

गेहूँ और गुलाब, मील के पत्थर, बन्दे वाणी विनायको आदि बेनीपुरीजी के प्रसिद्ध निबंध संग्रह हैं। तथागत, आम्रपाली तथा सीता की माँ इनके नाटक है, माटी की मूरतें (रेखाचित्र-संस्मरण)तथा कैदी की पत्नी और पतितों के देश में बेनीपुरीजी की औपन्यासिक कृतियाँ हैं। बेनीपुरीजी की रचनाओं में कला और संस्कृति को उतना ही महत्वपूर्ण स्थान मिला है, जितना अनिवार्य मानवीय अनिवार्यताओं को। उनकी भाषा में एक ओर आवेगमयता है तो दूसरी ओर प्रशांति है। उसमें जटिलता कहीं भी नहीं है।

इस संस्मरण में 1934 में बिहार में आए भयानक भूकंप के दुष्प्रभावों का चित्रण है। प्राकृतिक आपदा के समय देश-विदेश से मिलनेवाली सहायता, देशवासियों के सहयोग का महत्व इस से समझमें आता है।

कबीर ने कहा है-'पल में परलय होएगी, बहुरि करोगो कब।' पल में प्रलय ! किंतु पल में प्रलय कैसे होता है, उस दिन हमने जो देखा, हमें इत्मीनान हो गया, पल में प्रलय हो सकता है, और वह यों होगा। वह दिन था 1934 की 15 जनवरी।

पटना कॅम्प जेल से लौटने के बाद मैं मुजफ्फरपुर के 'लोकसंग्रह' में काम करने लगा।

उस समय मैं मुजफ्फरपुर में लोकसंग्रह कार्यालय में था, कि एक सज्जन एक काम से बुलाकर मुझे कचहरी ले गए। यदि मैं कचहरी नहीं गया होता, तो शायद उस दिन मलबे के नीचे दब गया होता, क्योंकि वह घर ध्वस्त-पस्त हो गया था और वहाँ कई मौतें हुई थीं।

मैं कचहरी में एक पेड़ के निकट खड़ा था। अचानक पेड़ के पत्ते खड़बड़ा उठे। चौंककर ऊपर की ओर देखने लगा कि पैर तलमलाने लगे। जब नीचे देखता हूँ तो अरे, यह तो पृथ्वी काँप रही है। जिस तरह समुद्र की तरंगें एक-पर-एक आती हैं, लगता था, पृथ्वी की सतह उसी प्रकार तरल बन गई है और उस पर ढूह-पर-ढूह उठ रहे हैं। अब खड़ा नहीं रहा गया। हम दोनों तलमलाकर लुढ़क गए। चारों ओर 'भूकंप-भूकंप' का शोर मच रहा था और जहाँ-तहाँ लोग भागते हुए, गिरते हुए, लुढ़कते हुए दीख रहे थे। सामने ही एक घोड़ा था। अपने पैरों के नीचे की जमीन को खिसकते हुए देखकर वह बेचारा जानवर ऐसा बदहवास हुआ कि हमारी ही ओर दौड़ा। हमने समझा अब कुचले।

अचानक घड़ाम-घड़ाम की आवाजें आने लगीं और कचहरी की इमारते इधर-उधर गिरने लगीं, जमीन में चौड़ी दरारें फटने लगीं। चारों ओर हाय-तोबा मचा था और ज्यों ही जमीन पैर पर खड़ा होने लायक बनी, लोग अपने-अपने घरों की ओर भागे। हम इधर से भागे जा रहे थे, उधर से लोग भागे आ रहे थे। वे चिल्ला रहे थे- पानी-पानी बाढ़-बाढ़। जमीन फोड़कर पानी के फव्वारे ऊपर आ रहे थे। सड़कों पर घुटने भर पानी आ गया था, किंतु कहा गया, छाती भर पानी चढ़ा आ रहा है। क्या जलप्रलय होगा ? मैं एक शीशम के पेड़ के निकट खड़ा हो गया, सोचा, इस लंबे पेड़ पर चढ़कर उस प्रलय से अपने को बचा लूँगा। मानो वह शीशम का पेड़ नहीं हुआ, अक्षयवट था और शायद मैंने उस प्रलयबेला में अपने को उसके पत्तों के दोनों में लिपटने वाला शिशु भगवान मान लिया था।

थोड़ी देर प्रतीक्षा की, बाढ़ नहीं आई। आगे बढ़ा, अस्पताल आया। वहाँ देखा घायलों को लोग ला रहे हैं, जिनमें अधिकतर बच्चे हैं। एक माँ एक बच्चे को चिपकाए हुई आई। बेचारा बच्चा, मलबे के नीचे दब मरा था- कोई चोट नहीं, किंतु निष्पंद और निष्प्राण। आँखें उमड़ आईं। बेचारे डाक्टर भी परेशान। इस अप्रत्याशित भीषण घटना के लिए वे भी तैयार नहीं थे। वहाँ से शहर में घुसा। तब समझ में आया कितनी बड़ी घटना इन चंद मिनटों के अंदर घटित हो चुकी है। सारे मकान गिर गए थे अपनो को लोग खोज रहे हैं, अस्त-व्यस्त यहाँ-वहाँ मिट्टी कुरेद रहे हैं। कहीं-कहीं से दबे हुऐ घायलों की कराह भी निकल रही है। एक जगह एक आदमी को देखा, जिसका आधा शरीर मलबे के नीचे था, आधा बाहर। वह पानी-पानी चिल्ला रहा था,उसका शरीर खून में डूबा हुआ था। झट कमर कसकर मैं मलबे को हटाने में लगा, किंतु ज्यों-ज्यों मलबा हटाता, वह बेचारा और दबता जाता, क्योंकि मलबे के बीच एक शहतीर था। उसकी कराह सही नहीं गई, अपनी शक्तिहीनता पर खेद हुआ और मित्रों की याद आई! न जाने उनमें से किसकी क्या गत हुई हो। आगे बढ़ा।

बीस साल बीत चुके हैं, किंतु लिखते समय सारी बातें सिनेमा-रील की तरह आँखों के सामने स्पष्ट आती जा रही हैं, किसे लिखूँ, क्या छोड़ूँ ?

पानी हेलते, मलबे को पार करते, मित्रों के घर जा-जाकर उनकी खोज-खबर लेने लगा। अपने आफिस में आया तो देखा, इमारत का कहीं पता नहीं, ढूह-ढूह है। और उसके नीचे तीन-चार आदमी दबे पड़े हैं। इतनी बड़ी इमारत, कहाँ उनकी खोज की जाए, किसमें ऐसी ताकत कि इस ढूह को अलग करने की जुर्रत करें। वहीं पता चला, शहर में कई जगह आग भी लग गई है। फूस के घर गिरे, नीचे आग थी, धधक गई। लोगों ने समझा, शायद पानी के साथ -जमीन फोड़कर आग भी निकल आई है।

शहर में चारों ओर कोहराम मचा था, जो कोई परिचित मिलता, पकड़कर फूट-फूटकर रोने लगता और किसी प्रियजन की मृत्यु का संवाद सुनाता। एकमित्र के घर पहुँचा, तो देखा, सभी एक जगह से मलबे को हटाने पर तुले हैं-काफी सुखी, संपन्न आदमी। कभी कुदाल छुई भी नहीं होगी, अब ढेले ढो रहे थे। मर्द ही नहीं, औरतें भी मलबे हटा रही थीं। जिनके नीचे दो प्राणियों के दम टूट रहे होंगे। किंतु उनके सारे प्रयत्न व्यर्थ हो रहे थे। एक मित्र के घर में काफी आदमी घायल हुए थे, सब एक जगह इकट्ठे किए गए थे, वे चिल्ला रहे थे। उनमें दो लड़कियाँ थीं, जिनके हाथों कल ही आतिथ्य ग्रहण किया था। उन्हें इस अवस्था में देखकर लगा, जैसे कलेजा फटा जा रहा हो। एक तो प्राणहीन हो चुकी थी, गोरा चेहरा पीला पड़ गया था, बाहर से कोई चोट नहीं सिर्फ नाक से खून की कुछ बूँदे नेटे के साथ चू गई थीं, जो अब काली पड़ गई थीं, एक की कमर टूट गई थी। 'डाक्टर बुलाइए,' मैं डाक्टर के घर की ओर दौड़ा। किंतु वहाँ भी वही कोहराम।

जब आगे बढ़ा, पता चला, हम लोगों के एक मित्र मृतप्राय हैं, अपने घर से निकलकर भाग रहे थे, अपना घर नहीं गिरा ,दूसरे घर की दीवार के नीचे दब रहे। उधर दौड़ा। रास्ते में कोलाहल, कोलाहल। कहीं टमटम चूर है, उससे लगा घोडा रक्त की ललैया में टांगें फटकार रहा है। और उससे थोड़ी दूर पर उसके तीनों सवार दम तोड़ रहे हैं- किसी का सिर भुरता हैं, किसी के पैर की हड्डियाँ चूर-चूर हैं, किसीकी पसलियाँ टूट गई हैं। कहाँ तक देखा जाए, किसे-किसे देखा जाए। देखा जाता कहाँ था ? जब आधी बेहोशी में अपने घर की ओर लौट रहा था, शहर के मुख्य चौराहे पर देखा, टावर टूटकर गिर गया है, बेचारा संतरी खून से लथपथ मरा पड़ा है और एक कुत्ता उसका खून चाट रहा है। आह ! उफ !

बुरी-से बुरी संध्याएँ व्यक्तिगत जीवन में आती-जाती रहती है, किंतु उस दिन जो संध्या आई, वैसी डरावनी, दहशतनाक, रक्तरंजित संध्या, उत्तर बिहार में शायद ही कभी आई हो। सही अर्थ में वह रक्तरंजित संध्या थी। रक्त और मृत्यु की विभीषिका चारों ओर छा रही थी। अपने घरों के मलबे पर बैठे, मृतकों की लाशों को कुत्तों और सियारों से रक्षा करते घायलों की कराहों में अपनी रूदन ध्वनि जोड़ते, कल से कहाँ जाएँगे, क्या करेंगे, आदि की दुश्चिंताओं में एक-एक क्षण आँखों में गुजारते लोगों ने रात कैसे काटी-उसकी कल्पना आज भी रोमांचित कर रही है। जाड़े का मौसम, आसमान बादलों से घिर आया था, कभी-कभी टप-टप बूँदे गिर जातीं, तेजी से हवा बहती हुई कलेजे को नहीं, पसली-पसली को कँपा जाती। तिसपर रह-रहकर पृथ्वी हिल उठती। जरा भी हिली कि खलबली-चीस. पुकार, हाहाकार, त्राहि-त्राहि मुल्ले अजान देने लगते, पंडित घड़ी-घंटे बजाने और शंख फूँकने लगते। किंतु जो भगवान दिन में सो गया था, क्या वह रात में जग सकता था !

देहात की हालत और भी विचित्र रही। जो नदीकिनारे थे, उन्होंने बताया, किस तरह नदी का पानी एकाएक सूख गया और नीचे से मछली-मगर दिखाई देने लगे। फिर थोड़ी देर में ऊपर ऐसा पानी आया कि बाढ़ आ गई। नदियाँ उथली पड़ गईं, किनारों के बंधन टूट गए। देहात में जब जमीन फटी, तो उससे पानी के फव्वारे ऐसे उठे कि मेरी मामीजी कहती थी, लगता था, हजारों बिलों से काले नाग निकलकर फन फैलाए फुफकार रहे हों। एक आदमी आ रहा था कि वह देखता है, अचानक उसके पैर के नीचे की जमीन ऊपर उठ रही है और वह ऊपर उठता जा रहा है। वह भौंचक ही था कि अचानक फूली हुई रोटी की तरह उस ऊपर उठी जमीन के भीतर से पानी का सोता एक शब्द के साथ फूटा और फिर वह जमीन हवा निकली हुई फूली रोटी की तरह पचककर पहले-सी समतल बन गई। ऐसी भी दरारें फूटीं कि उनमें कितने पशु और मनुष्य समा गए और फिर उन दरारों ने आप-ही-आप अपने मुँह बंद कर लिए। तालाबों और कुओं की दुर्गत की बात मत पूछिए। तालाब का पानी सूख गया, वहाँ रेतों का अंबार लग गया। कुछ कुएँ नीचे इस कदर घँस गए कि आठ-दस फीट खोदे जाने पर भी उनका पता नहीं लगाया जा सका, कुछ पूरी जगत के साथ ऊपर उभड़ आए। किंतु अधिकांश बालू से भर गए। पीनेके पानी का घोर अभाव हो गया, जब कि भूकंप के बाद ही एक बड़ी बाढ़ भी आ गई और जहाँ देखिए, पानी-ही पानी था। मेरे गाँव का एक आदमी बंगाल में था, वहाँ अखबारों में उसने पढ़ा, मुजफ्फरपुर और सीतामढ़ी के बीच पानी-ही-पानी है, तो उसने समझा, बीच के सारे गाँव नष्ट हो गए होंगे और वह बेचारा रोते-रोते जो वहाँ से चला तो गाँव में आने पर ही उसे विश्वास हो सका कि उसके अपने लोग अभी बच रहे हैं।

सड़कों और रेलवे लाइनों की तो पूरी सूरत ही बिगड़ गई थी। वे टेढ़े-मेढ़े हो गए थे, जैसे किसीने पकड़कर ऐंठ दिया हो। पुल कहीं ऊँट की पीठ की तरह और कहीं भैंस की गरदन की तरह हो गए थे। उनपर चलना ही मुश्किल था, सवारियों के लाने-ले जाने की क्या बात ?

सरकार का सारा शासन ठप्प पड़ गया था। जेल की दीवारें गिर गई, सिपाही भाग चले। कैदियों ने घर की राह ली। कचहरी के मकान गिर गिए, हाकिम अदालत कहाँ लगाएँ।

जब बाढ़ खत्म हुई, लोगों ने देखा, उनके खेत बालू से पटे है। अब खेती कैसे होगी ? लोगों के दु:खों का आर-पार नहीं था। यद्यपि देहात में कम मौतें हुई थीं, किंतु वहाँ ज्यादा घर फूस के थे, मिट्टी के घर गिरे, तो भी इफरात जगह होने के कारण आँगन में या बाहर भागकर जान बचाई।

जैसी बाढ़ घटना हुई, देश ने उसी प्रकार दिल खोलकर सहायता दी। संयोग से गांधीजी बाहर थे। वह दौड़े-दौड़े पहुँचे। सभी नेता पहुँचे। पटना और दिल्ली के देवता भी मिले। लंदन से भी सहायता आने लगी। पुनर्निर्माण का काम जोरों से चलने लगा और एक साल के अंदर ही क्षतिपूर्ति हो गई।

शब्दार्थ-टिप्पण

बहुरि फिर से **इत्मीनान** विश्वास **निष्पंद** जिसमें कोई हलचल न हो **अक्षयवट** कबीरवड़, गयावट, प्रयागवट **निष्प्राण** मृत **अप्रत्याशित** अनपेक्षित **शहतीर** काड़ी, थूनी **इफरात** अधिकता **बदहवास** घबराना, व्याकुल होना **नेटी** शरदी-जुकाम में नाक से निकलनेवाला अर्धतरल पदार्थ **प्रत्यासा** आशा **गत** दशा, समाप्त **दुर्गत** दुर्दशा **अंबार** ढेर

मुहावरे

फूट-फूट कर रोना-जोर जोर से रोना **कलेजा फटना**-दु:खी होना

• • •